सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 144, नई दिल्ली, शनिवार 02 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो, क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।

03 दस वर्ष में तीसरी बार बढ़ने वाली हैं दिल्ली चिड़ियाघर के टिकट की दरें
06 असली धमकी हम अनदेखा करते हैं
08 एक बार विधायक, उम्रभर ऐश!

खबर का असर

विधायक निगम पार्षद से और निगम पार्षद के काम भी करवा सकते है : मुख्यमंत्री दिल्ली

के. के. छाबड़ा

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। कुछ दिन पहले समाचार पत्र पर खबर प्रकाशित की गई थी की कैसे विधायक ने क्षेत्र में दौरा कर निगम के कार्यों को करवाना शुरू किया तो निगम पार्षद ने विधायक द्वारा शुरू करवाए कामों को रुकवा दिया। ख़बर प्राप्त होने पर मुख्यमंत्री ने संज्ञान लेकर जारी किया निर्देश विधायक निगम से करायेंगे विकास।

कुछ दिन पहले परिवहन विशेष ने एक खबर प्रकाशित किया था पश्चिमी दिल्ली के वार्ड नंबर 92 से जीती हुई भाजपा पार्षद सुमन त्यागी शहीद भगत सिंह कालोनी से करती है सौतेला व्यवहार।

परिवहन विशेष की टीम ने जब क्षेत्र का दौरा कर संकलन करने वार्ड नम्बर 92 में गया तब वहां विकास तो दूर साफ सफाई तक नहीं देखने को मिली। कालोनी वासियों ने क्षेत्रीय निगम पार्षद के प्रति अपना विरोध आक्रोश जताया था। खबर प्रकाशित होने के बाद मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने विधायक को अधिकार दिया है अपने क्षेत्र में अपने फंड से नगर निगम का काम करा सकते हैं मुख्यमंत्री के द्वारा क्षेत्र में अपने फंड से विधायक निगम के कार्य करा सकते हैं इस पर शहीद भगत सिंह कालोनी से के. के. छाबड़ा ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि अब विधायक कैलाश गंगवाल हमारी कालोनी के विकास कार्य करायेंगे बरसाती नालियों के सफाई से लेकर पार्क और साफ सफाई के कार्य।

के. के. छाबड़ा ने परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रति आभार व्यक्त किया।

29 जुलाई 2025 के अंक में प्रकाशित खबर

शहीद भगत सिंह कालोनी में समस्याओ के अम्बार
फिर भी जीती हुई भाजपा की निगम पार्षद का सौतेला व्यवहार, क्या करे जनता किसको लगाए गुहार, सबसे बड़ा सवाल?

दिल्ली परिवहन आयुक्त ने स्वच्छता माह की शुरुआत पर पेड़ लगाकर और स्वच्छता अभियान के प्रति रैली निकाल कर दिखाई जनता को एक सही पहचान

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। स्वच्छता माह की शुरुआत पर दिल्ली परिवहन आयुक्त ने अपने हाथों से पेड़ लगाकर की इसकी शुरुआत। तत्पश्चात निकाली स्वच्छता के प्रति रैली और साथ ही कश्मीरी गेट बस अड्डे पर करी और करवाई सफाई।

दिल्ली में एक सीनियर आईएएस अधिकारी ने आज यह सिद्ध कर दिखाया की स्वच्छता और प्रदूषण को दूर करने के लिए ओहदा नहीं दिल में इच्छा होनी आवश्यक हैं। आज स्वच्छता माह की शुरुआत पर ही उन्होंने परिवहन विभाग के अन्य अधिकारियों के समक्ष अपने हाथों से वृक्ष रोपण कर और सफाई कर एक उदाहरण प्रस्तुत कर दिखाया की कार्य को करने की इच्छा ही कार्य को सफलता की और ले जाती हैं ना की कागजों और मुंह से बोलना। उनके द्वारा दिखाए गए इस जज्बे और उदाहरण की सभी वहां पहुंचे हुए वाहन मालिकों ने भूरी भूरी प्रशंसा की और कहा की इसे कहते हैं सच में स्वच्छता अभियान।

व्यापारियों द्वारा ट्रक मालिकों का शौषण, शिकायत के बाद भी कार्यवाही नहीं, कहां जाएं ट्रक मालिक ?

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दो गाड़ियां ओडिशा से गोविन्द गढ़ पंजाब के लिए लोड़ होकर आई थी जिसमें एक गाड़ी में थोड़ा माल भीग गया जिसके कारण मेरा बैलेंस भाड़ा 63000/ था मैंने गाड़ी नम्बर एच आर 63ई 8212 व एच आर 63ई 1349 दोनों ट्राले ब्रोकर नन्दराज लोजिस्टिक जाजपुर उड़ीसा को दिए थे। बुकिंग क्रष्णा एस डी बावा कटक उड़ीसा की थी 21 जुन को दोनो गाड़ियां लोड़ होकर निकली 1 जुलाई को गोविंद गढ़ पंजाब मितल ट्रेडर ने पेपर बदलकर वर्धमान आदर्श इस्पात प्राईवेट लिमिटेड गोविंद गढ़ पहुंच गई 5 जुलाई को गाडियां खाली हुई इन दोनों गाड़ियों का भाड़ा बैलेंस वापसी था जिसके चलते 1 गाड़ी का भाड़ा हमने ले लिया दूसरी गाड़ी का भाड़ा नहीं मिला मैंने ओन लाइन एस पी झज्जर को कम्पलेन्ट भी कर दी पर कोई कार्यवाही नहीं हुई।

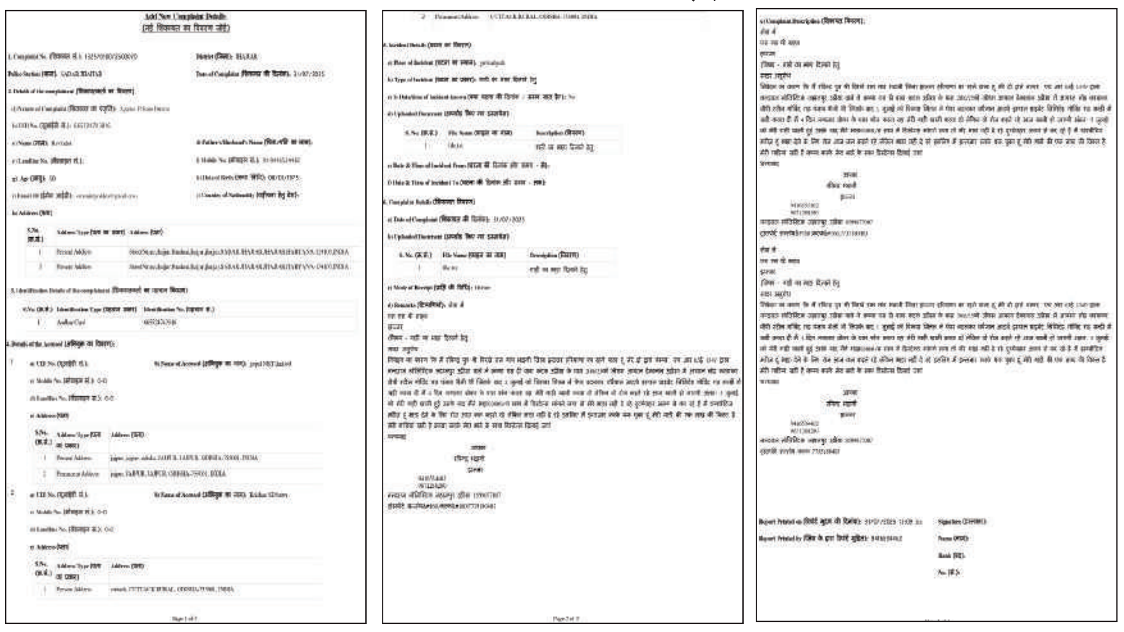

दिल्ली के लिए खतरनाक साबित हो रही ई-रिक्शा, वाहन चालकों ने साढे छह माह में ली 17 लोगों की जान

दिल्ली में ई–रिक्शा चालकों की लापरवाही से हादसे बढ़ रहे हैं। इस साल छह महीने में 17 लोगों की जान जा चुकी है। पुलिस के अनुसार सख्त कानून न होने से चालक यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं। बिना पंजीकरण के चलने वाले कई ई–रिक्शा जब्त किए गए लेकिन चुनाव के बाद कार्रवाई धीमी हो गई। नाबालिग चालकों की संख्या भी चिंताजनक है।

नई दिल्ली। राजधानी में ई रिक्शा लोगों की सुविधा के साथ-साथ परेशानी का भी सबब बनने लगा है। दिल्ली यातायात पुलिस के आंकड़ों के मुताबिक इस साल लापरवाह ई रिक्शा चालकों ने साढे छह माह में 17 लोगों की जान ले ली।

तेज रफ्तार और लापरवाह तरीके से ई-रिक्शा चलाने के कारण टक्कर लगने से लोगों की जान गई। इसके अलावा लापरवाह तरीके से ई रिक्शा चलाने पर दूसरे वाहनों की चपेट में आने से भी ई रिक्शा सवार 11 लोगों की मौत हो गई। दोनों हादसे ई रिक्शा चालकों की ही लापरवाही के कारण हुई जिनमें कुल 28 लोगों की जान चली गई।

पुलिस का कहना है कि ई रिक्शा को लेकर कोई सख्त कानून न होने के कारण चालक यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं। इन पर न तो परिवहन विभाग अंकुश लगा पा रहा है और न ही यातायात पुलिस। राजधानी में जाम लगने का एक बड़ा कारण ई रिक्शा ही माना जा रहा है।

एक पुलिस अधिकारी का कहना है कि साढे छह माह में बिना पंजीकरण के चलने वाले 1488 ई रिक्शा जब्त भी किए गए। ई रिक्शा के बढ़ते आतंक को देखते हुए दिल्ली विधान सभा चुनाव से पहले उप राज्यपाल ने यातायात पुलिस और परिवहन विभाग को हर माह बिना पंजीकरण के चलने वाले ई रिक्शा को जब्त करने का टारगेट दिया था।

जब्त किए गए ई रिक्शा को बुलडोजर से तोड़ दिया जाता था। चुनाव के बाद कार्रवाई धीमी पड़ गई। पुलिस का कहना है कि बड़ी संख्या में नाबालिग ई रिक्शा चलाते हैं जो सबसे अधिक यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं। पुलिस अधिकारी का कहना है कि अधिकतर लोग ई रिक्शा किराए पर चलवाते हैं।

ई रिक्शा की टक्कर से लगने वाले हादसे

कुल दुर्घटना	लोगों की मौत	घायल हुए
61	17	67

दूसरे वाहनों की टक्कर से ई रिक्शा सवार लोगों के साथ हुए हादसे

कुल दुर्घटना	लोगों की मौत	घायल हुए
61	11	92

कब होगा आपका विवाह, कैसा रहेगा वैवाहिक जीवन?

आपकी हथेली खोलेगी सारे राज

===========================

हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार हथेली में कई ऐसी रेखाएं होती है जो आपके पूरे जीवन का हाल बता देती हैं। ऐसी ही एक रेखा होती है विवाह रेखा। यह रेखा न केवल आपके वैवाहिक जीवन के बारे में बताती है बल्कि आपके जीवन के प्रेम संबंध आदि के बारें में भी बताती है। आज के समय में कई लोग अपने प्रेम में सफल होते हैं तो कुछ को प्रेम के मामलों में असफलता हाथ लगती है। आज के समय में हर किसी के पास ये इतना समय नहीं होता कि वो ज्योतिषी के पास जाकर अपने बारे में जान सकें। इसलिए आज हम आपको इन्हीं सब रेखाओं के बारे में बतायेंगे।

हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार हथेली में कई ऐसी रेखाएं होती है जो आपके पूरे जीवन का हाल बता देती हैं। ऐसी ही एक रेखा होती है विवाह रेखा। यह रेखा न केवल आपके वैवाहिक जीवन के बारे में बताती है बल्कि आपके जीवन के प्रेम संबंध आदि के बारें में भी बताती है। आज के समय में कई लोग अपने प्रेम में सफल होते हैं तो कुछ को प्रेम के मामलों में असफलता हाथ लगती है। आज के समय में हर किसी के पास ये इतना समय नहीं होता कि वो ज्योतिषी के पास जाकर अपने बारे में जान सकें। इसलिए आज हम आपको इन्ही सब रेखाओं के बारे में बतायेंगे। हथेली में कहां होती है विवाह रेखा हथेली में कनिष्ठिका उंगुली (सबसे छोटी उंगली) के नीचे और हृदय रेखा के ऊपर तथा बुध पर्वत पर हथेली के बाहर से आनेवाली रेखा विवाह रेखा कहलाती है। कनिष्ठिका उंगली के नीचे वाले भाग को बुध पर्वत कहा जाता है। यह रेखा एक या एक से अधिक भी हो सकती है। रेखा बहुत ही प्रसिद्ध रेखा है अक्सर देखा जाता है कि कुछ लोग में एक से अधिक रेखा को देखकर कहते है कि आपकी दो शादी होगी या आपके एक से अधिक प्रेम संबंध होंगे।

हथेली में प्रेम की रेखा अगर आपके हाथ में एक से अधिक विवाह रेखांए हैं तो यह आपके एक से अधिक प्रेम संबंध के बारें में बताता है। यदि आपकी विवाह रेखा हृदय रेखा के नजदीक से जा रही है तो आप बीस साल की उम्र में ही प्रेम के चक्कर में पड़ जाएंगे।और यदि विवाह रेखा छोटी उंगली तथा हृदय रेखा के मध्य में हो तो बाइस वर्ष अथवा इसके बाद प्रेम का सम्बन्ध का आगमन समझना चाहिए। हथेली में कैसी होनी चाहिए विवाह रेखा हस्तरेखा का एक साधारण सा नियम है कि जो भी रेखा हथेली में बिलकुल स्पष्ट, बारीक, गहराई लिए हुए, तथा सुन्दर हो तो वह अ'छी मानी जाती है। ऐसी रेखा वैवाहिक जीवन में शुभता का संकेत है इसका मतलब आपका वैवाहिक जीवन में कोई भी समस्या नहीं है। यह इस बात की और भी इशारा करता है कि आप और आपके जीवन साथी में काफी प्रेम है।

वहीं दूसरी ओर यही रेखा हथेली में यह रेखा स्पष्ट न हो, टूटी हुई हो, द्वीप बना है, जाला हो तो ऐसी रेखा अ'छी नहीं मानी जाती। ऐसी रेखा आपके जीवन में दाम्पत्य सुखों की कमी को दर्शाती है। इससे यह भी पता चलता है कि आप और आपके साथी के बीच प्रेम की कमी है और आप दोनों को एक दूसरें से सामंजस्य बैठाने में काफी दिक्कतें आ रही है।

विवाह रेखा और वैवाहिक जीवन

----

1. यदि किसी स्त्री के हाथ में विवाह रेखा के प्रारम्भ में कोई द्वीप का चिह्न बन रहा हो तो उस स्त्री कि शादी में धोखा होने की संभावनाएं रहती हैं। इसके साथ ही यह द्वीप इस बात की ओर भी इशारा करती है कि आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

2. यदि किसी व्यक्ति के हाथ में विवाह रेखा हृदय रेखा को काटते हुए नीचे की ओर चली जाए तो यह अ'छा नहीं माना जाती। ऐसी रेखा जीवन साथी के जीवन में खतरे को बताती है।

&. यदि किसी जातक की हथेली में विवाह रेखा सूर्य पर्वत की ओर जा रही है या वहां तक पहुंच चुकी है तो यह उस बात का संकेत करता है कि उसका जीवन साथी अवश्य ही समृद्ध और सम्पन्न परिवार से होगा या सरकारी नौकरी में होगा।

4. यदि बुध पर्वत से आने वाली कोई रेखा विवाह रेखा को काट दे तो व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन में अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

5. यदि किसी पुरुष के बाएं हाथ में दो विवाह रेखा है और दाएं हाथ में एक विवाह रेखा है तो ऐसे लोगों की पत्नी सर्वगुणसम्पन्न होती है तथा इन लोगों की पत्नी पति का बहुत अधिक ध्यान रखने वाली एवं अधिक प्रेम करने वाली होती है और पतिव्रता होती है।

रुद्राक्ष १ मुखी से २१ मुखी रुद्राक्ष-जन्म लग्न -के अनुसार रुद्राक्ष का महत्व

रुद्राक्ष धारण-लग्न त्रिकोणाधिपति ग्रह लाभकारी रुद्राक्ष-अंकषास्gvत्र *के अनुसार रुद्राक्ष-धारण

रुद्राक्ष 1 मुखी से २१ मुखी-रुद्राक्ष-जन्म लग्न के अनुसार रुद्राक्ष धारण-लग्न त्रिकोणाधिपति ग्रह लाभकारी रुद्राक्ष-अंकषास्त्र के अनुसार रुद्राक्ष-धारण

रुद्राक्ष मंत्र 1 मुखी शिव 1-ॐ नमः शिवाय ।२ —ॐ ह्रीं नमः
२ मुखी अर्धनारीश्वर ॐ नमः
* मुखी अग्निदेव ॐ क्लीं नमः
4 मुखी ब्रम्हा,सरस्वती ॐ ह्रीं नमः
5 मुखी कालाग्नि रुद्र ॐ ह्रीं नमः
6 मुखी कार्तिकेय, इन्द्र,इंद्राणी ॐ ह्रीं हुं नमः
7 मुखी नागराज अनंत,सप्तर्षि,सप्तमातृकाएँ ॐ हुं नमः
8 मुखी भैरव,अष्ट विनायक ॐ हुं नमः
9 मुखी माँ दुर्गा 1-ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः २-ॐ ह्रीं हुं नमः
10 मुखी विष्णु 1-ॐ नमो भवाते वासुदेवाय २-ॐ ह्रीं नमः
11 मुखी एकादश रुद्र 1-ॐ तत्पुरुषाय विदमहे महादेवय धीमही तन्नो रुद्रः प्रचोदयात २-ॐ ह्रीं हुं नमः
1२ मुखी सूर्य 1-ॐ ह्रीम् घृणिः सूर्यआदित्यः श्रीं २-ॐ क्रौं क्ष्रौं रौं नमः
1* मुखी कार्तिकेय, इंद्र 1-ऐं हुं क्षुं क्लीं कुमाराय नमः २-ॐ ह्रीं नमः
14 मुखी शिव,हनुमान,आज्ञा चक्र ॐ नमः
15 मुखी पशुपति ॐ पशुपत्यै नमः
16 मुखी महामृत्युंजय ,महाकाल ॐ ह्रौं जूं सः त्र्यंबकम् यजमहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम उर्वारुकमिव बंधनान् मृत्योर्मुक्षीय सः जूं ह्रौं ॐ
17 मुखी विश्वकर्मा ,माँ कात्यायनी ॐ विश्वकर्मणे नमः
18 मुखी माँ पार्वती ॐ नमो भगवाते नारायणाय
19 मुखी नारायण ॐ नमो भवाते वासुदेवाय
२0 मुखी ब्रम्हा ॐ सच्चिदेकं ब्रम्ह
२1 मुखी कुबेर ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये धनधान्य समृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा
आपकी ग्रह-राशि-नक्षत्र के अनुसार रुद्राक्ष धारण करें
ग्रह राषि नक्षत्र लाभकारी रुद्राक्ष मंगल मेष मृगषिरा-चित्रा-धनिष्ठा * मुखी
शुक्र वृषभ भरणी-पूर्वाफाल्गुनी-पूर्वाषाढ़ा 6 मुखी,1* मुखी,15 मुखी
बुध मिथुन आष्लेषा-ज्येष्ठा-रेवती 4 मुखी
चन्द्र कर्क रोहिणी-हस्त-श्रवण २ मुखी, गौरी-शंकर रुद्राक्ष
सूर्य सिंह कृतिका-उत्तराफाल्गुनी-उत्तराषाढ़ा1 मुखी, 1२ मुखी
बुध कन्या आष्लेषा-ज्येष्ठा-रेवती 4 मुखी
शुक्र तुला भरणी-पूर्वाफाल्गुनी-पूर्वाषाढ़ा 6 मुखी,1* मुखी,15 मुखी
मंगल वृष्चिक मृगषिरा-चित्रा-धनिष्ठा * मुखी
गुरु धनु-मीन पुनर्वसु-विषाखा-पूर्वाभाद्रपद 5 मुखी
शनि मकर-कुंभ पुष्य-अनुराधा-उत्तराभा*द्रपद 7 मुखी, 14 मुखी
शनि मकर-कुंभ पुष्य-अनुराधा-उत्तराभाद्रपद 7 मुखी, 14 मुखी
गुरु धनु-मीन पुनर्वसु-विषाखा-पूर्वाभाद्रपद 5 मुखी
राहु - आर्द्रा-स्वाति-षतभिषा8 मुखी, 18 मुखी
केतु - अष्विनी-मघा-मूल 9 मुखी,17 मुखी
नवग्रह दोष निवारणार्थ 10 मुखी, २1 मुखी
विषेष : 10 मुखी और 11 मुखी किसी एक ग्रह का प्रतिनिधित्व नहीं करते ।बल्कि नवग्रहों के दोष निवारणार्थ प्रयोग मे लाय जाते हैं ।

जन्म लग्न के अनुसार रुद्राक्ष धारण

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रत्न धरण करने के लिए जन्म लग्न का उपयोग सर्वाधिक प्रचलित है ।रत्न प्रकृति का एक अनुपम उपहार है। आदि काल से ग्रह दोषों तथा अन्य समस्याओं से मुक्ति हेतु रत्न धारण करने की परंपरा है ।आपकी कुंडली के अनुरूप सही और दोषमुक्त रत्न धारण करना फलदायी होता है। अन्यथा उपयोग करने पर यह नुकसानदेह भी हो सकता है। वर्तमान समय में शुद्ध एवं दोषमुक्त रत्न बहुत कीमती हो गए हैं, जिससे वे जनसाधारण की पहुंच के बाहर हो गए हैं। अतः विकल्प के रूप में रुद्राक्ष धारण एक सरल एवं सस्ता उपाय है। साथ ही रुद्राक्ष धारण से कोई नुकसान भी नहीं है, बल्कि यह किसी न किसी रूप में जातक को लाभ ही प्रदान करता है।

क्योंकि रुद्राक्ष पर ग्रहों के साथ साथ देवताओं का वास माना जाता है।

कुंडली में त्रिकोण अर्थात लग्न, पंचम एवं नवम भाव सर्वाधिक बलशाली माना गया है। लग्न अर्थात जीवन, आयुष्य एवं आरोग्य, पंचम अर्थात बल, बुद्धि, विद्या एवं प्रसिद्धि, नवम अर्थात भाग्य एवं धर्म। अतः लग्न के अनुसार कुंडली के त्रिकोण भाव के स्वामी ग्रह कभी अशुभ फल नहीं देते, अशुभ स्थान पर रहने पर भी मदद ही करते हैं ।

इसलिए इनके रुद्राक्ष धारण करना सर्वाधिक शुभ है। इस संदर्भ में एक संक्षिप्त विवरण यहां तालिका में प्रस्तुत है ।हमने कई बार देखा है कि कुंडली में शुभ-योग मौजूद होने के बावजूद उन योगों से संबंधित ग्रहों के रत्न धारण करना लग्नानुसार अशुभ होता है। उदाहरण के रूप में मकर लग्न में

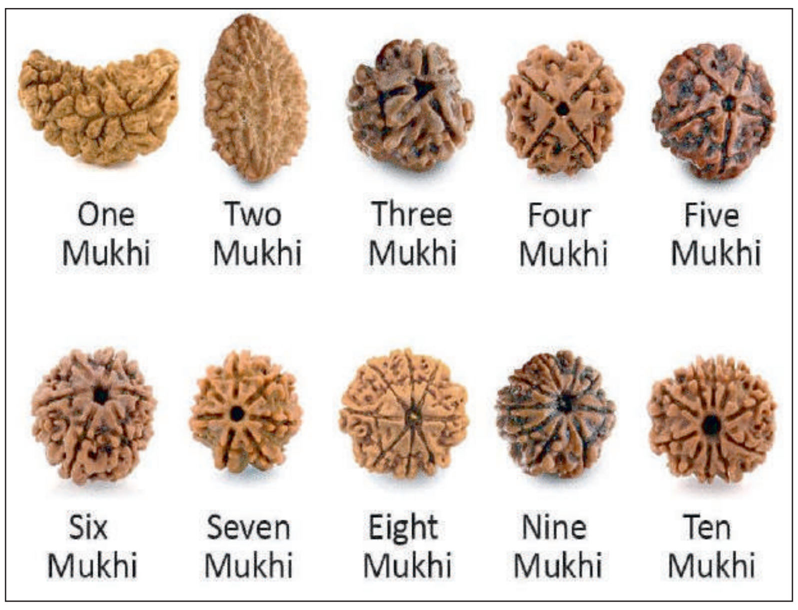

सूर्य अष्टमेश हो, तो अशुभ और चंद्र सप्तमेश हो, तो मारक होता है।

मंगल चतुर्थेष-एकादषेष होने पर भी लग्नेष शनि का शत्रु होने के कारण अशुभ नहीं होता। गुरु तृतीयेश-व्ययेश होने के कारण अत्यंत अशुभ होता है। ऐसे में मकर लग्न के जातकों के लिए माणिक्य, मोती, मूंगा और पुखराज धारण करना अशुभ है। परंतु यदि मकर लग्न की कुंडली में बुधादित्य ,गजकेसरी, लक्ष्मी जैसा शुभ योग हो और वह सूर्य, चंद्र, मंगल या गुरु से संबंधित हो, तो इन योगों के शुभाशुभ प्रभाव में वृद्धि हेतु इन ग्रहों से संबंधित रुद्राक्ष धारण करना चाहिए, अर्थात गजकेसरी योग के लिए दो और पांच मुखी, लक्ष्मी योग के लिए दो और तीन मुखी और बुधादित्य योग के लिए चार और एक मुखी रुद्राक्ष ।रुद्राक्ष ग्रहों के शुभफल सदैव देते हैं परंतु अशुभफल नहीं देते।

लग्न त्रिकोणाधिपति ग्रह लाभकारी रुद्राक्ष
मेष मंगल-सूर्य-गुरु * मुखी + 1 या 1२ मुखी + 5 मुखी
वृषभ शुक्र-बुध-षनि 6 या 1* मुखी + 4 मुखी + 7 या 14 मुखी
मिथुन बुध-षुक्र-षनि 4 मुखी + 6 या 1* मुखी + 7 या 14 मुखी
कर्क चंद्र-मंगल-गुरु २ मुखी + * मुखी + 5 मुखी
सिंह सूर्य-गुरु-मंगल 1 या 1२ मुखी + 5 मुखी + 6 मुखी
कन्या बुध-षनि-षुक्र 4 मुखी + 7 या 14 मुखी + 6 या 1* मुखी
तुला शुक्र-षनि-बुध 6 या 1* मुखी + 7 या 14 मुखी + 4 मुखी
वृष्चिक मंगल-गुरु-चंद्र * मुखी + 5 मुखी + २ मुखी
धनु गुरु-मंगल-सिंह 5 मुखी + * मुखी + 1 या 1२ मुखी
मकर शनि-षुक्र-बुध 7 या 14 मुखी + 6 या 1* मुखी + 4 मुखी
कुंभ शनि-बुध-षुक्र 7 या 14 मुखी + 4 मुखी + 6 या 1* मुखी
मीन गुरु-चंद्र-मंगल 5 मुखी + २ मुखी + * मुखी
अंकषास्त्र के अनुसार रुद्राक्ष-धारण

जिन जातकों जन्म लग्न, राशि, नक्षत्र नहीं मालूम है वे अंक ज्योतिष के अनुसार जातक को अपने मूलांक, भाग्यांक और नामांक के अनुरूप रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं। 1 से 9 तक के अंक मूलांक होते हैं। प्रत्येक अंक किसी ग्रह विशेष का प्रतिनिधित्व करता है,

जैसे अंक 1 सूर्य, २ चंद्र, * गुरु, 4 राहु, 5 बुध, 6 शुक्र, 7 केतु, 8 शनि और 9 मंगल का। अतः जातक को मूलांक, भाग्यांक और नामांक से संबंधित ग्रह के रुद्राक्ष धारण करने चाहिए।

आप अपने कार्य-क्षेत्र के अनुसार भी रुद्राक्ष धारण का सकते हैं

कुछ लोगों के पास जन्म कुंडली इत्यादि की जानकारी नहीं होती वे लोग अपने कार्यक्षेत्र के अनुसार भी रुद्राक्ष का लाभ उठा सकते हैं ।कार्य की प्रकृति के अनुरूप रुद्राक्ष-धारण करना कैरियर के सर्वांगीण विकास हेतु शुभ एवं फलदायी होता है। किस कार्य क्षेत्र के लिए कौन सा रुद्राक्ष धारण करना चाहिए, इसका एक संक्षिप्त विवरण यहां प्रस्तुत है।

नेता-मंत्री-विधायक सांसदों के लिए - 1 और 14 मुखी।
प्रशासनिक अधिकारियों के लिए - 1 और 14 मुखी।
जज एवं न्यायाधीशों के लिए - २ और 14 मुखी।
वकील के लिए - 4, 6 और 1* मुखी।
बैंक मैनेजर के लिए - 11 और 1* मुखी।
बैंक में कार्यरत कर्मचारियों के लिए - 4 और 11 मुखी।
चार्टर्ड एकाउन्टेंट एवं कंपनी सेक्रेटरी के लिए - 4, 6, 8 और 1२ मुखी।
एकाउन्टेंट एवं खाता-बही का कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिए - 4 और 1२ मुखी।
पुलिस अधिकारी के लिए - 9 और 1* मुखी।
पुलिस/मिलिट्री सेवा में काम करने CC वालों के लिए - 4 और 9 मुखी।
डॉक्टर एवं वैद्य के लिए - 1, 7, 8 और 11 मुखी।
फिजीशियन (डॉक्टर) के लिए - 10 और 11 मुखी।
सर्जन (डॉक्टर) के लिए - 10, 1२ और 14 मुखी।
नर्स-केमिस्ट-कंपाउण्डर के लिए - * और 4 मुखी।
दवा-विक्रेता या मेडिकल एजेंट के लिए - 1, 7 और 10 मुखी।
मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव के लिए - * और 10 मुखी।
मेकैनिकल इंजीनियर के लिए - 10 और 11 मुखी।
सिविल इंजीनियर के लिए - 8 और 14 मुखी।
इलेक्ट्रिकल इंजीनियर के लिए - 7 और 11 मुखी।
कंप्यूटर सॉफ्टवेयर इंजीनियर के लिए - 14 मुखी और गौरी-शंकर।
कंप्यूटर हार्डवेयर इंजीनियर के लिए - 9 और 1२ मुखी।
पायलट और वायुसेना अधिकारी के लिए - 10 और 11 मुखी।
जलयान चालक के लिए - 8 और 1२ मुखी।
रेल-बस-कार चालक के लिए - 7 और 10 मुखी।
प्रोफेसर एवं अध्यापक के लिए - 4, 6 और 14 मुखी।
गणितज्ञ या गणित के प्रोफेसर के लिए - *, 4, 7 और 11 मुखी।
इतिहास के प्रोफेसर के लिए - 4, 11 और 7 या 14 मुखी।
भूगोल के प्रोफेसर के लिए - *, 4 और 11 मुखी।
क्लर्क, टाइपिस्ट, स्टेनोग्रॉफर के लिए - 1, 4, 8 और 11 मुखी।
ठेकेदार के लिए - 11, 1* और 14 मुखी।
प्रॉपर्टी डीलर के लिए - *, 4, 10 और 14 मुखी।
दुकानदार के लिए - 10, 1* और 14 मुखी।
मार्केटिंग एवं फायनान्स व्यवसायियों के लिए - 9, 1२ और 14 मुखी।
उद्योगपति के लिए - 1२ और 14 मुखी।
संगीतकारों-कवियों के लिए - 9 और 1* मुखी।
लेखक या प्रकाशक के लिए - 1, 4, 8 और 11 मुखी।
पुस्तक व्यवसाय से संबंधित एजेंट के लिए - 1, 4 और 9 मुखी।
दार्शनिक और विचारक के लिए - 7, 11 और 14 मुखी।
होटल मालिक के लिए - 1, 1* और 14 मुखी।
रेस्टोरेंट मालिक के लिए - २, 4, 6 और 11 मुखी।
सिनेमाघर-थियेटर के मालिक या फिल्म-डिस्ट्रीब्यूटर के लिए - 1, 4, 6 और 11 मुखी।
सोडा वाटर व्यवसाय के लिए - २, 4 और 1२ मुखी।
फैंसी स्टोर, सौन्दर्य-प्रसाधन सामग्री के विक्रेताओं के लिए - 4, 6 और 11 मुखी रुद्राक्ष।
कपड़ा व्यापारी के लिए - २ और 4 मुखी।
बिजली की दुकान-विक्रेता के लिए - 1, *, 9 और 11 मुखी।
रेडियो दुकान-विक्रेता के लिए - 1, 9 और 11 मुखी।
लकडी+ या फर्नीचर विक्रेता के लिए - 1, 4, 6 और 11 मुखी।
ज्योतिषी के लिए - 1, 4, 11 और 14 मुखी रुद्राक्ष ।
पुरोहित के लिए - 1, 9 और 11 मुखी।
ज्योतिष तथा धीर्मिक कृत्यों से संबंधित व्यवसाय के लिए - 1, 4 और 11 मुखी।
जासूस या डिटेक्टिव एजेंसी के लिए - *, 4, 9, 11 और 14 मुखी।
जीवन में सफलता के लिए - 1, 11 और 14 मुखी।
जीवन में उच्चतम सफलता के लिए - 1, 11, 14 और २1 मुखी।
विषेष : इनके साथ-साथ 5 मुखी रुद्राक्ष भी धारण किया जाना चाहिए।

रुद्राक्ष धारण करने की विधि

रुद्राक्ष के बिना भगवान भोलेनाथ की चर्चा अधूरी ही जान पड़ती है परन्तु, दरअसल रुद्राक्ष है इसके बारे में बहुत कम लोगों को ही ज्ञात है.

रुद्राक्ष दो शब्दों से मिलकर बना है। और, इसका संधिविच्छेद होता है रुद्र+अक्ष। रुद्र अर्थात भगवान शंकर व अक्ष अर्थात आंसू। मान्यता है कि भगवान शिव के नेत्रों से जल की कुछ बूंदें भूमि पर गिरने से महान रुद्राक्ष अवतरित हुआ और भगवान शिव की आज्ञा पाकर वृक्षों पर रुद्राक्ष फलों के रूप में प्रकट हो गए।

यह माना जाता है कि रुद्राक्ष अड़तीस प्रकार के हैं, *जिनमें कत्थई वाले बारह प्रकार के रुद्राक्षों की उत्पत्ति सूर्य के नेत्रों से, श्वेतवर्ण के सोलह प्रकार के रुद्राक्षों की उत्पत्ति चन्द्रमा के नेत्रों से तथा कृष्ण वर्ण वाले दस प्रकार के रुद्राक्षों की उत्पत्ति अग्नि के नेत्रों से होती है।

आइए जानें कि रुद्राक्षों के दिव्य तेज से आप कैसे दुखों से मुक्ति पा कर सुखमय जीवन जीते हुए शिव कृपा पा सकते हैं।

हमारे धर्म ग्रथ कहते हैं कि ....

यथा च दृश्यते लोके रुद्राक्षः फलदः शुभः।
न तथा दृश्यते अन्या च मालिका परमेश्वरिः।।

अर्थात संसार में रुद्राक्ष की माला की तरह अन्य कोई दूसरी माला फलदायक और शुभ नहीं है।

श्रीमद्-देवीभागवत में लिखा है :
रुद्राक्षधारणाद्य श्रेष्ठं न किञ्चिदपि विद्यते।

अर्थात संसार में रुद्राक्ष धारण से बढ़कर श्रेष्ठ कोई दूसरी वस्तु नहीं है। ध्यान रहे कि रुद्राक्ष की दो जातियां होती हैं- रुद्राक्ष एवं भद्राक्ष रुद्राक्ष के मध्य में भद्राक्ष धारण करना महान फलदायक होता है।

भिन्न-भिन्न संख्या में पहनी जाने वाली रुद्राक्ष की माला निम्न प्रकार से फल प्रदान करने में सहायक होती है जो इस प्रकार है

1 रुद्राक्ष के सौ मनकों की माला धारण करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।
२ रुद्राक्ष के एक सौ आठ मनकों को धारण करने से समस्त कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। इस माला को धारण करने वाला अपनी पीढ़ियों का उद्घार करता है।
3 रुद्राक्ष के एक सौ चालीस मनकों की माला धारण करने से साहस, पराक्रम और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।
4 रुद्राक्ष के बत्तीस दानों की माला धारण करने से धन, संपत्ति एवं आयु में वृद्धि होती है।
5 रुद्राक्ष के २6 मनकों की माला को सर पर धारण करना चाहिए।
6 रुद्राक्ष के 50 दानों की माला कंठ में धारण करना शुभ होता है।
7 रुद्राक्ष के पंद्रह मनकों की माला मंत्र जप तंत्र सिद्धि जैसे कार्यों के लिए उपयोगी होती है।
8 रुद्राक्ष के सोलह मनकों की माला को हाथों में धारण करना चाहिए।
9 रुद्राक्ष के बारह दानों को मणि बंध में धारण करना शुभदायक होता है।
10 रुद्राक्ष के 108, 50 और २7 दानों की माला धारण करने या जाप करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

अब अगर हम आस्था से अलग इसकी वैज्ञानिकता की बात करें तो निश्चय ही आपको खुद के हिन्दू होने एवं अपने धर्म ग्रंथों पर गर्व होगा। क्योंकि वैज्ञानिक परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि रुद्राक्ष में -प्रभावशाली विद्युत -चुंबकीय तत्व (Electro Magnatic Property) होते हैं। जो अनियमित हृदय को नियमित करने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और, इसके कोई विपरीत प्रभाव भी नहीं है। शायद इसीलिए अगल-अगल अवस्था में , रुद्राक्ष के अलग -अलग मनका निर्धारित किये गए हैं साथ ही रुद्राक्ष को -अंगूठी में लगा कर- पहनने अथवा रात्रि में शयन करते समय धारण करने से निषेध किया गया है!

वैज्ञानिकता से परिपूर्ण आस्था को आगे बढ़ाते हुए रुद्राक्ष के बारे निःसंकोच कहा जा सकता है की जो व्यक्ति पवित्र और शुद्ध मन से भगवान शंकर की आराधना करके रुद्राक्ष धारण करता है, उसके सभी कष्ट दूर हो जाते है। और, मान्यता तो यहाँ तक है कि इसके दर्शन मात्र से ही पापों का क्षय हो जाता है। इसीलिए , जिस घर में रुद्राक्ष की पूजा की जाती है,

(रुद्राक्ष धारण करने की सम्पूर्ण विधि

रुद्राक्ष को धारण करने का दिन सोमवार अथवा शिवरात्रि के दिन या श्रावण मास के किसी भी दिन रुद्राक्ष धारण करने के लिए शुभ माने गये है।

यदि किसी कारण वश रुद्राक्ष के विशेष रुद्राक्ष मंत्रों से धारण न कर सके तो इस सरल विधि का प्रयोग करके धारणकर लें।

रुद्राक्ष के मनकों को शुद्ध लाल धागे में माला तैयार करने के बाद पंचामृत (गंगा जल मिश्रित रूप से) और पंचगव्य को मिलाकर स्नान करवाना चाहिए और प्रतिष्ठा के समय ॐ नमः शिवाय इस पंचाक्षर मंत्र को पढ़ना चाहिए।

उसके पश्चात पुनः गंगा जल में शुद्ध करके निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए चंदन, बिल्वपत्र, लालपुष्प, धूप, दीप द्वारा पूजन करके अभिमंत्रित करे और "ॐ तत्पुरुषाय विदमहे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात"।

108 बार मंत्र का जाप कर अभिमंत्रित करके धारण करना चाहिए।

मोक्ष प्राप्ति का सबसे सुगम मार्ग है श्रीमद्भागवत महापुराण : पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गांधी मार्ग स्थित श्रीनाथ धाम में सप्त दिवसीय 29वां अष्टोत्तरशत श्रीमद्भागवत सप्ताह पारायण एवं कथा महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ प्रारम्भ हो गया है ।महोत्सव का शुभारभ प्रख्यात सन्त आनंदम धाम पीठाधीश्वर सद्गुरु ऋतेश्वर महाराज ने ठाकुरजी के चित्रपट के समक्ष वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य दीप प्रज्ज्वलित करके किया ।तत्पश्चात व्यासपीठ पर आसीन मानस राजहंस, पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री ने विश्वभर से आए सैकड़ों भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत महापुराण के महात्म्य की कथा का रसास्वादन कराया।

पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री ने कहा कि अखिल कोटि ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमेश्वर भगवान श्रीकृष्ण का शब्द स्वरूप ग्रंथ श्रीमद्भागवत महापुराण साक्षात कल्पवृक्ष के समान है ।इसका आश्रय लेने वाले व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं ।साथ ही उनके सभी पापों का क्षय हो जाता है।

उन्होंने कहा कि श्रीमद्भागवत में समस्त धर्म ग्रंथों का समावेश है ।क्योंकि महर्षि वेदव्यासजी महाराज ने सभी ग्रंथों की रचना करने के बाद श्रीमद्भागवत महापुराण की रचना की थी ।इसीलिए इसे पंचम वेद माना गया है ।वस्तुतः मनुष्य की मोक्ष प्राप्ति का यदि कोई सबसे सुगम मार्ग है, तो वो श्रीमद्भागवत महापुराण ही है।

महोत्सव में पधारे आनंदम धाम पीठाधीश्वर सद्गुरु ऋतेश्वर महाराज ने कहा कि पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री ने श्रीमद्भागवत, श्रीराम कथा एवं अन्य धर्म ग्रंथों के माध्यम से समूचे विश्व में धर्म व अध्यात्म का प्रचार-प्रसार करके असंख्य व्यक्तियों का कल्याण किया है और कर रहे हैं ।साथ ही उन्हें श्रीकृष्ण भक्ति की ओर अग्रसर किया है ।जो कि अति प्रशंसनीय है।

महोत्सव के समन्वयक प्रोफेसर के. एम. अग्रवाल ने बताया कि कार्यक्रम के अंतर्गत 3 अगस्त को पूर्वाह्न 11 बजे से कोलकाता के भुवालका जन कल्याण ट्रस्ट के द्वारा ब्रज विभूति अभिनंदन समारोह एवं मेधावी छात्र छात्रा प्रोत्साहन समारोह आयोजित किया जाएगा।

इस अवसर पर श्रीनाभापीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी सुतीक्ष्णदास देवाचार्य महाराज, श्रीपीपाद्वाराचार्य जगद्गुरु बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, राम कथा प्रवक्ता अशोक व्यास, वैष्णवाचार्य धीरज बावरा, पंडित आर. एन. द्विवेदी (राजू भैया), श्रीमती मीरा शर्मा, श्रीमती सुदेवी शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे ।महोत्सव में पधारे सभी आगंतुक अतिथियों का पीयूष शर्मा एवं पद्मनाभ शास्त्री ने पटुका ओढ़कर व प्रसाद भेंट कर अभिनंदन किया।

पूरे उत्तर प्रदेश के जाटव समाज को जातिसूचक गन्दी गालियां देते हुए दो सगे नाबालिग भाइयों ने बनाया वीडियो शोशल मीडिया पर हो रहा वायरल

संगठन के लोगों ने थाने में तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की

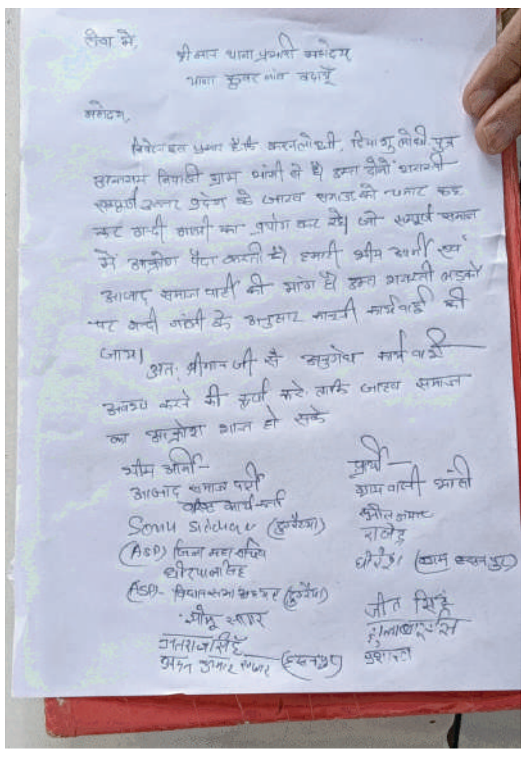

कुंवर गांव । थाना क्षेत्र में एक वीडियो शोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जिसमें दो लोधी राजपूत समाज के नाबालिग लड़के संपूर्ण उत्तर प्रदेश के जाटव समाज को जातिसूचक गन्दी गालियां देते हुए नजर आ रहे हैं ।भीम आर्मी व आजाद समाज पार्टी के कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार को थाने पहुंचकर पुलिस को तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की है ।वीडियो वायरल होने के बाद क्षेत्र के जाटव समाज के लोगों में राजपूत समाज के प्रति आक्रोश पनप रहा है ।संगठन के लोगों ने दोनों युवकों के खिलाफ कठोर कार्यवाही की मांग की है । वीडियो पुलिस के पास पहुंचने के बाद पुलिस ने जांच शुरू कर दी है दोनों युवक क्षेत्र के गांव भांसी के सगे भाई और जाति से लोधी राजपूत बताए जा रहे हैं ।जिन्होंने जाटव समाज को गन्दी गालियां देने के बाद वीडियो इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया है ।।इस संबंध में इंस्पेक्टर वीपी सिंह का कहना है कि मामला थाने आया है जांच की जा रही है ।

पशु प्रेमी द्वारा कराया रेस्टोरेंट का उदघाटन जिले में पेश की नई मिशाल

बदायूं। रोडवेज के पास राजकीय इंटर कलेज के सामने बनी कार पार्किंग के मार्किट में मीरा जी की चौकी निवासी यशो मोहन शर्मा ने अपने घर की रसोई रेस्टोरेंट का उद्धघाटन पशु प्रेमी विकेंद्र शर्मा के हाथ से फीता कटवाकर करवाया, पशु प्रेमी विकेंद्र शर्मा ने कहा की ये कार्यक्रम मेरे लिए एक सपने जैसा रहा, इसकी मैंने कभी कामना नहीं की थी, यशो मोहन द्वारा इतना सम्मान देने के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

हमारा अन्नदाता ।

इंद्रदेव मेहरबान धरा को जलपान ।
खुशहाल किसान बुवाई करे धान।।

आस वो लगाए फसल मिल जाए ।
हुड़ा जब खाएं शोर करे भगाए ।।

फसलों में मक्का भुट्टा गरम सीका ।
खरीदा,जहां बिकाखाया और खिस्का।।

क्वांर की तपाई फसल की सुखाई ।
खेत में कटाई भण्डार में भराई।।

धरती का सोना किसान का पसीना ।
ऋतु जोभी होना थके वो कभी ना।।

सर्वसुख का दाता क्षुधा को मिटाता ।
राष्ट्र का निर्माता हमारा अन्नदाता।।

विजय अग्निहोत्री
मंदसौर

अमन विहार को मिली बड़ी सौगात : रविन्द्र भारद्वाज

‘वार्ड-41 में बनने जा रही है पहली MCD एलोपैथिक डिस्पेंसरी: रविन्द्र भारद्वाज’

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली, 1 अगस्त दिल्ली के अमन विहार वार्ड-41 के निवासियों के लिए एक ऐतिहासिक और बहुप्रतीक्षित स्वास्थ्य सुविधा की नींव रखी जा रही है। वर्षों से स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव में जूझ रहे इस क्षेत्र को अब जल्द ही अपनी पहली दिल्ली नगर निगम (MCD) की एलोपैथिक डिस्पेंसरी मिलने जा रही है। यह डिस्पेंसरी बाबा विद्यापति मार्ग स्थित शहीद भगत सिंह पार्क के पास निर्मित होगी।

इस महत्वपूर्ण योजना के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण (DDA) से 833 वर्ग गज भूमि का स्थानांतरण दिल्ली नगर निगम को कराया गया है, जिसके पीछे वार्ड पार्षद रविन्द्र भारद्वाज का दो वर्षों का अथक संघर्ष और समर्पण है। यह डिस्पेंसरी सिर्फ अमन विहार वार्ड-41 ही नहीं, बल्कि पूरी किराड़ी विधानसभा — जिसमें पाँच वार्ड और लगभग 8 लाख की आबादी है — के लोगों के लिए एक वरदान सिद्ध होगी।

विकास की नई इबारत लिखी रविन्द्र भारद्वाज ने रविन्द्र भारद्वाज का नाम अब अमन विहार के विकास के पर्याय के रूप में लिया जाने लगा है। पार्षद बनने के बाद उन्होंने क्षेत्र की तस्वीर और तकदीर बदलने में कोई कसर नहीं छोड़ी। वे पहले ही क्षेत्र में पहला MCD प्राथमिक विद्यालय, पहला सार्वजनिक पार्क, पहला कूड़ा निष्पादन कॉम्पेक्टर, पहली पुस्तकालय (लाइब्रेरी) और दिल्ली नगर निगम का पहला बारातघर (निर्माणाधीन) जैसी कई योजनाएं सफलतापूर्वक शुरू करवा चुके हैं। अब उसी कड़ी में यह एलोपैथिक डिस्पेंसरी क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए एक नया अध्याय लिखेगी।

बिना सरकारी ज़मीन के शुरू हुआ था

सफर 2017 में जब रविन्द्र भारद्वाज पहली बार पार्षद निर्वाचित हुए, तब अमन विहार वार्ड-41 में दिल्ली नगर निगम की कोई अधिकृत भूमि तक मौजूद नहीं थी। क्षेत्र पूरी तरह अनाधिकृत कॉलोनियों से भरा हुआ था, जहां कोई बुनियादी सुविधा नहीं थी। लेकिन पार्षद के सतत प्रयासों से डीडीए से निगम को भूमि हस्तांतरित करवाई गई और विकास कार्यों का सिलसिला शुरू हुआ।

स्वास्थ्य सेवा की दिशा में मील का पत्थर

किराड़ी विधानसभा में यह MCD की पहली एलोपैथिक डिस्पेंसरी होगी, जो कि सरकारी चिकित्सा सेवाओं से वंचित लाखों लोगों के लिए उम्मीद की किरण है। इससे क्षेत्र के नागरिकों को छोटी-छोटी बीमारियों के लिए निजी क्लीनिकों में महंगे इलाज से राहत मिलेगी।

जनहित में एक बड़ी जीत

यह परियोजना दिखाती है कि अगर जनप्रतिनिधि संकल्पित हो तो विकास असंभव नहीं। रविन्द्र भारद्वाज ने अपने कार्यकाल में यह साबित कर दिया कि ‘विकास के लिए केवल वादे नहीं, जमीनी स्तर पर काम जरूरी है।’

साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की पहली बैठक सफलतापूर्ण सम्पन्न

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नईदिल्ली, साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की पहल धीरे धीरे रंग ला रही है आज उसकी पहली बैठक साउथ दिल्ली के किशनगढ़ वसंत कुंज में सफलतापूर्ण सम्पन्न हुए जिसमें ज्यादातर पत्रकारों की भागेदारिया रही ओर सभी का जबरदस्त समर्थन साउथ दिल्ली पत्रकार संघ को मिला ।आपको बता दे पहले भी कई बार साउथ दिल्ली पत्रकार संघ को बनाने की पहल की गई थी लेकिन एकता एव एकजुटता ना होने के कारण पत्रकार बंधु एक मंच पर नहीं आ सके लेकिन जो इस मुहिम से जुड़े थे उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और निरंतर प्रयास करते रहे ओर फिर इस साल फिर से ग्रुप बना कर सभी को जोड़ा गया यही उम्मीद से की इस साल यह संगठन आखिरकार बन ही जाएगा सोच ओर नियत अच्छी थी और ग्रुप की विचारधारा स्पष्ट करते हुए सभी पत्रकार बंधुओ को फिर से जोड़ा गया था और इस बार यह मुहिम रंग लाई और सभी ने इस विचारधारा का समर्थन करते हुए पूरा सहयोग समर्थन साउथ दिल्ली पत्रकार संघ को दिया ।उसी के तहत यह पहली बैठक रही गई जिसमें संगठन की विचारधारा से सभी को जागरूक किया गया ओर उनके सुझाव के साथ सभी मुद्दों पर विचार विमर्श करते हुए चर्चाएं की गई ।आपको बता दे संगठन की विचारधारा पत्रकारों के हितों की रही गई है जिसमें उनके मान सम्मान के साथ साथ उनके एव उनके परिवार के सुख दुख का साथी बनकर संगठन कार्य करेगा और पत्रकारों के हितों की लड़ाई के लिए सदैव प्रथम पंक्ति में उनके साथ रहेगा। साउथ दिल्ली के पत्रकार बंधुओ को एक सूत्र में पिरोने के लिए यह संगठन निरंतर प्रयास के साथ कार्य करता रहेगा ।बैठक में कई विषयों पर भी चर्चाएं हुए ओर सभी ने खुलकर अपनी अपनी राय रखी ।एक अच्छी पहल का सभी ने स्वागत किया ओर अपना पूर्ण समर्थन भी दिया ।जो पत्रकार बंधु किसी कारणबस बैठक में नहीं आ पाए उन्होंने ग्रुप के माध्यम से अपना समर्थन साउथ दिल्ली पत्रकार संघ को दिया ओर एक अच्छी शुरुवात के भागीदार बनकर अपनी अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया ।पहली बैठक में संगठन की विचारधारा पर चर्चाएं हुए ओर सकारात्मक रूप से चली इससे अगली बैठक जो हमारी होगी उसमें संगठन की संरचना पर विचार विमर्श किया जाएगा और तीसरी बैठक में कार्यकारणी का गठन साउथ दिल्ली पत्रकार संघ द्वारा किया जाएगा ।बैठक में आए हुए ओर समर्थन देने वाले सभी पत्रकार बंधुओ का हार्दिक स्वागत ओर आभार ।हमे पूरी उम्मीद है कि यह संगठन पत्रकारों का सबसे अहम संगठन बनकर उभरेगा ओर पत्रकारों के साथ पत्रकार एकता जिंदाबाद के बीच मंजिलों को छुएगा ।पहली बैठक में जो पत्रकार समलित हुए उनके नाम है राजनारायण मिश्रा,अजीत कुमार,दीप सिलोड़ी,कुंदन सिंह,स्वतंत्र सिंह, भुल्लर मोमना बेगम,वीणा,महेंद्र कुमार,दीपक कुमार,मनोज सिंह एवं जिन्होंने ग्रुप के माध्यम से साउथ दिल्ली पत्रकार संघ का समर्थन किया उनके नाम है बंसी लाल,दीपक खम्बरा,सागर मलिक,मुकेश सिंह,रमेश भाई,आशुतोष कुमार,सुनील परिहार,अमरदीप,राकेश सोनी ,हुंकार मीडिया,वाशिम फिरोज,शहनवाज खान,वीपी शर्मा ।साउथ दिल्ली पत्रकार संघ को पूरी उम्मीद है कि ग्रुप में 36 पत्रकार बंधु शामिल हुए है आज पहली बैठक में 15 से ज्यादा पत्रकार बंधु पहुंचे थे उम्मीद अगली बैठक में सभी पत्रकार बंधु शामिल होगे।

आइए मिलकर साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की मजबूत करे और ज्यादा से ज्यादा भागेदारी निभा कर अपना अपना योगदान संगठन को दे कर पत्रकारिता का फर्ज निभाए।

‘नारी सशक्तिकरण से सशक्त भारत: विकसित भारत की ओर एक कदम विषय पर प्रेरणादायक राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन’

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली, “नारी सशक्तिकरण से सशक्त भारतः विकसित भारत की ओर” विषय पर आधारित एक प्रेरणादायक राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन 31 जुलाई 2025 को डॉ. आंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, नई दिल्ली में सफलतापूर्वक किया गया। यह आयोजन लुंबराम चौधरी , सांसद (लोकसभा), जालोर-सिरोही, राजस्थान के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। इस भव्य कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय सांसद बिजुली कलिता मेधी (गुवाहाटी, असम), सांसद कमलेश जांगड़े (छत्तीसगढ़) एवं माननीय सांसद लुंबराम चौधरी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

इस गौरवपूर्ण कार्यक्रम का समापन केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्यमंत्री निमुबेन जयंतीभाई बामनिया की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। उन्होंने मुख्य अतिथि के रूप में न केवल आयोजन को संबोधित किया, बल्कि नारी सशक्तिकरण के महत्व पर जोर देते हुए उपस्थित जनसमूह को प्रेरित किया। उनके विचारों ने यह स्पष्ट किया कि जब तक समाज की आधी आबादी को समान अवसर नहीं मिलते, तब तक कोई भी राष्ट्र पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो सकता।

यह आयोजन हर दृष्टिकोण से प्रेरणादायक, जानकारीवर्धक और ऊर्जा से भरपूर रहा। पूरे भारत से हज़ारों की संख्या में विद्यार्थियों, युवा प्रोफेशनल्स, शिक्षकों, महिला वैज्ञानिकों, चिकित्सकों, स्टार्टअप प्रतिनिधियों, घरेलू महिलाओं और समाजसेवियों ने इस आयोजन में उत्साहपूर्वक भाग लिया। संगोष्ठी में चर्चा के दौरान कई जीवन बदलने वाली कहानियाँ सामने आईं, जिन्होंने दर्शकों को गहराई से प्रभावित किया। प्रदर्शनी स्टॉल्स पर तकनीकी नवाचार, सामाजिक पहल, महिला नेतृत्व की सफलता की कहानियाँ और सरकारी योजनाओं की प्रगति को देखकर आगंतुकों में गहरी समझ और गर्व की भावना उत्पन्न हुई।

कार्यक्रम में उमड़ी उत्साही भीड़ न केवल उत्साहवर्धक रही, बल्कि यह जनसहभागिता महिलाओं के नेतृत्व में विकास के प्रति जनता के विश्वास का प्रमाण भी बनी। यह संगोष्ठी एक साधारण प्रदर्शनी न होकर ज्ञान, प्रेरणा और राष्ट्र गौरव का केंद्र बन गई, जहाँ लोगों ने नई जानकारियों के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका को भी गहराई से समझा।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी लोगों से यह विनम्र आग्रह किया गया कि वे इस सशक्तिकरण के संदेश को प्रदर्शनी हॉल से बाहर लेकर जाएं, और अपने परिवारजनों, मित्रों, सहकर्मियों और आस-पड़ोस के लोगों को भी इस आयोजन से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करें। यह केवल एक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि एक ऐसा अनुभव है जिसे महसूस करना, अपनाना और आगे बढ़ाना हर भारतीय के लिए आवश्यक है।

इस संगोष्ठी में महिलाओं की भूमिका को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अनुसंधान एवं विकास, स्वास्थ्य, चिकित्सा नवाचार, खनिज एवं ऊर्जा क्षेत्र जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में केंद्र में रखते हुए प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रमुख संस्थानों में भारतीय मानक ब्यूरो (BIS), प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना (PMBJP), तमिलनाडु बागवानी विकास एजेंसी (TANHODA), सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन सिद्धा (CCRS), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE), नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड (NEEPCO), राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT), भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग (GSI), भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR), पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण (PPVFRA), व्हाइट बैंड एसोसिएट्स और श्रीलालमहल ग्रुप जैसे संस्थान शामिल रहे। इन संस्थानों ने अपने-अपने क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और नवाचार को प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया।

इस राष्ट्रीय पहल को गोल्ड स्पॉन्सर के रूप में Firefox, सिल्वर स्पॉन्सर के रूप में GAIL (India) Ltd., श्रीलालमहल ग्रुप और तमिलनाडु बागवानी विकास एजेंसी, और लोगो स्पॉन्सर के रूप में NEEPCO, पावर ग्रिड, एलआईसी, टी बोर्ड इंडिया, सरताज जन सेवा, द न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी और एचपीसीएल का सशक्त सहयोग प्राप्त हुआ।

इस आयोजन की सफलता केवल इसकी भव्यता में नहीं, बल्कि इसमें उत्पन्न हुई जागरूकता, भावनात्मक जुड़ाव और प्रेरणा में निहित रही। जैसे-जैसे भारत विकसित राष्ट्र की ओर अग्रसर हो रहा है, ऐसे आयोजन यह स्मरण कराते हैं कि नारी सशक्तिकरण कोई अलग अभियान नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की नींव है।

दस वर्ष में तीसरी बार बढ़ने वाली हैं दिल्ली चिड़ियाघर के टिकट की दरें, जानिए अब क्या होगी नई कीमत

दिल्ली के राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में टिकट की कीमतों में वृद्धि की तैयारी है। वयस्कों के लिए टिकट 100 रुपये और बच्चों के लिए 50 रुपये करने का प्रस्ताव है। अधिकारियों का कहना है कि यह वृद्धि चिड़ियाघर को आधुनिक बनाने के लिए जरूरी है। पहले टिकट 20 पैसे का था जिसे बाद में बढ़ाया गया। जून 2025 में चिड़ियाघर में 2.46 लाख दर्शक आए थे।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय प्राणी उद्यान (चिड़ियाघर) में एक बार फिर से टिकट के दाम बढ़ाने की तैयारी हो रही है। वर्ष 1959 में महज 20 पैसे में प्रवेश देने वाला यह चिड़ियाघर अब 100 रुपये प्रति वयस्क टिकट बढ़ाने की तैयार में है।

हाल ही में हुई एक समीक्षा बैठक में टिकट दाम बढ़ाकर वयस्कों के लिए 100 रुपये और बच्चों के लिए 50 रुपये करने का प्रस्ताव रखा गया, हालांकि अभी इसे अंतिम मंजूरी नहीं मिली है।

अधिकारियों का कहना है कि यह बढ़ोतरी दिल्ली चिड़ियाघर को देश के अन्य बड़े चिड़ियाघरों के समकक्ष लाने और इसके आधुनिकीकरण प्रयासों को समर्थन देने के लिए की जा रही है। कई राज्यों और देशों में चिड़ियाघरों के टिकट 100 रुपये से अधिक हैं।

पिछले एक दशक में यह तीसरी बार होगा जब टिकट दरों में संशोधन होगा। इससे पहले वर्ष 2021 में टिकट दर 40 रुपये से बढ़ाकर 80 रुपये की गई थी, जबकि वर्ष 2013 में 20 रुपये से 40 रुपये टिकट किया गया था।

दिल्ली चिड़ियाघर की स्थापना 1959 में हुई थी और उस समय वयस्कों के लिए टिकट 20 पैसे व बच्चों के लिए 10 पैसे रखी गई थी। पांच वर्ष से छोटे बच्चों के लिए प्रवेश निश्शुल्क था।

उस समय पांच पैसे में चिड़ियाघर का मैप भी मिलता था, जो दर्शकों के लिए गाइड और स्मृति चिह्न का काम करता था। चिड़ियाघर में जून 2025 में चिड़ियाघर में 2.46 लाख दर्शकों ने दौरा किया, जबकि जुलाई 2024 में यह संख्या 1.57 लाख थी।

लोटपोट कॉमिक्स और शिन-चैन का शानदार मिलन: बच्चों के मनोरंजन की दो दिग्गज दुनिया का मज़ेदार संगम

मुख्य संवाददाता

भारत की पहली और सबसे पुरानी हिंदी बच्चों की कॉमिक लोटपोट’, जो 1969 से बच्चों का मनोरंजन कर रही है, ने अब तक का अपना सबसे रोमांचक सहयोग घोषित किया है—जापान के प्यारे और शरारती राष्ट्रीय प्रतीक शिन-चैन के साथ।

1990 में स्व. योशितो उसुई द्वारा बनाए गए ‘MANGA’ के रूप में जन्मा शिन-चैन, जापान ही नहीं बल्कि दुनियाभर के बच्चों का चहेता बन गया है। भारत में, जब से यह शो 2006 में टेलीविज़न पर प्रसारित हुआ, तब से यह बच्चों और युवाओं के बीच बेहद लोकप्रिय बना हुआ है।

अब, भारत में शिन-चैन की यात्रा के एक महत्वपूर्ण पड़ाव को लेकर कहा, इसका नया थिएट्रिकल फ़िल्म शिन-चानः द स्पाईसी कसुकाबे डांसर्स इन इंडिया (Shin chan: The Spicy Kasukabe Dancers in India), जो भारत की बैकग्राउंड पर आधारित है, 26 सितंबर को पूरे देश में रिलीज़ होने जा रही है। इस भारत-थीम्ड फ़िल्म की रिलीज़ के साथ ही, शिन-चैन पहली बार भारत में आधिकारिक रूप से हिंदी में ‘MANGA’ कॉमिक्स के रूप में ‘लोटपोट’ मैगज़ीन के पन्नों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर चुका है। यह इंडो-जापानी सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक ऐतिहासिक क्षण है, जो शिन-चैन को स्क्रीन और पन्नों दोनों के ज़रिए भारतीय परिवारों के और भी करीब लाएगा।

पाँच दशकों से अधिक समय से, लोटपोट कॉमिक मोटू-पतलू, डॉ. झटका, घसीटाराम, शेख चिल्ली, नटखट नीटू, चेलाराम और मिन्नी जैसे लोकप्रिय किरदारों के माध्यम से भारतीय बच्चों को हास्य, आनंद और नैतिक मूल्यों की सौगात देती आई है। अब शिन-चैन इस रचनात्मक गठजोड़ के ज़रिए लोटपोट यूनिवर्स में शामिल हो रहा है, जिससे पाठकों को देसी हास्य और जापानी शरारतों का रंगीन संगम देखने को मिलेगा—यानी बच्चों के लिए एक असली ग्लोबल अनुभव।

पी. के. बजाज, संपादक, लोटपोट कॉमिक ने कहा

“इस सहयोग को जीवंत होते देखना मेरे लिए बहुत ही ख़ुशी की बात है। शिन-चैन एक ऐसा नाम है जो दुनियाभर के बच्चों के दिलों में बसा है, और अब उसे लोटपोट परिवार में शामिल करना बहुत आनंददायक है। यह सहयोग मस्ती, दोस्ती और क्रॉस-कल्चरल स्टोरीटेलिंग का फेस्टिवल है।”

अमन बजाज, प्रकाशक, लोटपोट कॉमिक ने कहा

“एक ग्लोबल स्तर पर पहचाने जाने वाले किरदार जैसे शिन-चैन से जुड़ना हमारे लिए गर्व की बात है। यह सहयोग लोटपोट की विरासत को नई ऊंचाइयों तक ले जाने की दिशा में एक बड़ा कदम है, जिसमें हम सीमाओं से परे दर्शकों तक पहुँच बना रहे हैं, लेकिन साथ ही अपने मूल—बच्चों के लिए स्वस्थ मनोरंजन—से जुड़े हुए हैं।”

शिवांक अरोड़ा, चीफ़ मार्केटिंग ऑफिसर, लोटपोट कॉमिक ने कहा

“हमें इस साथ पर बहुत गर्व है और हम आगे भी ऐसे नए और अच्छे काम करने की योजना बना रहे हैं। लोगों से जो प्यार और समर्थन मिला है, वह हमारे लिए बहुत हिम्मत बढ़ाने वाला है और हमें कुछ नया करते रहने और आज की नई पीढ़ी के पाठकों से जुड़े रहने की ताकत देता है।”

केन्सुके सुजुकी, महाप्रबंधक और प्रधान संपादक, ‘क्रेयॉन शिनचैन’ प्रभाग, फुताबाशा पब्लिशर्स लिमिटेड, जापान, ने कहा

“नमस्ते! ‘लोटपोट’ जैसी प्रतिष्ठित और लंबे समय से चली आ रही मैगज़ीन के कवर पर शिन-चैन को देखकर वास्तव में हम बहुत प्रसन्न हैं। भारत में आधारित नई शिन-चैन फ़िल्म के 26 सितंबर को रिलीज़ के साथ, हम चाहते हैं कि पाठक ओरिजिनल MANGA की उस मासूमियत और शरारत को भी फिर से महसूस करें।

हमारी कामना है कि शिन-चैन भारत के परिवारों में हंसी, मुस्कान और शरारत की मिठास लेकर आए।

यह ऐतिहासिक सहयोग यह साबित करता है कि लोटपोट कॉमिक समय के साथ लगातार आगे बढ़ते हुए भी भारतीय कहानी कहने की अपनी जड़ों से जुड़ी हुई है। शिन-चैन के साथ यह क्रॉसओवर एक रंगीन और नए युग की शुरुआत भर है।

फिल्म के बारे में

‘शिन-चैनः द स्पाईसी कसुकाबे डांसर्स इन इंडिया’ शिन-चैन फ्रेंचाइज़ी की नई थिएट्रिकल फिल्म है, जो 26 सितंबर, 2025 को भारतभर के सिनेमाघरों में हिंदी, तमिल और तेलुगु भाषाओं में रिलीज़ होगी।

फिल्म का निर्माण शिन-ई एनिमेशन, टीवी आसाही, एडीके इमोशन्स और फुताबाशा द्वारा किया गया है, और एनीमेशन प्रोडक्शन शिन-एई एनीमेशन ने किया है। मासाकाज़ु हाशिमोटो इस फिल्म के निर्देशक हैं और यह उनकी छठी शिन-चैन फिल्म है।

मानसून में बालों की टूट-फूट से बचना है? शैम्पू से पहले ज़रूर करें तेल मालिश!

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली, मानसून का मतलब है भीगी सड़कें, गरमागरम पकौड़ों की खुशबू और मिट्टी की सोंधी-सोंधी महक। लेकिन जिस तरह यह मौसम दिल को सुकून देता है, उसी तरह हमारे बालों के लिए कई परेशानियां भी लेकर आता है। इस मौसम में हवा में नमी बढ़ जाती है और बारिश का पानी सीधे बालों को नुकसान पहुंचाता है। नतीजतन, बाल रूखे हो जाते हैं, उलझते हैं और टूटने लगते हैं। ऐसे में बालों को स्वस्थ बनाए रखने का सबसे आसान और असरदार उपाय है—तेल लगाना। तेल सिर्फ बालों को गहराई से पोषण नहीं देता, बल्कि उन्हें लंबे समय तक होने वाले नुकसान से भी बचाता है।

डॉ. शिल्पा वोरा, चीफ़ आरएंडडी ऑफिसर, मैरिको लिमिटेड, मानसून के मौसम में नियमित रूप से तेल लगाने की आदत के फ़ायदे बताते हुए कहती हैंः

- बालों को मजबूत बनाना और मरम्मत करना : मानसून के मौसम में हवा की नमी बढ़ जाने से बाल अक्सर कमज़ोर, बेजान और रूखे हो जाते हैं। ऐसे में नियमित रूप से तेल लगाना बालों को ज़रूरी पोषण देने का सबसे आसान और असरदार तरीका है। इससे बालों की जड़ें मज़बूत होती हैं और डैमेज यानी टूट-फूट की मरम्मत भी होती है। खासकर जब बाल गीले होते हैं, तो वे जल्दी टूटते हैं—ऐसे में तेल एक अतिरिक्त सुरक्षा कवच की तरह काम करता है और सतह पर होने वाले नुकसान को भी कम करता है। बेहतर परिणाम के लिए आप पैराशूट एडवांस्ड गोल्ड कोकोनट हेयर ऑयल इस्तेमाल कर सकते हैं। यह नारियल तेल बालों की 10 परतों तक गहराई से जाकर पोषण देता है और बालों को भीतर से मज़बूत और खूबसूरत बनाता है।
- मुलायम और आसानी से सुलझने वाले बाल : नियमित रूप से तेल लगाने से बाल न सिर्फ़ मुलायम बनते हैं, बल्कि उन्हें सँवारना और स्टाइल करना भी आसान हो जाता है। खासकर मानसून की नमी में जब बाल जल्दी उलझ जाते हैं, तो तेल की नैचुरल चिकनाहट बालों को सुलझाने में मदद करती है और कंघी करते समय बालों का टूटना भी कम होता है। उलझे बालों से राहत पाने के लिए नारियल तेल को जड़ों से सिरों तक लगाएं, 30 मिनट तक छोड़ें और फिर धो लें। बेहतर नतीजों के लिए यह प्रक्रिया नियमित रूप से दोहराएं।
- ब्लड सर्कुलेशन को बेहतर बनाता है : अच्छी तरह से की गई तेल मालिश स्कैल्प में रक्त संचार को बढ़ाती है, जिससे बालों की जड़ों तक भरपूर पोषण पहुँचता है और बालों की ग्रोथ बेहतर होती है। साथ ही यह स्कैल्प को नमी देती है और उसे स्वस्थ बनाए रखने में मदद करती है।

तेज़ भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी में बालों की देखभाल के लिए ज़्यादा समय निकालना मुश्किल हो सकता है। ऐसे में मानसून के मौसम में सिर्फ़ 30 मिनट की ऑयलिंग भी आपके बालों को ज़रूरी पोषण दे सकती है। तो इस बार बालों की चमक को बारिश के हवाले मत कीजिए—तेल लगाइए और हर भीगे दिन में भी चमकते रहिए।

सद्कर्म और श्रम आधारित फल पर जीने का प्रयास और रियाज कीजिए, असीम सुख-शांति मिलेगी

डॉ दिनेश चंद्र सिंह

प्रसिद्ध दार्शनिक ग्रंथ 'अष्टावक्र गीता' का एक प्रसिद्ध श्लोक (18.78) है, ₹क्व तमः क्व प्रकाशो वा हानं क्व च न किञ्चन। निर्विकारस्य (नविकारस्य) धीरस्य निरातङ्कस्य सर्वदा॥₹ अर्थात, ₹सर्वदा निर्भय और निर्विकार धीर पुरूष को ₹कहाँ अंधकार, कहाँ प्रकाश? और कहाँ त्याग (हानि) है? और कहाँ कुछ भी नहीं है? जो बुद्धिमान व्यक्ति हमेशा अपरिवर्तनीय और निडर रहता है, वही श्रेष्ठ है।₹

देखा जाए तो यह श्लोक, मनुष्य के भ्रमित और अज्ञानी अवस्थाओं पर प्रकाश डालता है। यानी जब मन अंधकार (अज्ञान) और प्रकाश (ज्ञान) के बीच फंसा रहता है, तो वह हमेशा भ्रमित रहता है। लेकिन जब मन स्थिर हो जाता है, और अहंकार से मुक्त हो जाता है, तो वह इन द्वंद्वों से परे हो जाता है। उस स्थिति में, न तो अंधकार होता है और न ही प्रकाश, न ही हानि और न ही लाभ। यह स्थिति ही ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार की अवस्था है। श्रेष्ठ पुरुष ही इस स्थिति को प्राप्त करते हैं।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि मानवीय चित्त में वृत्तियां हैं, वासनाएं हैं, कामनाएं हैं। दरअसल, अनेक जन्मों में जो कुछ हमलोगों को मिला है, उसही का संग्रहीत स्वरूप ही चित्त यानी मनोवृति है। बुद्धि इनको सद अथवा असद रूप में विभाजित करती है। वही सुख-दुःख, लाभ-हानि, प्रेम-घृणा, हिंसा-अहिंसा, प्रकाश-अंधकार, त्याग-ग्रहण आदि का विभाजन करती है। किंतु अस्तित्व में कुछ भी नहीं है। वहां सब एक रूप है। एक को हराने और दूसरे को बचाने का कोई उपाय नहीं है। ऐसा इसलिए कि यदि मृत्यु को हरा दिया जाए तो जन्म कदापि नहीं संभव है।

अनुभूत सत्य है कि यदि बेईमानी को हटा दिया जाए तो किसी प्रकार की ईमानदारी संभव नहीं है। इसलिए घृणा है तो प्रेम है। पाप है तो पुण्य (धार्मिक स्थल) है। जहां पापी अपने अंतःकरण से, अपनी अंतरात्मा की आवाज से, अपने पाप को आत्म स्वीकार कर, मौन से पापों की स्वीकृति प्रदान करते हुए धर्म के प्रतीक स्वरूप मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च में मौन रूप में अपने कृत्यों के लिए माफी मांगता है और वाचाल होकर अपने को निष्कपट, ईमानदार और सत्यवचन कर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है। यही छलिया जीवन है। इसमें शांति दुर्लभ है।

अनुभव बताता है कि मैं भी, तू भी मानव स्वरूप में मानवोचित दुर्बलताओं और मानवोचित कर्मेन्द्रियों का गुलाम तो नहीं हूँ, लेकिन इसके प्रभाव में हूँ। ऐसा कोई मानव नहीं है, जो मानवोचित दुर्बलताओं और कर्मेन्द्रियों की चंचलता और वासनाओं का कम से कम एक बार शिकार नहीं हुआ हो, परन्तु हम अपनी कमियों को स्वीकार नहीं करते हैं। यही कारण है कि हम कभी कभार सफल भी नहीं होते हैं।

एक प्रकार से हम अभी अज्ञानी हैं। बड़े-बड़े पदों एवं भौतिक सुख-सुविधाओं की उपलब्धियों की चकाचौंध में रहते हैं। भौतिक संसाधनों के उपभोग के आधार पर खुद को बड़ा मानकर दोष करने के पाप को भोगते हैं। हमलोग अपनी सुविधा के लिए सब कुछ भोगने की अकारण चेष्टा में निर्लिप्त रहते हैं और दिखावा के लिए बहुत उत्कृष्ट बनने का प्रयत्न करते हैं। परंतु जब मन के अंतर्मन में स्वयं झांकते/देखते हैं तो पाते हैं कि वाकई में हम क्या हैं? शायद कुछ नहीं, इसलिए इस मानसिक अवस्था, द्वंद्व भरे जीवन का मैं वर्णन नहीं करूंगा।

कहना न होगा कि सब कुछ यहीं यानी मृत्यु लोक में रहेगा, सिर्फ हमारा स्वार्थ रहित काम और उससे प्राप्त मानव कल्याण का यश ही हमारे साथ जाएगा। इस नजरिए के मुताबिक, सुखमय जीवन के प्रयासों की समस्त कहानी ही हमारी होगी। कहने का आशय यह कि पद-प्रतिष्ठा और अहंकार युक्त स्वार्थपरक जीवन जीने की शैली कभी आपको जीवन पर्यंत प्रतिष्ठा नहीं दिलाएगी, क्योंकि भौतिक उपलब्धि और सुख-सुविधाओं से प्राप्त जीवन हमेशा व्याधि ही लाती है और व्याधि किसी भी व्यक्ति के स्वस्थ जीवन शैली की शत्रुता का संवाहक है। यह काफी कष्टकर अवस्था होती है। इससे निवृति कुशल चिकित्सा द्वारा ही संभव है। यदा-कदा प्रारब्धवश इसमें भी बाधा पहुंचती है, जिससे जीवन नारकीय बन जाता है।

सच कहूं तो मैं भी कहीं न कहीं कुछ मानवोचित दुर्बलताओं का शिकार हुआ हूँ, परंतु कुल मिलाकर बहुत कुछ यानी बहुतेरी दुर्बलताओं से अछूता हूँ। शायद इसलिए स्वस्थ भी हूँ। ऐसी ही सद्प्रवृति की कामना आप सभी हित चिंतकों, मित्रों, सुधीजनों के लिए करता हूँ। मेरी स्पष्ट अवधारणा है कि सुख-दुःख, ऐश्वर्य-अनैश्वर्य सभी कुछ ईश्वर की सत्ता के अधीन है। इसलिए तो लोक महाकाव्य रामचरितमानस में लिखा हुआ है कि- 'सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेऊ मुनिनाथ। हानि-लाभु, जीवनु-मरनु, जसु-अपजसु विधि हाथ।।'

इस प्रकार से यह ठीक है कि सब कुछ विधि के हाथ में है, परंतु हमारा अहंकार युक्त कर्म ही हमें विधि के विधान की उस ओर उन्मुख करता है। इसलिए परोपकारी भावना में इजाफा करते हुए निज अहंकारी चित्त का दमन कीजिए।

जहां उपरोक्त वर्णित कर्मों की चासनी के अंतर्गत हमें वही मिलेगा, जैसा सुंदर हमारा कर्म और अंतःकरण, आचरण होगा। कहा भी जाता है कि- 'बोया पेड़ बबूल का, आम कहां से होय।'

शास्त्र कहता है कि 'जहां क्रोध तहां काल है, जहां लोभ वहां पाप। जहां दया तहां धर्म है, जहां प्रभु वहां आप।।' इसलिए हम सबको क्रोध और लोभ से दूर रहकर दयावान प्रभु के ध्यान में उनकी निस्सीम कृपा की प्राप्ति के लिए निष्कपट हृदय से प्रयासरत रहना होगा।

सच कहूं तो करुणा युक्त दया की प्रतिबद्धता के साथ मैंने भी निज जीवन में तमाम प्रकार की मध्यमवर्गीय उत्कृष्टता को प्राप्त किया है। परंतु किसी प्रकार के सुख भोग का सवाल ही पैदा नहीं होता। इसलिए प्रश्न है कि, मैंने अपने पद की आशा और आभा अमृत स्वयं में या परिवार में आने दिया, जिससे बहुत कुछ पाकर भी ऐसा कुछ नहीं पाया जिससे मुझे या मेरे परिवार को अहं हो जाए। मैंने ऐसा कुछ नहीं किया जिससे मैं और मेरे बच्चे किसी अहं और अभिमान का शिकार हो जाएँ। ऐसा इसलिए कि मैं जीवन जीने की कला जानता हूँ, इसलिए श्रम आधारित फल पर जीने का प्रयास और रियाज करता हूँ। इससे मुझे सपरिवार असीम शांति व सद्प्रेरणा मिलती है जो स्वर्ग में प्रवेश का परिचायक है। इसलिए भगवान का आभारी हूँ।

यशोगोपाल रिसॉर्ट्स में हुआ नवनिर्मित फ्रंट ऑफिस का शुभारंभ

सुनील कुमार महला

हाल ही में बुधवार 30 जुलाई 2025 को नासा (अमेरिका) और भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी इसरो (भारत) के संयुक्त तत्वावधान में विश्व का सबसे महंगा और अत्याधुनिक उपग्रह 'निसार', जो कि एक 'लो अर्थ ऑर्बिट (एलईओ) सैटेलाइट' है, को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से शाम 5:40 बजे प्रक्षेपित करके, जो कि 2,392-2800 किलो वज़नी (एसयूवी के आकार का) है, को नासा-इसरो द्वारा सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में स्थापित किया गया है। वास्तव में, यह अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत और अमेरिका की एक बड़ी और संयुक्त सफलता मानी जा रही है। पाठकों को बताता चलूं कि नासा-इसरो सिंथेटिक एपर्चर राडार या 'निसार मिशन' दोहरी आवृत्ति (डबल फ्रीक्वेंसी) वाले सिंथेटिक एपर्चर रडार उपग्रह को विकसित करने और लॉन्च करने के लिए नासा और इसरो के बीच एक संयुक्त परियोजना (ज्वाइंट प्रोजेक्ट) है। 'निसार' का पूरा नाम-'नासा-इसरो सिंथेटिक अपर्चर रडार' है।13,000 करोड़ रुपये (1.5 बिलियन डॉलर) की लागत वाले इस मिशन में इसरो का योगदान 788 करोड़ रुपये है। ग़ौरतलब है कि 'निसार मिशन' एक्सिअम-4 मिशन के तुरंत बाद लॉन्च किया गया है, जिसमें पहली बार कोई भारतीय अंतरिक्ष यात्री अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन गया था। इसे जीएसएलवी-एस16 रॉकेट के ज़रिए लॉन्च किया गया है। इस मिशन की अवधि की यदि हम यहां बात करें तो इसकी अवधि 3 साल है, लेकिन ईंधन और स्थिरता के आधार पर यह 5 साल तक भी चल सकता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यदि हम यहां 'निसार' की डेटा मात्रा की बात करें तो, हर दिन 80 टेराबाइट डेटा, यानी 150 हार्ड ड्राइव (512 जीबी) जितनी इसकी डेटा क्षमता है। इसमें जो एंटीना लगा है वह 12 मीटर का तारों का मेश एंटीना है, जिसे 'नासा' के जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी (जेपीएल) ने बनाया है। उल्लेखनीय है कि यह 'नासा' द्वारा किसी उपग्रह के लिए बनाया गया, अब तक का सबसे बड़ा/विशालकाय एंटीना है। जानकारी के अनुसार यह लॉन्च के बाद खुलता है और रडार सिग्नल भेजने-प्राप्त करने में मदद करता है।और यदि हम इसकी (निसार) पावर की बात करें तो इसमें पावर 6,500 वाट बिजली है, जो कि इसे बड़े सोलर पैनल से मिलेगी। 'निसार' उपग्रह में इस्तेमाल होने वाली स्वीप-एसएआर तकनीक, इसे एक साथ बड़े क्षेत्र को हाई-रिज़ॉल्यूशन में स्कैन करने की ताकत देती है।यह रडार सिग्नल भेजता है और उनके वापस आने पर तस्वीरें बनाता है।उपलब्ध जानकारी के अनुसार 'निसार' उपग्रह नीले ग्रह धरती की हर हलचल पर बाज जैसी तीक्ष्ण और पैनी नज़र रखेगा और इसका फायदा समस्त मानवजाति को मिलेगा। गौरतलब है कि 'निसार मिशन' पृथ्वी का 'एमआरआई स्कैनर' है, जो भूकंप, सुनामी, भूस्खलन और बाढ़ जैसी विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं की पहले से ही चेतावनी दे देगा। यह सैटेलाइट (उपग्रह) दोहरे रडार सिस्टम, हर मौसम में काम करने की क्षमता, और सेंटीमीटर स्तर की सटीकता के साथ पृथ्वी की सतह को स्कैन करेगा। यह धरती की सतह की इतनी बारीक तस्वीरें ले सकता है कि सेंटीमीटर तक के छोटे से छोटे बदलाव भी आसानी के साथ पकड़ लेता है। दूसरे शब्दों में कहें तो 'निसार' एक सेंटीमीटर के दायरे की सटीक फोटो खींचने और उसे धरती पर भेजने में सक्षम है। वास्तव में, यह पृथ्वी पर भूमि और बर्फ का 3डी व्यू मुहैया कराएगा। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह दुनिया का पहला ऐसा सैटेलाइट है जो दोहरी रडार फ्रीक्वेंसी (नासा का एल-बैंड और इसरो का एस-बैंड) का इस्तेमाल करके पृथ्वी की सतह (धरातल) को स्कैन करेगा।नासा का एल-बैंड (24 सेमी तरंगदैर्ध्य) घने जंगल, बर्फ और मिट्टी के नीचे की गतिविधियों जैसे भूकंप और ज्वालामुखी का आसानी से पता लगा सकता है। वहीं दूसरी ओर, इसरो का एस-बैंड सतह की छोटी-छोटी चीजों, जैसे फसलों की संरचना, बर्फ की परतें और मिट्टी की नमी आदि को मापने में माहिर है। वास्तव में, ये दोनों रडार (एल और एस बैंड) मिलकर 5-10 मीटर की सटीकता के साथ तस्वीरें लेते हैं और 242 किमी चौड़े क्षेत्र को कवर करते हैं। पाठकों को बताता चलूं कि जहां पर एक आम सैटेलाइट ऑप्टिकल कैमरों से लैस होता है, तथा वह घने बादलों और रात के समय में तस्वीरें लेने या यूं कहें कि काम करने में सक्षम नहीं होता है, वहीं 'निसार' के रडार किसी भी मौसम में, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बादलों, धुएं और जंगलों आदि को भेदकर दिन-रात कभी भी काम कर सकने की अभूतपूर्व क्षमताएं रखतें हैं। जानकारी के अनुसार 'निसार' सैटेलाइट हर 12 दिन में पृथ्वी और बर्फीली सतह को स्कैन करेगा, और औसतन हर 6 दिन में डेटा उपलब्ध कराएगा। यह सूर्य-समकालिक कक्षा (747 किमी ऊंचाई, 98.4 झुकाव) में रहेगा, जिससे इसे लगातार रोशनी मिलेगी और यह ठीक से काम करता रहेगा। दूसरे शब्दों में कहें तो, इस 'लो अर्थ ऑर्बिट सैटेलाइट' (निसार) को पृथ्वी से 747 किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थापित किया जाएगा। यह सैटेलाइट 'सन-सिंक्रोनस पोलर ऑर्बिट' में भेजा गया है, यानी यह पृथ्वी के एक ही हिस्से से नियमित अंतराल पर गुज़रेगा, जिससे वह सतह पर होने वाले बदलावों को देख सकेगा और उसकी मैपिंग कर सकेगा। यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि इसके (निसार सैटेलाइट) दोहरे रडार, इसके हर मौसम में काम करने की क्षमता और मुफ्त डेटा नीति इसे अनोखा बनाती है।सच तो यह है कि भारत के लिए यह आपदा प्रबंधन, कृषि और जल प्रबंधन में गेम-चेंजर साबित होगा। दरअसल,यह सैटेलाइट (निसार) सटीकता से धरती की सतह पर जमी बर्फ़ से लेकर उसके ज़मीनी हिस्से, ईकोसिस्टम में बदलाव, समंदर के जलस्तर में बदलाव और ग्राउंड वाटर लेवल से जुड़े आंकड़े जमा करेगा। यह बाढ़ नदियों के जलस्तर को मापकर बाढ़ का समय पर अलर्ट देगा और धरती पर आने वाले तूफानों की भी मानिटरिंग करेगा। इतना ही नहीं,यह जलवायु परिवर्तन, कृषि और जंगल के साथ ही साथ तटीय निगरानी, और बुनियादी इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे कि बांधों, पुलों, और अन्य ढांचों पर भी अपनी पैनी नज़र रखेगा और जानकारी उपलब्ध कराएगा। पाठक जानते होंगे कि हाल ही में 30 जुलाई 2025 को ही रूस के कामचटका प्रायद्वीप के पास ओखोट्स्क सागर में 8.8 तीव्रता का भूकंप आया था, जिसने 12 देशों—रूस, जापान, हवाई, कैलिफोर्निया, अलास्का, सोलोमन द्वीप, चिली, इक्वाडोर, पेरू, फिलीपींस, गुआम और न्यूजीलैंड में सुनामी का खतरा पैदा किया। इस भूकंप की ताकत हिरोशिमा जैसे 9,000-14,000 परमाणु बमों के बराबर थी। कुरील द्वीपों में 5 मीटर ऊंची लहरें आईं। फुकुशिमा, जापान में लोग 2011 की सुनामी की याद से आज भी खौफ खाते हैं। वास्तव में, मनुष्य को ऐसी आपदाओं की पहले से खबर मिलना बहुत जरूरी है, ताकि आपदाओं का पहले से ही प्रबंधन किया जा सके और जान-माल की सुरक्षा की जा सके। यही काम अब अमेरिका और भारत का 'निसार' सैटेलाइट करेगा। प्राकृतिक भूकंप और सुनामी जैसी आपदाओं की संभावना के पूर्व अनुमान से आपदा प्रबंधन को तेज और सटीक बनाया जा सकता है, जिससे जान-माल का नुकसान कम हो सकेगा। दूसरे शब्दों में कहें तो, इसरो और नासा के संयुक्त मिशन से मिले आंकड़े न सिर्फ़ इन दोनों देशों बल्कि पूरी दुनिया को आपदाओं से निपटने और तैयारी करने में मदद करेंगे। हाल फिलहाल, यही कहूंगा कि उपग्रह 'निसार' (नासा इसरो सिंथेटिक अपर्चर राडार) के सफल प्रक्षेपण के साथ ही दुनिया की दो अंतरिक्ष महाशक्तियों इसरो और नासा के बीच संयुक्त अंतरिक्ष अन्वेषण के एक नए युग का आरंभ हुआ है। कहना चाहूंगा कि 'निसार' के प्रक्षेपण के साथ ही इसरो और नासा ने अंतरिक्ष क्षेत्र में परस्पर सहयोग की एक मजबूत नींव रखी है। वास्तव में, अंतरिक्ष अन्वेषण में अंतरराष्ट्रीय सहयोग कई मायनों में लाभदायक है। पाठकों को बताता चलूं कि इसरो-नासा संबंधों की शुरुआत चंद्रयान-1 मिशन से हुई थी। चंद्रयान-1 मिशन में हम नासा के दो पेलोड ले गए थे, जिसके परिणाम बेहद सफल रहे थे। एक प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक में छपी एक खबर के अनुसार, 'नासा के पास जेपीएल जैसी कई प्रयोगशालाएं हैं। ये प्रयोगशालाएं स्वतंत्र रूप से काम करती है। इन्हें खुद ही परियोजनाओं का प्रस्ताव रखने और जरूरत पड़ने पर अंतरराष्ट्रीय साझेदार चुनने की आजादी है।' यहां पाठकों को बताता चलूं कि जेपीएल का मतलब जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी है, जो कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (कैल्टेक) द्वारा संचालित एक अमेरिकी संघीय अनुसंधान और विकास केंद्र है। यह नासा के लिए एक प्रमुख केंद्र है, जो रोबोटिक अंतरिक्ष अन्वेषण, ग्रहों की खोज, और पृथ्वी विज्ञान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत, भविष्य में अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने की योजना बना रहा है। ऐसे समय में नासा के साथ सहयोग भारत के अंतरिक्ष स्टेशन में साझेदारी का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

मानव सेवा संस्थान ने लगाया निःशुल्क कैंप, 152 लोगों ने करवाई स्वास्थ्य की जांच

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: दिल्ली के रोहिणी सैक्टर-3 स्थित जैन मंदिर में मानव सेवा संस्थान के द्वारा फ्री हेल्थ चैकअप कैंप लगाया गया। शिविर में शालीमार बाग मैक्स अस्पताल के डॉक्टरों ने आये हुए मरीजों के स्वास्थ्य की जांच की। इस शिविर में बीपी, शुगर, आंखों की जांच, दांतों की जांच के अलावा कई प्रकार की जांच की गई।

मानव सेवा संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजेन्द्र यादव ने जानकारी देते हुए बताया कि इस कैंप में लगभग 152 लोगों के स्वास्थ्य की जांच की गई और उन्हें चश्मे और दवाईयो का फ्री वितरण किया गया। इस मौके पर मानव सेवा संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजेंद्र यादव, चेतन अग्रवाल, डॉ बजाज, जितेन्द्र सैनी, नरेश सैनी के अलावा कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। इस मौके पर चेतन अग्रवाल ने कहा कि इस प्रकार के शिविर सभी को आयोजित करने चाहिए, ऐसे शिविरों से लोगों को स्वास्थ्य की सेवाएं उनके घर के समीप ही मिल जाती है, इसलिए सभी को ऐसे शिविर आयोजित करने चाहिए। शिविर में आये हुए लोगों ने आयोजको के कार्यो की सराहना की।

कानपुर में अतिक्रमण का खेल मतलब पहले कराते, फिर हटवाते, इसलिए परेशान गरीब

सुनील बाजपेई

कानपुर। कहीं भी हो और किसी भी रूप में हो अतिक्रमण साधन संपन्न अमीरों का नहीं बल्कि उन गरीबों की मजबूरी ज्यादा है, जो आज भी रोटी कपड़ा और मकान जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। कानपुर में भी इस तरह की अतिक्रमण की भरमार है। इस आक्रमण का खेल भी कम दिलचस्प नहीं। यह पहले रिश्वत लेकर लगवाया जाता है और फिरकुर्सी बचाने के लिए हटवाया भी जाता है, जिसको लेकर सबसे ज्यादा हताशा, निराशा और परेशानी का शिकार अधिकांश मध्यम वर्गीय गरीब लोग ही होते हैं। ऐसा ही कुछ आज शुक्रवार को होता नजर आया। आज यहां कई क्षेत्रों में अतिक्रमण हटाया गया इसमें जो लोग प्रभावित हुए उनमें मध्य वर्गीय गरीब लोगों की भी संख्या ज्यादा है, जो छोटी-मोटी दुकान आदि लगाकर अपने परिवार का गुजारा करते हैं।

अतिक्रमण के खिलाफ नगर निगम ने पुलिस के साथ मिलकर कई इलाकों में जो अभियान चलाया। उसमें कई सड़कों से अवैध कब्जे हटाए गए। इस दौरान, बुलडोजर और नगर निगम के अन्य वाहनों के पहुंचने से पहले ही दुकानदारों ने अपना सामान और काउंटर अंदर रखवा लिया था।

इस अभियान के तहत बड़ा चौराहा से कचहरी तक हरजेन्दर नगर से लाल बंगला तक, किदवई नगर चौराहा से शनि मंदिर तक, कंपनी बाग से कर्बला तक, वीरेंद्र स्वरूप स्कूल (गोविंद नगर), गोल चौराहा से गीता नगर क्रॉसिंग तक आदि इलाकों में कार्रवाई की गई। नगर निगम की इस कार्रवाई पर स्थानीय लोगों ने गुस्सा भी दिखाई पड़ा। उनके मुताबिक इस तरह की अभियानों से सबसे ज्यादा रोजी-रोटी गरीबों के ही प्रभावित होती है। नाम न छापने की शर्त पर कई दुकानदारों द्वारा दी गई जानकारी के मुताबिक इस तरह का आक्रमण पुलिस वाले ही पैसे लेकर कराते हैं लेकिन उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं होती जबकि उनकी दुकानों आदि को अतिक्रमण बताकर हटा दिया जाता है, जिससे उनके सामने जो भी रोटी की समस्या पैदा होती रहती है।

दुनियाँ की सबसे तेज़ गति से बढ़ने वाली भारतीय अर्थव्यवस्था को डेड कहना क्या ट्रंप की ट्रेड डील की पैतरेबाज़ी है?

ट्रंप की टैरिफ दबाव नीति क़े आगे भारत झुकेगा नहीं – संसद में वाणिज्यमंत्री की हुंकार राष्ट्रहित सर्वोपरि

विश्वबैंक आईएमएफ सहित दुनियाँ की दिग्गज रेटिंग एजेंसियों की रिपोर्ट में भारत विश्व की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है, फिर भी ट्रंप द्वारा मृत अर्थव्यवस्था करार देना सरासर अनुचित

– एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर विश्वबैंक आईएमएफ सहित अनेक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय एजेंसीयों ने हर बार अपनी रिपोर्ट्स में भारत को विश्व की सबसे अधिक उभरती हुई अर्थव्यवस्था बताया है, तथा भारत की आंतरिक एजेंसियां भी हर बार सकारात्मक भारत की रिपोर्टिंग देती है।अभी पासपोर्ट सूचकांक में भी भारत ने छलांग लगाई है, परंतु फिर भी अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा भारत पर 25 पेर्सेंट टैरिफ़ प्लस पेनल्टी टैरिफ को 1 अगस्त 2025 से लागू कर देने के बावजूद बयान देना कि भारत व सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था दोनों मिलकर अपनी डेड इकोनॉमी की ओर नीचे गिर सकते हैं। इस तरह का बयान सोचनीय है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि, चूँकि भारत किसी भी बात पर अमेरिका के टैरिफ पैतरेबाजी से डील में उनकी मर्जी से फिट नहीं हो रहा है, तथा अन्य बड़े-बड़े देशों के उनके सामने झुकने के बावजूद भारत किसी अड्सट्टे में नहीं आ रहा है, और ना ही, किसी टैरिफ धमकी के दबाव में आ रहा है, बल्कि दो कदम आगे बढ़कर दिनांक 31 जुलाई 2025 को देर शाम तक चली ससंद कार्यवाही में वाणिज्य मंत्री महोदय ने साफ-साफ कह दिया कि उनके लिए राष्ट्रहित सर्वोपरि है, हम उसको ध्यान में रखते हुए निर्णय लेंगे। बता दें वैसे भी भारत अमेरिका से कम समान बुलाता है, तथा भेजता अधिक है, तो उन सेक्टर में जैसे फार्मा, प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक, कृषि सहित कुछ क्षेत्रों पर फर्क पड़ने की संभावना जरूर है, परंतु इन क्षेत्रों को सपोर्ट करने भारत की कुछ नीतियां रणनीतियां बनाने पर शायद कार्य शुरू हो चुका होगा। परंतु संसद परिसर में 31 जुलाई 2025 को ही विपक्ष के नेता का बयान देकर ट्रंप द्वारा कहे गए शब्दों क़ा सपोर्ट करते देखे गए जो उचित नहीं है, क्योंकि फैक्ट्स बता रहे हैं कि 2014 में इकोनॉमी 11वे नंबर से 2025 में चौथे नंबर तक पहुंच चुकी है।जीडीपी 2024- 25 में 6.5 पेर्सेंट यूपीडी ट्रांजेक्शन 17200 करोड़ और महंगाई पर 2004-2014 में 8.2 पेर्सेंट से 2015-2025 में 5 पेर्सेंट तक लाना यह आंकड़े दिखा रहे हैं कि वाकई विश्व बैंक तथा आईएमएफ का आंकलन सही है, वाकई यह बयान एक डील की पैतरेबाजी हो सकती है। परंतु भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ चुका है, व अमेरिका की दबाव नीति में आने की संभावना कम है,इसलिए आज हममीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, ट्रंप की टैरिफ दबाव नीति से भारत झुकेगा नहीं, संसद में वाणिज्यमंत्री की हुंकार राष्ट्र हित सर्वोपरि।

साथियों बात अगर हम ट्रंप द्वारा भारतीय इकोनॉमी को डेड कहना व इसके एनकाउंटर में हमारे तथ्यों की करें तो, ट्रंप का यह पोस्ट भारत पर 25 फीसदी टैरिफ ऐलान के बाद आया है। ट्रंप ने अपनी पोस्ट में लिखा, 'मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि भारत रूस के साथ क्या-क्या करता है, लेकिन वे दोनों मिलकर अपनी 'डेड इकोनॉमी' को और नीचे गिरा सकते हैं। अमेरिकी एक्सपर्ट डेलरिम्पल ने गुरुवार को कहा कि वास्तव में भारत की अर्थव्यवस्था 'डेड' होने से कोसों दूर है, बल्कि पिछले साल अमेरिका की तुलना में दोगुनी तेजी से बढ़ी है और इस साल अमेरिका की तुलना में तीन गुना तेजी से बढ़ने का अनुमान है, इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड के नए वर्ल्ड इकोनॉमिक आंकड़ा डेलरिम्पल की बातों को सपोर्ट करता है।आईएमफ के मुताबिक, भारत की अर्थव्यवस्था 2025 और 2026 दोनों में 6.4 पेर्सेंट की दर से बढ़ने का अनुमान है, जबकि अमेरिका की इकोनॉमी ग्रोथ 1.9 पेर्सेंट और 2 पेर्सेंट रहने का अनुमान है। कैलेंडर वर्ष के दौरान भारत के 2025 में 6.7 पेर्सेंट की ग्रोथ होने का अनुमान है। आईएमफ के अनुसंधान विभाग के प्रमुख डेनिज इगन ने हाल ही में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि वास्तव में हमारी ग्रोथ दर काफी स्थिर है। संशोधित भारतीय अनुमानों में अप्रैल के अपडेट की तुलना में 2025 के लिए 0.2 प्रतिशत अंकों की ग्रोथ और 2026 के लिए 0.1 प्रतिशत अंकों की ग्रोथ दर्ज की गई है। इसके विपरीत ग्लोबल अर्थव्यवस्था के 2025 के दौरान 3 पेर्सेंट की रेट से बढ़ने का अनुमान है, जबकि अमेरिका समेत विकसित अर्थव्यवस्थाओं की ग्रोथ रेट 2 फीसदी से नीचे रहने का अनुमान है, चीन की ग्रोथ रेट 4.8 फीसदी रहने का अनुमान है। गौरतलब है कि बुधवार को ट्रंप ने भारत से आयात पर आने वाली सभी वस्तुओ पर 25 पर्सेंट टैरिफ लगाने की घोषणा की थी, साथ ही रूसी कच्चे तेल और सैन्य उपकरणों की खरीद पर नराजगी जाहिर करते हुए जुर्माना लागने की बात कही, ट्रंप ने कहा, 'भारत में किसी भी देश की तुलना में सबसे कठोर और अप्रिय गैर-मौद्रिक व्यापार अवरोध हैं.' उन्होंने भारत के टैरिफ को दुनियाँ में सबसे ज्यादा बताया है।

साथियों बात अगर हम टैरिफ़ व डेड इकोनामी का मुद्दा 31 जुलाई 2025 को संसद में उठने व वाणिज्य मंत्री द्वारा देर शाम इसपर जवाब देने की करें तो, अमेरिका की ओर से भारत पर लगाए गए 25 फीसदी टैरिफ का मुद्दा गुरुवार को संसद में उठा, लोकसभा में हंगामे के बीच वाणिज्य मंत्री ने सदन से अमेरिका को जवाब दिया, उन्होंने कहा कि भारतीय वस्तुओं पर अमेरिकी टैरिफ के असर पर सरकार नजर रखे हुए है, किसानों, श्रमिकों, उद्यमियों, निर्यातकों समेत उद्योग जगत के सभी हितधारकों के कल्याण पर सरकार की नजर है, इसके लिए जो भी जरूरी होगा, कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि भारत मात्र एक दशक से भी कम समय में दुनिया की सबसे तेजी बढ़ती अर्थव्यवस्था बन गया है। हम अपने रिफॉर्म, किसानों, एमएसएमई और उद्यमियों की कड़ी मेहनत से 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से टॉप-5 में आ गए हैं, हम कुछ ही सालों में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएंगे, आज अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं और अर्थशास्त्री भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक ब्राइट स्पॉट के रूप में देखते हैं। भारत वैश्विक विकास में लगभग 16 पर्सेंट का विकास दे रहा है।उन्होंने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति ने 2 अप्रैल 2025 को पारस्परिक टैरिफ पर एक एग्जिक्यूटिव ऑर्डर जारी किया था, इसमें व्यापारिक साझेदारों से आयात पर 10 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक एडिशनल ड्यूटी लगाने की बात कही गई थी, 10 पर्सेंट की बेसलाइन ड्यूटी 5 अप्रैल 2025 से लागू हो गई। भारत पर कुल 26 पर्सेंट टैरिफ की घोषणा की गई थी।यह टैरिफ 9 अप्रैल से प्रभावी होना था, लेकिन 10 अप्रैल को इसे 90 दिनों के लिए स्थगित कर दिया गया, बाद में ये स्थगन 1 अगस्त 2025 तक बढ़ा दिया गया। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति ने जो टैरिफ की घोषणा की है, सरकार उसके असर का परीक्षण कर रही है, वाणिज्य मंत्रालय सभी स्टेकहोल्डर्स से बात करके इसके असर का आकलन कर रहा है। सरकार सभी पक्षों के कल्याण को सर्वोच्च महत्व देती है। राष्ट्रीय हित को आगे बढ़ाने के लिए हम आवश्यक कदम उठाएंगे। उन्होंने बताया कि भारत और अमेरिका ने मार्च 2025 में एक न्यायपूर्ण, संतुलित और पारस्परिक रूप से लाभकारी द्विपक्षीय व्यापार समझौते बीटीए के लिए बातचीत शुरू की थी, इसका टारगेट अक्टूबर- नवंबर 2025 से समझौते के पहले चरण को पूरा करना था। उन्होंने कहा कि दोनों पक्षों ने 29 मार्च 2025 को दिल्ली में आयोजित पहली मीटिंग के दौरान द्विपक्षीय समझौते की बातचीत को अंतिम रूप दिया था, उन्होंने बताया कि नई दिल्ली और वॉशिंगटन में दोनों पक्षों के बीच चार दौर की बैठक हो चुकी हैं, दोनों पक्षों के बीच कई वर्चुअल बैठकें भी हो चुकी हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि दुनियाँ की सबसे तेज़ गति से बढ़ने वाली भारतीय अर्थव्यवस्था को डेड कहना क्या ट्रंप की ट्रेड डील की पैतरेबाज़ी है? ट्रंप की टैरिफ दबाव नीति क़े आगे भारत झुकेगा नहीं- संसद में वाणिज्य मंत्री की हुंकार राष्ट्रहित सर्वोपरि विश्वबैंक आईएमएफ सहित दुनियाँ की दिग्गज रेटिंग एजेंसियों की रिपोर्ट में भारत विश्व की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है, फिर भी ट्रंप द्वारा मृत अर्थव्यवस्था करार देना सरासर अनुचित है।

नए लुक में वोल्वो XC60 फेसलिफ्ट लॉन्च, माइल्ड हाइब्रिड सिस्टम समेत 'एडवांस्ड ड्राइवर-असिस्टेंस सिस्टम' सूट जैसे फीचर्स है लैस

वोल्वो कार इंडिया ने अपनी लोकप्रिय SUV Volvo XC60 का नया फेसलिफ्ट लॉन्च किया है। तीन साल बाद आए इस अपडेट में डिजाइन और फीचर्स में बदलाव किए गए हैं। मैकेनिकल रूप से कोई बदलाव नहीं है लेकिन एक्सटीरियर में नया ग्रिल और इंटीरियर में 11.2 इंच का टचस्क्रीन है। 2-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन और 8-स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन दिया गया है। सुरक्षा के लिए ADAS और कई एयरबैग्स हैं।

नई दिल्ली। वोल्वो कार इंडिया ने अपनी पॉपुलर SUV, Volvo XC60 का दूसरा फेसलिफ्ट लॉन्च किया है। इसे नया फेसलिफ्ट तीन साल के बाद दिया गया है। वहीं, इसे ग्लोबल बाजार में लॉन्च करने के 5 महीने बाद भारतीय बाजार में लॉन्च किया गया है। इसमें किसी तरह का मैकेनिकली बदलाव नहीं किया गया है, लेकिन डिजाइन और फीचर्स में हल्के बदलाव किए गए हैं। आइए 2025 Volvo XC60 facelift के बारे में विस्तार में जानते हैं कि इसे किन नए फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है?

2025 Volvo XC60 facelift

इसके बाहरी हिस्से में हल्के बदलाव किए गए हैं, लेकिन सिल्हूट पहले की तरह ही रखा गया है। यह पिछले मॉडल जैसा काफी हद तक दिखाई देती है। इसमें नया डायगोनल-स्लैट ग्रिल और फिर से डिजाइन किए गए अलॉय व्हील दिए गए हैं। इसके टेल लाइट में किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया है, लेकिन इन्हें स्मोक्ड आउट कर दिया गया है।

इसे क्रिस्टल व्हाइट, ओनिक्स ब्लैक, डेनिम ब्लू, ब्राइट डस्क और वेपर ग्रे कलर ऑप्शन के अलावा दो नए कलर फॉरेस्ट लेक और मलबेरी रेड में पेश किया गया है। इसमें दिए जाने वाले प्लेटिनम ग्रे को बंद कर दिया गया है।

इंटीरियर और फीचर्स

2025 Volvo XC60 facelift के इंटीरियर में काफी बदलाव किया गया है। इसमें फ्रीस्टैंडिंग 11.2-इंच टचस्क्रीन दी गई है। इसमें पहले से बेहतर इमेज क्वालिटी है, बल्कि यह दोगुने तेज क्वालकॉम स्नैपड्रैगन चिपसेट के साथ आती है। ऑडियो के लिए 15 स्पीकर वाला 1410W-बोवर्स और विल्किंस सिस्टम दिया गया है। इसके साथ ही 12.3-इंच का ड्राइवर डिस्प्ले, डैशबोर्ड में वुड इनलेज, मसाजिंग फ्रंट सीटें और नप्पा लेदर अपहोल्स्ट्री भी मिलती है।

नई Volvo XC60 के सेफ्टी फीचर्स

2025 Volvo XC60 facelift में पैसेंजर की सेफ्टी के लिए कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें ADAS सूट के क्रॉस-ट्रैफिक अलर्ट विद ऑटोब्रेक, ब्लाइंड स्पॉट मॉनिटरिंग, एडेप्टिव क्रूज़ कंट्रोल और लेन व पायलट असिस्ट जैसे फीचर्स दिए गए हैं। इसके साथ ही मल्टीपल एयरबैग और EBD के साथ ABS जैसी सुविधाएं मिलती है।

नई Volvo XC60 का इंजन

2025 Volvo XC60 facelift के तौर पर इसके हुड में किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। इसमें पहले की तरह ही 2-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन का कॉम्बिनेशन दिया गया है। इसका इंजन 250hp की पावर और 360Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके सभी पहियों तक पावर पहुंचाने के लिए 8-स्पीड टॉर्क कनवर्टर यूनिट दिया गया है। इसमें 48V की माइल्ड हाइब्रिड बैटरी भी मिलती है जो इंजन को सपोर्ट करती है, जिससे माइलेज और एक्सेलरेशन बेहतर होता है।

कितनी है कीमत?

2025 Volvo XC60 facelift को भारतीय बाजार में 71.90 लाख रुपये की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला Mercedes GLC, BMW X3 और Audi Q5 जैसी गाड़ियों से देखने के लिए मिलेगा।

टेस्ला का पहला सुपरचार्जर 4 अगस्त को होगा लॉन्च, केवल 15 मिनट में इलेक्ट्रिक कार होगी चार्ज

टेस्ला भारत में 4 अगस्त 2025 को मुंबई के बीकेसी में अपना पहला सुपरचार्जर स्टेशन खोलने जा रही है। इस स्टेशन पर चार V4 सुपरचार्जिंग स्टॉल और चार डेस्टिनेशन चार्जिंग स्टॉल होंगे। यहाँ 250 kW की अधिकतम चार्जिंग स्पीड मिलेगी जिसके लिए 24 रुपये प्रति kW का भुगतान करना होगा। टेस्ला मॉडल Y को यहाँ 15 मिनट चार्ज करने पर 267 किमी तक की रेंज मिलेगी।

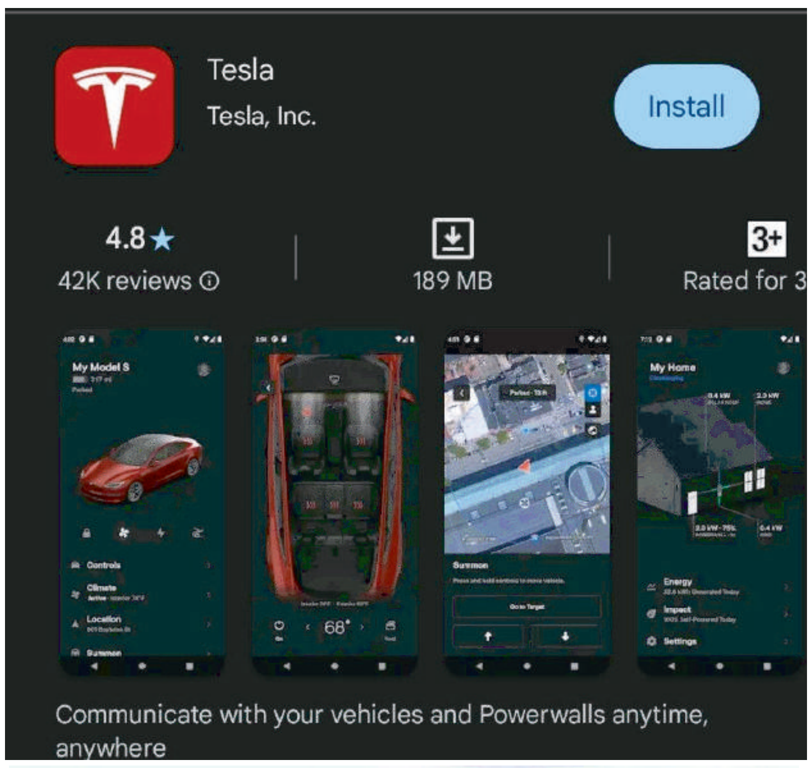

नई दिल्ली। दुनियाभर में अपनी इलेक्ट्रिक कारों के लिए पॉपुलर Tesla ने हाल ही में भारत में अपनी पहली इलेक्ट्रिक कार Tesla Model Y को लॉन्च करने के साथ ही पहला शोरूम भी खोला है। अब कंपनी ने देश में अपना पहला अपना पहला सुपरचार्जर लॉन्च करने जा रही है। यह चार्जिंग स्टेशन 4 अगस्त 2025 को मुंबई के BKC खोलेगी।

Tesla चार्जिंग स्टेशन की खासियत

मुंबई में टेस्ला चार्जिंग स्टेशन में चार V4 सुपरचार्जिंग स्टॉल (DC चार्जर) खोलेगी। इसके साथ ही यहां पर चार डेस्टिनेशन चार्जिंग स्टॉल (AC चार्जर) भी होंगे। यहां पर कार को चार्ज करने पर 24 रुपये प्रति kW की कीमत पर 250 kW की अधिकतम चार्जिंग स्पीड मिलेगी। वहीं, 11 kW चार्जिंग गति के लिए 11 रुपये प्रति kW का भुगतान करना पड़ेगा।

इस चार्जर का इस्तेमाल करते भारत में हाल ही में लॉन्च हुई Tesla Model Y को केवल 15 मिनट चार्जिंग में 267 किमी तक की रेंज मिलेगी। इसको लेकर कंपनी की तरफ से कहना है कि यह छत्रपति शिवाजी महाराज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे और गेटवे ऑफ इंडिया के बीच पांच वापसी पैसेंजर्स के लिए पर्याप्त है।

चार्जिंग का इस्तेमाल कैसे करें?

टेस्ला चार्जर का इस्तेमाल करने के लिए स्ला इलेक्ट्रिक वाहनों के मालिकों को अपने वाहनों को प्लग इन करना होगा। इसकी उपलब्धता को देखने के लिए ग्राहक टेस्ला ऐप का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस एप्लिकेशन का इस्तेमाल चार्जिंग

प्रगति की निगरानी करने, चार्ज करते समय सूचनाएं प्राप्त करने और चार्जिंग के लिए भुगतान करने के लिए भी किया जा सकता है।

Tesla Model Y के फीचर्स

टेस्ला मॉडल Y भारत में RWD (रियर-व्हील ड्राइव) और लॉन्ग-रेंज RWD दोनों ऑप्शन के साथ लॉन्च किया गया है। RWD मॉडल की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 59.89 लाख रुपये है, जबकि लॉन्ग-रेंज वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 67.89 लाख रुपये है। RWD मॉडल की ऑन-रॉड कीमत 61.07 लाख रुपये, जबकि लॉन्ग-रेंज वेरिएंट की ऑन-रोड कीमत 69.15 लाख रुपये है।

टेस्ला मॉडल Y के रियर-व्हील ड्राइव वेरिएंट को 60 kWh बैटरी या बड़ी 75 kWh बैटरी पैक के साथ खरीदा जा सकता है। इस RWD मॉडल में एक सिंगल इलेक्ट्रिक मोटर है जो लगभग 295 hp की पावर जरनेट करती है। इसके अलावा, 60 kWh बैटरी की WLTP रेंज पूरी तरह चार्ज होने पर 500 किमी होने का दावा किया गया है, जबकि लॉन्ग-रेंज संस्करण 622 किमी की रेंज दे सकती है।

महिंद्रा विजन एक्स का नया टीजर आया, 15 अगस्त को भारत में होगी पेश

महिंद्रा 15 अगस्त को अपनी चार नई गाड़ियाँ पेश करने वाली है जिसके पहले कंपनी ने टीजर जारी किए हैं। हाल ही में Mahindra Vision X का टीजर जारी किया गया है जिसमें इसके रियल लुक की झलक दिखती है। गाड़ी में स्मूथ डिजाइन कनेक्टेड टेल लैंप और Vision X लिखावट है। ये गाड़ियाँ Freedom_NU प्लेटफॉर्म पर बनेंगी जो ICE EV और हाइब्रिड वेरिएंट को सपोर्ट करेगा।

नई दिल्ली। महिंद्रा आने वाले 15 अगस्त को अपनी चार गाड़ियों को पेश करने वाली है। इन्हें पेश करने से पहले कंपनी ने इनके टीजर जारी किए हैं। आज कंपनी की तरफ से एक बार फिर Mahindra Vision X का एक टीजर जारी किया गया है। इस टीजर में इसके रियल लुक की झलक देखने के लिए मिली है। इससे पहले कंपनी Vision T, Vision S और Vision SXT के टीजर जारी कर चुकी है। आइए जानते हैं कि नए टीजर में क्या कुछ देखने के लिए मिला है।

टीजर में क्या दिखा नया?

Mahindra Vision X के नए टीजर में इसे टेलगेट की एक झलक देखने के लिए मिला है। इसमें एक काफी स्मूथ डिजाइन दिख रहा है, जिसमें कर्व्स और कन्टूर हैं। इसके अलावा, गाड़ी में एक कनेक्टेड टेल लैंप भी देखने के लिए मिला है, जिसे Vision X लिखावट से और निखारा गया है।

इसके पहले आए टीजर में इसके वोनट को दिखाया गया था, जिसमें कुछ लाइनों के साथ-साथ साइड प्रोफाइल को भी दिखाया गया था। इसके सामने का हिस्सा शार्प था, जिसमें व्हील आर्च पर प्लास्टिक क्लैडिंग और अलॉय व्हील्स का नया डिजाइन भी देखने के लिए मिला था।

नए प्लेटफॉर्म पर होगी बेस्ड

महिंद्रा की आने वाली चारों गाड़ियों को Freedom_NU प्लेटफॉर्म पर डेवलप किया गया है। यह नया प्लेटफॉर्म कंपनी की आने वाली गाड़ियों को समायोजित करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें इंटरनल कंबशन इंजन (ICE), इलेक्ट्रिक वाहन (EV) और हाइब्रिड वेरिएंट तक शामिल है। यह नया प्लेटफॉर्म पर इन कॉन्सेप्ट वाहनों के आखिरी प्रोडक्शन वर्जन को महिंद्रा के पुणे के चाकन स्थित प्लांट में बनाया जाएंगा।

कई मॉडल लाने की तैयारी में महिंद्रा

इन चारों गाड़ियों के साथ ही कंपनी देश में कई अपडेटेड मॉडल लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। इस लाइनअप में XUV700 का एक अपडेटेड वर्जन, साथ ही बोलेरो, BE rall-e, और अन्य नए मॉडल शामिल है। न वाहनों को भारतीय सड़कों पर कई बार टेस्ट करते हुए देखा गया है और ये मौजूदा संस्करणों की तुलना में एन्हांसमेंट दिखाएंगे।

सुधा ने हजारों जिंदगियां संवारी, अब सरकारी मदद की दरकार

निस्वार्थ सेवा की मिसाल बनी सुधा,हजारों महिलाओं को बना रहीं आत्मनिर्भर

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। सामाजिक सेवा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में जाना-पहचाना नाम बन चुकीं सुधा शर्मा आज अपने अथक प्रयासों से कई महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला रही हैं। समाजसेवी होने के साथ-साथ वे एक कुशल वोकेशनल ट्रेनर भी हैं, जो महिलाओं और युवतियों को सिलाई, मेहंदी, केक मेकिंग, टोकरी और झाड़ू बनाना जैसे व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बना रही हैं।

सुधा प्रवाह महिला सशक्तिकरण फाउंडेशन की संस्थापिका सुधा शर्मा बताती हैं, "मैंने देखा कि बहुत सी महिलाएं हुनर तो रखती हैं लेकिन उचित मार्गदर्शन और मंच के अभाव में वे घर की चारदीवारी तक सीमित रह जाती हैं। यही सोचकर मैंने निःशुल्क प्रशिक्षण शिविरों की शुरुआत की।" उनके इन प्रयासों से दर्जनों महिलाएं अब स्वयं का रोजगार शुरू कर चुकी हैं और अपने परिवार को आर्थिक सहयोग दे रही हैं।

सुधा की ट्रेनिंग विशेष रूप से ग्रामीण व शहरी गरीब वर्ग की महिलाओं के लिए होती है, जिसमें न केवल उन्हें व्यावसायिक कला सिखाई जाती है, बल्कि आत्मविश्वास और स्वाभिमान भी बढ़ाया जाता है। वे बताती हैं, "हम सिर्फ हुनर नहीं सिखाते, हम महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने की ताकत देते हैं।"

सुधा शर्मा की सबसे खास बात यह है कि वे व्यक्तिगत रूप से हर प्रशिक्षणार्थी की प्रगति पर ध्यान देती हैं। उनका सपना है कि हर महिला अपने पैरों पर खड़ी हो और किसी पर निर्भर न रहे। वे कहती हैं, "अगर एक महिला सशक्त होती है, तो पूरा परिवार और समाज मजबूत बनता है।" उनके कार्यों की सराहना कई सामाजिक संस्थाएं कर चुकी हैं और अब वे अन्य जिलों में भी अपने प्रशिक्षण केंद्र खोलने की योजना बना रही हैं। सचमुच, सुधा शर्मा जैसी महिलाएं समाज में बदलाव की मिसाल हैं।

सरकारी मदद की मोहताज़

सुधा शर्मा को इस बात का अफसोस है कि लगातार तीन वर्षों से समाजसेवा के क्षेत्र में सक्रियता निभाने के बावजूद सरकार की ओर से उन्हें कोई मदद नहीं मिली। अपने बूते पर सुधा बारह सौ महिलाओं को प्रशिक्षित कर आत्मनिर्भर बना चुकी हैं और ये महिलाएं अब अपने पैरों पर खड़ी हो चुकी हैं।

बिलहैत समुदायिक शौचालय में केयर टेकर होने के बावजूद भी गंदगी

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं: स्वच्छ भारत मिशन के चलते ग्राम पंचायत में शौचालयों की स्थापना कराई गई थी ताकि खुले मैदान में गंदगी न फैले तथा रोगों से भी निजात मिल सके, लेकिन सालारपुर विकास खण्ड की ग्राम पंचायत बिलहैत में बना सामुदायिक शौचालय खुद ही गंदगी की बीमारी से ग्रसित है। इस कारण ग्रामीण और फरियादी शौच के लिए बाहर जाने को मजबूर हैं। इस संबंध में जिम्मेदार अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों से कई बार शिकायत करने के बावजूद समस्या जस की तस बनी हुई है। सालारपुर विकास खंड में लगभग 77 ग्राम पंचायते हैं। इन सभी ग्राम सभाओं में स्वच्छ भारत मिशन अभियान के तहत घर-घर शौचालय बनवाए गए थे। इसको लेकर सरकार के सर्वे के बाद सालारपुर ब्लॉक को ओडीएफ का भी दर्जा मिल चुका है। शौचालयों के प्रयोग के लिए कई बार बैठकों तथा गांव में भी टीमों को भेजकर ग्रामीणों को जागरूक भी किया गया। विकास खंड परिसर में आने वाले फरियादियों के लिए लाखों रुपये की लागत से सावर्जनिक शौचालय का निर्माण कराया गया। क्षेत्र से आने वाले फरियादियों तथा ग्रामीणों को शौच लगने पर बाहर न जाना पड़ा, लेकिन यह सार्वजनिक शौचालय देखरेख तथा साफ-सफाई के अभाव में खुद गंदगी से बीमार पड़ा है। जबकि ग्राम सभाओं के लिए सामुदायिक शौचालय पर केयर टेकर भी तैनात किए गए। इसके बावजूद भी सार्वजनिक शौचालय की हालत बदतर है। ग्रामीण भी इस शौचालय की ओर जाने से भी कतराते रहते हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर्यावरण के लिए अच्छे से ज्यादा नुकसान कर सकता है।

विजय गर्ग

हाल के वर्षों में, एआई ने जटिल समस्याओं को हल करने के लिए विज्ञान, सामाजिक अध्ययन और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में भारी लोकप्रियता हासिल की है, बीमारियों के निदान से लेकर बाढ़ के पूर्वानुमान तक। जलवायु संकट को संबोधित करने में इसकी क्षमता भी प्रशंसनीय है - उदाहरण के लिए, पर्यावरण अनुसंधान की सहायता में, जिसने वनों की कटाई और मिट्टी के कटाव की मैपिंग में योगदान दिया है, साथ ही साथ सूखे और जंगल की आग का पूर्वानुमान लगाया है। कार्यकर्ता अब ग्लोबल फिशिंग वॉच का उपयोग कर रहे हैं, जो विशिष्ट क्षेत्रों में ओवरफिशिंग और अवैध मछली पकड़ने की पहचान करने के लिए मशीन-लर्निंग सॉफ्टवेयर को नियुक्त करता है, जिससे हमारे पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा होती है। हालांकि, इस सब उत्साह के पीछे, एक असहज सच है - एआई पर्यावरण के लिए अच्छे से अधिक नुकसान कर सकता है।

एआई की लाभ समस्या

एआई के उदय ने व्यवसायों के लिए अपने मुनाफे को अधिकतम करने के कई अवसर खोले हैं, लेकिन यह एक कीमत पर आता है। व्यवसाय तेजी से एआई पर भरोसा करते हैं, जिससे संसाधन निष्कर्षण, औद्योगिक उत्पादन और वैश्विक खपत में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए, बड़े निगमों द्वारा बड़े पैमाने पर भूवैज्ञानिक डेटासेट का विश्लेषण करने के लिए गहरी शिक्षण तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जिसका उद्देश्य नए तेल और गैस भंडार की पहचान करना है। इसके अतिरिक्त, एआई

के नेतृत्व में स्मार्ट सबमर्सिबल, अब समुद्र के दूरदराज के हिस्सों में अप्रयुक्त तेल और गैस भंडार का पता लगा सकते हैं। इसके अलावा, लाभ उत्पन्न करने के लिए, राज्य और फर्म अक्सर अपनी पर्यावरणीय लागतों को कम करते या छिपाते हुए, व्यक्तिगत लाभ के लिए नई एआई तकनीक के लाभों को अतिरंजित करते हैं। तकनीकी दुनिया लोगों को हाइपिंग करके काम करती है - उदाहरण के लिए, जब स्टार्ट-अप निवेशकों से धन आकर्षित करने के लिए 'तकनीकी सफलताओं' का दावा करते हैं। अमेज़ॅन और Google जैसी बड़ी फर्म इस स्थान पर हावी हैं, प्रौद्योगिकी को नियंत्रित करती हैं और सार्वजनिक धारणा को आकार देती हैं। परिणाम? ग्रह के पहले से ही सीमित संसाधनों पर उत्पादन, अधिक खपत और बढ़ते दबाव में वृद्धि।

एआई का अपना पर्यावरण पदचिह्न

एआई न केवल पर्यावरणीय रूप से हानिकारक प्रथाओं की सुविधा प्रदान करता है, बल्कि संसाधन-गहन भी है। उन्नत AI मॉडल, जैसे कि ChatGPT और GenAI को प्रशिक्षित करने के लिए भारी मात्रा में बिजली की आवश्यकता होती है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार, चैटजीपीटी के माध्यम से की गई एक खोज एक साधारण Google खोज की तुलना में दस गुना अधिक ऊर्जा की खपत करती है। सहज रूप से, जटिल मॉडल और भी अधिक ऊर्जा-गहन होते हैं और समग्र पर्यावरणीय पदचिह्न पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

इसके अलावा, एक बार एआई मॉडल को प्रशिक्षित करने के बाद, ऊर्जा की मांग बंद नहीं होती है; बल्कि, यह हर बार उपयोग किए जाने पर बिजली का उपभोग करना जारी रखता है। एआई के उदय ने डेटा केंद्रों के विस्तार को भी बढ़ावा दिया है, जिसमें उपकरणों को ठंडा करने और ओवरहीटिंग को रोकने के लिए बड़ी मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। वे इलेक्ट्रॉनिक कचरे का उत्पादन भी करते हैं और महत्वपूर्ण ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन उत्पन्न करते हैं। जैसे-जैसे कंपनियां लगातार नए और अधिक शक्तिशाली मॉडल जारी करती हैं, कार्बन उत्सर्जन उस गति से बढ़ता जा रहा है जो एआई उपकरण को कम करने में मदद कर सकता है।

स्मार्ट टेक की जरूरत है स्मार्ट गवर्नेंस

यदि अकेले निगमों में छोड़ दिया जाता है, तो एआई को अल्पकालिक मुनाफे के लिए दुरुपयोग किया जा रहा है, जिससे दीर्घकालिक पर्यावरणीय क्षरण होता है। उचित विनियमन के बिना, एआई ओवरप्रोडक्शन और अस्थिर खपत का एक

उपकरण बन सकता है। इसलिए, मेरा मानना है कि एआई के जोखिमों को प्रबंधित करने का सबसे अच्छा तरीका पर्यावरण संकटों के अभिनव समाधान प्रदान करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि एआई विकास पर्यावरण और सामाजिक लक्ष्यों के साथ गठबंधन है, राजनीति के साथ प्रौद्योगिकी को जोड़ना है।

सरकार को जनहित के लिए इसके उपयोग को प्राथमिकता देने के लिए एआई विकास को अधिक बारीकी से नियंत्रित करना चाहिए, विशेष रूप से शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों और जलवायु और स्थिरता पर काम करने वाले संस्थानों के बीच। इसके अतिरिक्त, राज्य-वित्त पोषित एआई पहल कम-कार्बन प्रौद्योगिकियों के साथ उद्योगों को बदलने में मदद कर सकती है, जबकि व्यवसायों को विशुद्ध रूप से लाभ-संचालित उद्देश्यों के लिए इन प्रौद्योगिकियों का अधिक उपयोग करने से भी रोक सकती है। आज की दुनिया में, हम प्रौद्योगिकी के निष्क्रिय रिसीवर नहीं हैं; बल्कि, हमारे पास इसे जिम्मेदारी से अपने लाभ के लिए आकार देने की शक्ति है। इसलिए, हमें सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए एक उपकरण के रूप में इसके उद्देश्य को फिर से परिभाषित

असली धमकी हम अनदेखा करते हैं

विजय गर्ग

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे.पी. नड्डा का संसद में हालिया बयान इस बात की पुष्टि करता है कि कोविड -19 टीकाकरण से अस्पष्टीकृत अचानक होने वाली मौतों का खतरा नहीं बढ़ता है, यह केवल एक चिकित्सा स्पष्टीकरण नहीं है - यह गलत सूचना के खिलाफ समय पर हस्तक्षेप है। आईसीएमआर और एआईआईएमएस द्वारा दो व्यापक अध्ययनों के आधार पर निष्कर्ष, सार्वजनिक प्रवचन में एक महत्वपूर्ण बदलाव को रेखांकित करते हैं: टीकों के आसपास व्यामोह से परे जाने और युवा भारतीयों के बीच समय से पहले मृत्यु दर के वास्तविक, प्रणालीगत कारणों का सामना करने की आवश्यकता।

आईसीएमआर- एनआईई अध्ययन, 19 राज्यों में 47 अस्पतालों में फैले, वास्तव में पाया गया कि कोविड -19 वैक्सीन की दो खुराक ने अस्पष्टीकृत अचानक मृत्यु की बाधाओं को काफी कम कर दिया। यह मौन होना चाहिए, एक बार और सभी के लिए, लगातार फुसफुसाते हुए और षड्यंत्र के सिद्धांत जो कि वैक्सीन रोलआउट हृदय की बढ़ती मृत्यु के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। इसके बजाय, ये अध्ययन कहीं अधिक असहज सत्य हैं - सत्य जो हमारा समाज सामना करने के लिए अनिच्छुक है।

अचानक मृत्यु की बाधाओं को बढ़ाने वाले कारकों में से अभी तक उपेक्षित थे: पूर्व कोविड -19 अस्पताल में भर्ती, अचानक मृत्यु का

पारिवारिक इतिहास, द्वि घातुमान पीने, मनोरंजक दवाओं का उपयोग, और घटना से 48 घंटे पहले गहन शारीरिक गतिविधि। इसे खराब आहार आदतों, गतिहीन जीवन शैली, नियमित चिकित्सा जांच की कमी और ओवरवर्क और ऊधम को महिमामंडित करने की एक भारी संस्कृति के व्यापक संदर्भ में जोड़ें, और एक गंभीर चित्र उभरता है।

यह बातचीत निवारक स्वास्थ्य देखभाल और जागरूकता में चकाचौंध अंतराल को भी तेज राहत देती है। भारत में कितने युवा वयस्कों को नियमित कार्डियक स्क्रीनिंग से गुजरना पड़ता है? कितने कार्यस्थल सक्रिय रूप से स्वास्थ्य जांच या मानसिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं? लत परामर्श या पोषण मार्गदर्शन कितना सुलभ है? एक ऐसे देश में जहां युवाओं के बीच द्वि घातुमान पीने और नशीली दवाओं का उपयोग बढ़ रहा है, जहां बिना पर्यवेक्षण के फिटनेस फैड्स का पालन किया जाता है, और जहां पारिवारिक हृदय की स्थिति पर न तो चर्चा की जाती है और न ही समय में निदान किया जाता है, अचानक मौतें बढ़ती रहेंगी - साथ या बिना महामारी के।

सरकार को अब न केवल टीकाकरण का बचाव करना चाहिए, बल्कि आनुवंशिक जोखिमों, मादक द्रव्यों के सेवन और हृदय स्वास्थ्य के आसपास मजबूत जन जागरूकता अभियान भी बनाना चाहिए। स्कूलों और कॉलेजों को अपने पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में स्वास्थ्य साक्षरता को शामिल करने की आवश्यकता है। और सबसे गंभीर रूप से, हमें एक समाज के रूप में आसान बलि का बकरा ढूंढना बंद करना चाहिए और जीवन शैली और प्रणालीगत मुद्दों को संबोधित करना शुरू करना चाहिए जो चुपचाप युवा जीवन का दावा कर रहे हैं।

घर बनाने के लिए बहुत अधिक धन और प्रसिद्धि की आवश्यकता नहीं होती।

विजय गर्ग

कुछ घर, घर नहीं, बस घर बन जाते हैं क्योंकि परिवार के सदस्यों को खुलकर हँसने, शोर मचाने, अपनी मर्ज़ी से कुछ करने, जहाँ मन करे वहाँ खाने-पीने और सोने की इजाज़त नहीं होती। वे अपनी मर्ज़ी से चीज़ें इधर-उधर करने के बारे में सोच भी नहीं सकते। उन्हें बस एक निश्चित जगह मिलती है, जहाँ उन्हें अपना समय बिताना होता है। इन घरों में रहने वाले बच्चों को दीवारों पर कलाकृतियाँ बनाने, अपने नन्हे हाथों से कुछ खाने-पीने की कोशिश करने और जगह-जगह गंदगी फैलाकर खुश होने का मौका नहीं मिलता। खिलौने कमरे से आँगन तक बिखरे पड़े रहते हैं। जब कोई कीमती चीज़ टूट जाती है, तो वे चीज़ों की परवाह किए बिना बच्चे को गले लगा लेते हैं और उससे बातें करते हैं। ऐसे घरों में मेहमानों को भी कठपुतली जैसा व्यवहार करना पड़ता है। जब तक उन्हें बुलाया जाता है, उन्हें उस समय के भीतर अपनी उपस्थिति दर्ज करानी होती है। उस दौरान उन्हें घर की मालकिन के हुक्म के अनुसार जीना पड़ता है। उन्हें घर की हर चीज़ को बस देखने का अधिकार मिलता है, लेकिन अगर कोई उसे छू भी ले, तो उन्हें ₹लगता है कुछ देखा ही नहीं₹ वाली

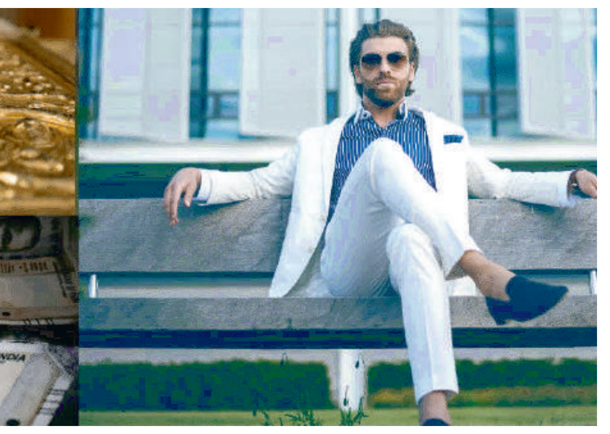

कहावत का शिकार होना पड़ता है। और तो और, इन घरों में भाई-बहनों को अपने बच्चों के पीछे इतना लगना पड़ता है कि उन्हें लगता ही नहीं कि वे अपने बच्चे के साथ अपने भाई-बहन के घर आए हैं। उन पर लगातार निगरानी रखने से ऐसा लगता है जैसे वे किसी संग्रहालय में आ गए हों। इन घरों में माता-पिता की हालत भी बहुत अच्छी नहीं होती। वे भी हर चीज़ के बारे में पूछ-पूछ कर छूते हैं। गिरने का जोखिम तो वे स्वीकार करते हैं, लेकिन दीवार को नहीं छूते ताकि बाद में उन्हें यह न सुनना पड़े कि सफ़ेद दीवारों पर तेल के छींटे पड़ गए हैं या अचार के दाग लग गए हैं। वे भी खुद को घर की सजावट की वस्तु मात्र समझने लगते हैं।

ऐसे घरों में रहने वाले लोग भावनाओं से वंचित रहते हैं। घरों में बच्चे हमेशा डरे-सहमे रहते हैं। वे अपने किसी दोस्त को घर नहीं बुला सकते क्योंकि उन्हें पता है कि उनके घर में खुलेआम रहना मना है। अगर खाते-पीते कुछ गड़बड़ हो जाए, तो माँ-बाप के कड़वे बोल उनके मुँह में गया निवाला छीन लेंगे। वे चुनिंदा पार्कों, क्लबों, पबों में खेलने के लिए घर में रहते हैं, मानो किसी ने किराए पर ले लिया हो, कुछ साल और फिर जब उन्हें पंख लग जाते हैं, तो वे उड़ जाते हैं ताकि फिर कभी इस जेल में वापस न आएँ।

ऐसे घरों में किसी को भी रहने की इजाज़त नहीं है। यहाँ तक कि उन लोगों को भी नहीं जिन्होंने खुद ये घर बनाए हैं। वे खुद एक निर्धारित जगह पर रहते हैं और बाकी जगह उनकी दिखावे की है।

एक मकान को घर बनाने के लिए बहुत ज़्यादा दौलत और शोहरत की ज़रूरत नहीं होती। रिश्तों में गर्मजोशी, प्यार, सम्मान और ज़िंदगी जीने की आज़ादी की ज़रूरत होती है, हर व्यक्ति को अपने स्वभाव के अनुसार।

प्रदेश के एथलेटिक्स प्रशिक्षकों का इतिहास

भूपिंद्र सिंह

प्रशिक्षण में निपुण केहर सिंह पटियाल ने कई एथलीटों को राष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता बनाया है। अभी जर्मनी में चल रही विश्व विश्वविद्यालय खेलों की पांच हजार मीटर की रजत पदक विजेता सीमा उनकी ही नर्सरी से निकली है। पटियाल आजकल साई छात्रावास धर्मशाला से सेवानिवृत्ति के बाद हमीरपुर अपने गृहनगर में रह रहे हैं। मुनीमखान हिमाचल खेल विभाग में वर्षों एथलेटिक्स प्रशिक्षक रहने के बाद आजकल रिटायरमेंट लाइफ का मजा ले रहे हैं

प्रौद्यौगिकी में शोध के लिए आईआईटी व चिकित्सा के लिए एम्स की आधारशिला रखने के बाद तत्कालीन सरकार ने अन्य विधाओं के लिए भी राष्ट्रीय संस्थान बनाने थे, उसी कड़ी में पटियाला महाराज के शाही महल मोती बाग परिसर में राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान की शुरुआत 1961 में हुई। किसी भी विषय को सही तरीके से पढ़ाने के लिए उस विषय का शिक्षक जरूरी होता है, उसी तरह हर खेल को सिखाने के लिए उस खेल का प्रशिक्षक चाहिए होता है। विद्यालयों व महाविद्यालयों में नियुक्त शारीरिक शिक्षा के शिक्षक इस कार्य को नहीं कर सकते हैं। इसलिए अलग से राज्यों में खेल विभागों का गठन हुआ। विज्ञान के कारण चिकित्सा व अभियांत्रिकी क्षेत्र में हुए अभूतपूर्व आविष्कारों के कारण आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेल परिणाम अपने उच्च स्तर तक पहुंच गए हैं। इस स्तर को प्राप्त करने के लिए राज्य में जहां जिस जिस खेल की सुविधा उपलब्ध है, वहां पर उस खेल का प्रशिक्षक होना चाहिए। इसलिए भी राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान की जरूरत और अधिक हो गई थी।

एथलेटिक्स सभी खेलों की जननी है, इसलिए पहले एथलेटिक्स प्रशिक्षकों की कहनी से शुरुआत करते हैं। 1961 में बैठे पहले बैच में मंडी के टीएल वैद्य को हिमाचल का पहला क्वालीफाईड एथलेटिक्स प्रशिक्षक होने का गौरव मिला है। हिमाचल में खेल विभाग न होने के कारण पहले पंजाब में नौकरी की, फिर हिमाचल प्रदेश सरकार ने जब राज्य में खेल विभाग का गठन किया तो अधिकारी के रूप में वैद्य साहब ने अपनी नई पारी की शुरुआत की और विभाग के निदेशक पद से सेवानिवृत्त होने के बाद आजकल यह जिंदादिल इनसान मंडी में अपने गृहनगर में रह रहे हैं। हिमाचल के दूसरे एथलेटिक प्रशिक्षक बनने का गौरव स्वर्गीय सुरेश कुमार पठानिया को मिला था। हमेशा एथलेटिक्स पर चर्चा के लिए तैयार रहने वाला यह प्रशिक्षक पहले राज्य शिक्षा विभाग में नौकरी के बाद हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में विद्यार्थी कल्याण अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद वे अपनी मृत्यु तक ऊना में ही रहे। पठानिया राज्य के विभिन्न खेल संघों का गठन करने के लिए जाने जाते हैं। बाद में वे लंबे समय तक मास्टर एथलेटिक्स संघ के सचिव भी रहे हैं। बालाराम हिमालयन भी एनआईएस से एथलेटिक्स प्रशिक्षक का कोर्स पास कर महाराष्ट्र में नौकरी लगे और महाराष्ट्र सरकार खेल विभाग से निदेशक जैसे सर्वोच्च पद से सेवानिवृत्त होकर आजकल पुणे में रह रहे हैं। हिमाचल में एथलेटिक्स का जो आज बहुत बडटा महल रूपी परिवार दिखाई देता है, उसकी नींव रखने वाले हिमाचल एथलेटिक्स संघ के प्रथम सचिव प्रोफेसर डाक्टर पदम सिंह गुलेरिया कालेज प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद आजकल सुंदरनगर में एक सीनियर सिटीजन होम चलाते हैं तथा राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर नौकायन खेल महासंघ में पदाधिकारी हैं। एथलेटिक्स प्रशिक्षक राजेंद्र चौहान हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा व अन्य गतिविधियों के उप निदेशक पद से सेवानिवृत्त होने के बाद आजकल जोगिंद्रनगर में रह कर समाज सेवा कर रहे हैं। हमीरपुर के प्रोफेसर उत्तम ठाकुर महाराष्ट्र के प्रसिद्ध हनुमान व्यायामशाला शारीरिक महाविद्यालय अमरावती से सेवानिवृत्त होकर अमरावती व कभी अपने गांव में रहते हैं। प्रोफेसर हरभजन सिंह अटवाल रीवा विश्वविद्यालय शारीरिक शिक्षा व अन्य गतिविधियों के निदेशक पद से सेवानिवृत्त होने के बाद भी वे मणिपुर व असम में उच्च पद पर रहे हैं।

प्रशिक्षक मोहिंद्र सैनी भारतीय खेल प्राधिकरण से सेवानिवृत्त होने के बाद अपने गृह नगर मंडी में रह रहे हैं। प्रशिक्षण में निपुण केहर सिंह पटियाल ने कई एथलीटों को राष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता बनाया है। अभी जर्मनी में चल रही विश्व विश्वविद्यालय खेलों की पांच हजार मीटर की रजत पदक विजेता सीमा उनकी ही नर्सरी से निकली है। पटियाल आजकल साई छात्रावास धर्मशाला से सेवानिवृत्ति के बाद हमीरपुर अपने गृहनगर में रह रहे हैं। मुनीमखान हिमाचल खेल विभाग में वर्षों एथलेटिक्स प्रशिक्षक रहने के बाद आजकल बिलासपुर में रिटायरमेंट लाईफ का मजा ले रहे हैं। वीरेंद्र वर्मा राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान से सेवानिवृत्त होने के बाद देहरादून में रह रहे हैं। गुरफूल सिंह भी राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान पटियाला से सेवानिवृत्त होने के बाद देहरादून में अभी भी दौड़ प्रशिक्षण में सक्रिय हैं। अर्जुन अवार्डी सुमन रावत मेहता भी एनआईएस प्रशिक्षक हैं तथा हिमाचल प्रदेश खेल विभाग के निदेशक पद से सेवानिवृत्ति के बाद शिमला में रह रही हैं तथा भारतीय एथलेटिक्स महासंघ की पदाधिकारी भी हैं। मैं इस कॉलम को संकलित करने वाला हूं, पिछले दो दशकों से भी अधिक समय से लगातार अपने पाठकों से जुड़ा हूं। मैं एथलेटिक्स प्रशिक्षक भूपिंदर सिंह ने सरकारी नौकरी से बाहर अवैतनिक रह कर पिछले सैंतीस वर्षों से हिमाचल एथलेटिक्स व खेलों को प्रशिक्षण शोध व खेल लेखन में एक नई दिशा दी। प्रशिक्षक के रूप में भारत का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने से पहले वर्षों राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविरों में प्रशिक्षण देता रहा हूं। डेढ़ दशक तक खेल विज्ञान के अंतरराष्ट्रीय जर्नल 'पेनल्टी कार्नर' को संपादित करने का भी मुझे मौका मिला है। हिमाचल में खेलों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर का आधारभूत ढांचा खड़ा करवाने के लिए भी मेरे संघर्ष व योगदान को याद किया जाता है। आजकल प्रशिक्षण शोध के साथ-साथ किशोर व युवाओं के स्वास्थ्य व नशा निवारण पर कार्य कर रहा हूं। शेष बचे एथलेटिक्स प्रशिक्षकों की कहानी जानने के लिए अगले आर्टिकल में मिलते हैं।

निर्मला पंथ व खालसा पंथ का अंतरसंबंध

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

निर्मला पंथ की स्थापना के लगभग तेरह साल बाद 1699 में गुरु गोबिंद सिंह जी ने सतलुज के किनारे खालसा पंथ की स्थापना की। यमुना तट पर निर्मला पंथ का उदय हुआ था और सतलुज तट पर खालसा पंथ ने आकार ग्रहण किया था। गुरु गोबिंद सिंह जी ने ज्ञान और शौर्य के प्रतीक निर्मला पंथ व खालसा पंथ की क्रमश: यमुना और सतलुज के तट पर स्थापना करके मानों एक बार फिर सरस्वती को प्रकट कर दिया हो। निर्मला पंथ ज्ञान की सनातन परंपरा का प्रतीक था और खालसा पंथ शौर्य के तेज और प्रताप का पंथ था। लेकिन इन दोनों प्रयोगों में गुरु जी ने माध्यम उन्हीं लोगों को बनाया जिन्हें समाज ने मुख्य धारा से बाहर रखा हुआ था। निर्मला पंथ के साधक साधु गुलाब सिंह अपने ग्रंथ 'अध्यात्म रामायण' में लिखते हैं- 'गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने सिखों को दो वर्गों में बांट दिया था। पहले वर्ग में युद्ध करने वाले शूरवीर और दूसरे वर्ग में परम विवेकी विद्वान थे जिन्हें निर्मला की संज्ञा दी गई।' निर्मला पंथ का काम मूलत: संस्कृत ग्रन्थों का पंजाबी भाषा में टीका/भाष्य प्रस्तुत करना और मौलिक रचना करना था, ताकि ज्ञान की यह गंगा समाज के किसी एक वर्ग तक सीमित न रहकर जन जन तक पहुंच सके। एक प्रश्न कई बार उठता है कि अपने शिष्यों को काशी भेजे जाने की घटना 1686 की है और खालसा पंथ की स्थापना की घटना 1699 की है, यानी निर्मला पंथ की स्थापना के लगभग तेरह वर्ष बाद बाद खालसा पंथ की स्थापना हुई। उस समय के इतिहास में खालसा पंथ का जिक्र तो मिल जाता है, लेकिन निर्मला पंथ के बारे में समकालीन ग्रंथों में कहीं जिक्र क्यों नहीं मिलता? यह प्रश्न उचित ही है। इसका उत्तर जानने के लिए इन दोनों पंथों के अंतर और गठन की प्रक्रिया को समझना होगा। खालसा पंथ का गठन एक सार्वजनिक घटना थी। बाकायदा एक राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया गया था, जिसमें देश भर से लगभग एक लाख व्यक्ति पहुंचे थे। उसमें देश धर्म की रक्षा के उपाय खोजते हुए गहरा चिंतन हुआ था। उस प्रक्रिया में से खालसा पंथ की स्थापना की सार्वजनिक घोषणा गुरु गोबिंद सिंह जी ने स्वयं की थी। स्थापना की पद्धति भी न्यारी थी। विश्व के इतिहास में किसी संगठन के लिए प्राणों की आहुति मांगने की पद्धति पहली बार अपनाई गई थी और उससे भी न्यारी बात यह थी कि पांच लोग गुरुजी के मांगने पर अपने प्राण अर्पित करने के लिए तैयार हो गए थे। उनको गुरुजी ने स्वयं अमृतपान कराया और फिर उन्हीं के हाथों स्वयं अमृतपान कर खालसा पंथ में दीक्षित हुए। यह संत से सिपाही बनने की यात्रा थी। यह भारतीय इतिहास का सही अर्थों में अमृतकाल था। प्रत्येक परिवार ने यथासंभव अपना बड़ा बेटा खालसा पंथ को समर्पित कर दिया। खालसा पंथ अपने जन्म काल से ही मुगल सत्ता के सामने आ गया था। जाहिर है इससे समकालीन लेखन में खालसा पंथ की चर्चा भी हुई। इसके विपरीत निर्मला पंथ की स्थापना सार्वजनिक घटना नहीं थी। पांच लोग काशी में संस्कृत पढ़ने के लिए भेजे गए थे। वे लगभग तेरह साल बाद विद्याध्ययन कर वापस आए। तब तक खालसा पंथ स्थापित हो चुका था। ये पांच साधु आनंदपुर में रहकर कथा कीर्तन करने लगे। कुछ नए लोगों को भी संस्कृत पढ़ाने लगे। लेकिन जल्दी ही गुरुजी को आनंदपुर छोड़ना पड़ा। उसके साथ ही ये पांच साधु और उनके कुछ नए शिष्य भी देश भर में छितर गए। ये साधु मोटे तौर पर व्यक्तिगत तौर पर ही निरंतर प्रवास में रहते हुए गुरुवाणी की कथा व प्रवचन में संलग्न रहे थे। श्री गोबिंद सिंह जी के देह त्यागने के समय नांदेड़ में भी, ऐसा कहा जाता है, लगभग पच्चीस निर्मला पंथ के साधु विद्यमान थे। गुरुजी के देहावसान के बाद वे देश के अलग-अलग हिस्सों में चले गए। संगठित होकर स्थायी आश्रम या मठ बनाने की योजनाएं बहुत बाद की बात है। इसलिए शुरू से ही निर्मला पंथ के साधु तो थे, लेकिन खालसा पंथ की तरह उनका कोई संगठन नहीं था। संगठन के आश्रम स्थापित करने की प्रक्रिया बाद की है। यही कारण है कि एक लंबे अरसे तक निर्मला पंथ की पहचान एक संगठन के रूप में नहीं उभर पाई। लेकिन सामाजिक जीवन में कुंभ के अवसर पर हरिद्वार व अन्य स्थानों पर देश भर से साधु संतों के एकत्रित होने की परंपरा तो प्राचीन काल से चली आ रही थी। कुंभ एक प्रकार से देश भर के विद्वानों में चिंतन मनन व मंथन का आसन था। लेकिन आखिर इन दिनों साधु संतों के रहने की व्यवस्था की आवश्यकता भी तो पड़ती ही होगी। इसी आवश्यकता में साधुओं की जमात की संकल्पना निकली होगी। विभिन्न सम्प्रदायों के अखाड़े हरिद्वार व अन्य स्थानों पर पहले बने लेकिन निर्मला पंथ के साधु इस परम्परा में बाद में शामिल हुए। इसलिए उनके अखाड़े बाद की उपज है। निर्मला पंथ में जमात की शुरुआत महाराजा रणजीत सिंह के काल में दिखाई देने लगती है। निर्मला पंथ और खालसा पंथ में एक मौलिक अंतर है। निर्मला पंथ ज्ञान और दर्शन का मार्ग है। किसी सीमा तक इसे तुलनात्मक दर्शन का मार्ग भी कहा जाता है। यह मार्ग ज्ञान की यात्रा की निरंतरता में निरंतर यात्रा करते रहने वाले साधकों का पंथ है। यहां यात्रा का अभिप्राय सामान्य यात्रा से नहीं है, जिसमें शरीर की गतिशीलता होती है। निर्मला पंथ में यात्रा का अर्थ ज्ञान की यात्रा से है जिसमें बुद्धि और मेधा सक्रिय व गतिशील होती है, स्थूल शरीर चाहे एक ही स्थान पर स्थिर क्यों न रहे। इसके विपरीत खालसा पंथ का उद्देश्य देश व धर्म की रक्षा के लिए एक पंथ संगठित करना था जिसके सदस्य देश-धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राण अर्पित करने में भी न हिचकिचाएं। जाहिर है जो संगठन सिर पर कफन बांध कर देश धर्म की रक्षा के लिए निकलता है, वहां प्राथमिकता संख्या बल की होगी और उसके प्रशिक्षण की व्यवस्था भी उसी के अनुरूप की जाएगी। जहां ज्ञान व दर्शन की गुत्थियों को सुलझाना है, वहां संख्या बल प्राथमिकता नहीं हो सकती। प्रशिक्षण की व्यवस्था दूसरी तरह से होगी। यही कारण था कि गुरुजी ने निर्मला पंथ की स्थापना के लिए अपने शिष्यों को विद्याध्ययन के लिए काशी जी भेजा और खालसा पंथ की स्थापना के लिए अपने शिष्यों से सिर की मांग की। निर्मला पंथ के साधकों ने ज्ञान के अमृत का पान किया और खालसा पंथ के साधकों ने तलवार के अमृत का पान किया। दोनों ने देश-धर्म की सेवा अपने-अपने तरीके

देशभक्ति के रंगों का रचनाकार: पिंगली वेंकैया को नमन

[तिरंगे का स्वप्नदृष्टा, जो इतिहास के पन्नों में खो गया]

भारत का राष्ट्रीय ध्वज, तिरंगा, मात्र एक कपड़ा नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा, इसके गौरवशाली संघर्ष, बलिदान और अटूट एकता का जीवंत प्रतीक है। जब तिरंगा हवा में लहराता है, तो हर भारतीय के हृदय में स्वाभिमान और देशभक्ति का ज्वार उमड़ पड़ता है। इस प्रतीक की रचना के पीछे एक ऐसी शख्सियत का अमर योगदान है, जिसका नाम इतिहास में उतना चर्चित नहीं हुआ, जितना होना चाहिए था। पिंगली वेंकैया, वह दूरदृष्टा देशभक्त, जिनकी कल्पनाशीलता, समर्पण और राष्ट्रप्रेम ने भारत को वह तिरंगा दिया, जो आज विश्व मंच पर भारतीय अस्मिता का पर्याय है। उनके बिना तिरंगे की गाथा अधूरी है। उनकी जयंती पर उनके जीवन, संघर्ष और योगदान को स्मरण करना हमारा कर्तव्य ही नहीं, बल्कि सच्ची देशभक्ति की प्रेरणा भी है।

पिंगली वेंकैया का जन्म 2 अगस्त 1876 को आंध्र प्रदेश के मछलीपट्टनम में हुआ। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी था—वे भाषाविद्, भूविज्ञानी और कृषि वैज्ञानिक थे। मात्र 19 वर्ष की आयु में उन्होंने ब्रिटिश भारतीय सेना में सेवा दी और दक्षिण अफ्रीका में बोअर युद्ध में हिस्सा लिया। यहीं उनकी भेंट महात्मा गांधी से हुई, जिसने उनके जीवन की दिशा बदल दी। गांधीजी के स्वदेशी आंदोलन और राष्ट्रवादी विचारों ने उनके हृदय में स्वतंत्रता की ज्वाला प्रज्वलित की। इस मुलाकात ने उन्हें यह अहसास कराया कि किसी स्वतंत्र राष्ट्र की पहचान उसके प्रतीकों में होती है, और उनमें सर्वोपरि है राष्ट्रीय ध्वज। इस प्रेरणा ने उन्हें एक ऐसे ध्वज की रचना के लिए प्रेरित किया, जो भारत की सांस्कृतिक समृद्धि, आध्यात्मिक गहराई और सामाजिक विविधता का प्रतीक हो। यही संकल्प उनके जीवन का ध्येय बन गया।

पिंगली वेंकैया ने राष्ट्रीय ध्वज की आवश्यकता को न केवल समझा, बल्कि इसे अपनी जीवन-यात्रा का ध्येय बना लिया। उन्होंने दो दशकों तक विश्व भर के झंडों का गहन अध्ययन किया, उनके रंगों, प्रतीकों और डिज़ाइनों में निहित अर्थों को आत्मसात किया। 1916 में, उनकी पुस्तक ₹ ए नेशनल फ्लैग फॉर इंडिया₹ प्रकाशित हुई, जो उनके गहन शोध और दूरदर्शिता का साक्ष्य थी। इस पुस्तक में उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज के महत्व, इसके डिज़ाइन के सिद्धांतों और भारत की सांस्कृतिक-सामाजिक पहचान को उजागर करने वाले तत्वों की सुंदर व्याख्या की। उनके प्रारंभिक डिज़ाइन में लाल और हरा रंग शामिल था, जो हिंदू और मुस्लिम समुदायों की एकता का प्रतीक था। महात्मा गांधी के सुझाव पर इसमें सफेद रंग जोड़ा गया, जो शांति, सत्य और अन्य समुदायों का प्रतिनिधित्व करता था। साथ ही, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का प्रतीक चरखा भी ध्वज का हिस्सा बना, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भावना को जीवंत करता था।

1921 में विजयवाड़ा में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के अधिवेशन में वेंकैया ने गांधीजी को तिरंगे का प्रारंभिक डिज़ाइन प्रस्तुत किया। गांधीजी ने इसकी सराहना की, लेकिन इसे और समावेशी बनाने का सुझाव दिया। वेंकैया ने इस मार्गदर्शन को हृदय से स्वीकार कर ध्वज को और परिष्कृत किया। समय के साथ, चरखे की जगह सम्राट अशोक के धर्मचक्र ने ली, जो धर्म, प्रगति और गति का प्रतीक बना। इस अशोक चक्र की 24 तीलियाँ जीवन के विविध पहलुओं और निरंतर प्रगति की ओर संकेत करती हैं। इस प्रकार, तिरंगा केवल एक ध्वज नहीं, बल्कि भारत की एकता, विविधता और आध्यात्मिक-सांस्कृतिक गहराई का जीवंत प्रतीक बन गया, जो विश्व पटल पर भारतीय अस्मिता को गौरवान्वित करता है।

पिंगली वेंकैया का योगदान केवल तिरंगे की रचना तक सीमित नहीं था; उन्होंने इसके प्रचार और स्वीकार्यता के लिए अथक परिश्रम किया। वे अनेक मंचों पर पहुंचे, कांग्रेस अधिवेशनों में हिस्सा लिया और गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं को इसके गहन महत्व से अवगत कराया। उनके अटूट समर्पण का फल था कि 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने उनके डिज़ाइन किए तिरंगे को, कुछ संशोधनों के साथ, भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अंगीकार किया। यह वह ऐतिहासिक क्षण था, जब वेंकैया का स्वप्न साकार हुआ। 15 अगस्त 1947 को, जब तिरंगा स्वतंत्र भारत के आकाश में पहली बार लहराया, तो वह केवल एक ध्वज नहीं था—वह लाखों शहीदों के बलिदान, स्वतंत्रता संग्राम की अमर गाथा और नवभारत की आकांक्षाओं का जीवंत प्रतीक था।

यह हृदयविदारक विडंबना है कि इतना अमूल्य योगदान देने के बावजूद, पिंगली वेंकैया को उनके जीवनकाल में वह सम्मान और यश नहीं मिला, जिसके वे सच्चे अधिकारी थे। उनके जीवन के अंतिम दिन गुमनामी और आर्थिक तंगी की छाया में व्यतीत हुए। 1963 में उनके निधन के समय देश का अधिकांश हिस्सा उनके योगदान से अनजान था। यह हमारे लिए गहन आत्मचिंतन का विषय है कि हम अपने नायकों को कितना स्मरण करते हैं। यद्यपि, समय के साथ उनके योगदान को मान्यता मिली—2009 में भारत सरकार ने उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया और उनके जन्मस्थान मछलीपट्टनम में उनकी स्मृति में कई समारोह आयोजित हुए। फिर भी, यह पर्याप्त नहीं है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि पिंगली वेंकैया का नाम प्रत्येक भारतीय के हृदय में अमर रहे, विशेष रूप से युवा पीढ़ी में, जो तिरंगे को देखकर गर्व तो महसूस करती है, किंतु उसके पीछे की प्रेरणादायी गाथा से अक्सर अनजान रहती है।

पिंगली वेंकैया की जयंती पर हमें न केवल उनके अमर योगदान को स्मरण करना चाहिए, बल्कि यह दृढ़ संकल्प भी लेना चाहिए कि हम तिरंगे की गरिमा और सम्मान को अक्षुण्ण रखेंगे। तिरंगा महज एक ध्वज नहीं, बल्कि उन पवित्र मूल्यों का प्रतीक है, जिनके लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। केसरिया रंग साहस और त्याग की ज्वाला को दर्शाता है, सफेद रंग शांति व सत्य की शीतलता को, और हरा रंग समृद्धि व विश्वास की हरियाली को। अशोक चक्र हमें धर्म के मार्ग पर निरंतर प्रगति की प्रेरणा देता है। यह ध्वज हमें सिखाता है कि हमारी विविधता हमारी शक्ति है, और हमारी एकता हमारी सच्ची पहचान।

पिंगली वेंकैया का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची देशभक्ति केवल भव्य कार्यों में ही नहीं, बल्कि नन्हे-नन्हे समर्पणों में भी प्रकट होती है। उन्होंने कभी यश या सम्मान की लालसा नहीं की; उनका एकमात्र ध्येय था भारत को ऐसा प्रतीक प्रदान करना, जो युगों-युगों तक गर्व का स्रोत बने। आज, जब तिरंगा हवा में लहराता है, तो वह वेंकैया के त्याग और समर्पण की गाथा को जीवंत करता है। उनकी जयंती पर हमें यह प्रण लेना होगा कि हम उनके स्वप्नों के भारत—एक एकजुट, समृद्ध और गौरवशाली भारत—को साकार करने में अपनी भूमिका निभाएंगे। तिरंगा सदा लहराता रहे, और पिंगली वेंकैया का नाम हृदयों में अमर रहे!

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

रजिस्टर्ड पोस्ट का अंत: भरोसे की वह मुहर अब नहीं रहेगी

डाक विभाग का फैसला: भरोसे का सेतु अब टूटता हुआ
रजिस्टर्ड पोस्ट का आखिरी सफर: क्या स्पीड पोस्ट भर पाएगा यह खालीपन?

डाकिए की साइकिल की घंटी, थैले से झाँकते पत्रों की उत्सुक प्रतीक्षा, और रजिस्टर्ड डाक की पावती पर हस्ताक्षर का रोमांच—ये पल भारतीयों के दिलों में एक युग की तरह अमर हैं। लेकिन अब यह युग समाप्त होने जा रहा है। भारतीय डाक विभाग ने 1 सितंबर, 2025 से अपनी 50 साल पुरानी रजिस्टर्ड पोस्ट सेवा को बंद करने का ऐलान किया है, जिसे अब स्पीड पोस्ट में समाहित कर दिया जाएगा। यह निर्णय केवल एक सेवा का अंत नहीं, बल्कि लाखों लोगों की भावनाओं, यादों, और विश्वास से जुड़े एक इतिहास का समापन है। रजिस्टर्ड पोस्ट, जो कभी नौकरी के नियुक्ति पत्र, कानूनी नोटिस, या प्रियजनों के बधाई संदेशों का वाहक थी, अब केवल स्मृतियों में सिमट जाएगी। यह सेवा न केवल दस्तावेजों को जोड़ती थी, बल्कि यह भारत के ग्रामीण और शहरी जीवन की धड़कन थी, जो अब हमेशा के लिए थम जाएगी।

रजिस्टर्ड पोस्ट का इतिहास ब्रिटिश काल से शुरू होता है, जब इसे औपनिवेशिक शासन ने महत्वपूर्ण दस्तावेजों की सुरक्षित डिलीवरी के लिए शुरू किया था। यह सेवा अपनी विश्वसनीयता और कानूनी मान्यता के लिए जानी जाती थी। अदालतों में इसके जरिए भेजे गए दस्तावेज साक्ष्य के रूप में स्वीकार किए जाते थे, और सरकारी विभागों, बैंकों, और शैक्षणिक संस्थानों ने इसका भरपूर उपयोग किया। 2024-25 की भारतीय डाक विभाग की रिपोर्ट के अनुसार, देश भर में लगभग 9.8 करोड़ रजिस्टर्ड डाक आइटम भेजे गए, जो इस सेवा की व्यापक लोकप्रियता को दर्शाता है। पावती सहित डाक (ऐकनॉलेजमेंट ड्यू) की सुविधा ने इसे और भी भरोसेमंद बनाया, क्योंकि प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर डिलीवरी की पुष्टि करते थे। यह सेवा उन दिनों की याद दिलाती है, जब डाकिया किसी संदेशवाहक से कम नहीं था, जो खुशी, उम्मीद, और कभी-कभी उदासी के पत्र लेकर घर-घर पहुंचता था।

डिजिटल युग के आगमन और निजी कूरियर सेवाओं के बढ़ते दबदबे ने डाक विभाग को अपने परिचालन को पुनर्गठित करने के लिए प्रेरित किया है। सरकार का तर्क है कि रजिस्टर्ड पोस्ट को स्पीड पोस्ट में मिलाने से परिचालन अधिक कुशल होगा, ट्रैकिंग प्रणाली बेहतर होगी, और ग्राहकों को तेज सेवा मिलेगी। स्पीड पोस्ट, जो 1986 में शुरू हुई थी, अपनी त्वरित डिलीवरी और उन्नत ट्रैकिंग के लिए पहले ही प्रसिद्ध है। भारतीय डाक विभाग के 2025 के आंकड़ों के अनुसार, स्पीड पोस्ट की ट्रैकिंग प्रणाली 99.97% सटीक है, और यह सेवा 230 से अधिक देशों में अंतरराष्ट्रीय डिलीवरी प्रदान करती है। इसके विपरीत, रजिस्टर्ड पोस्ट की ट्रैकिंग सुविधा अपेक्षाकृत सीमित थी और यह मुख्य रूप से घरेलू डिलीवरी तक ही प्रभावी थी। डाक विभाग का दावा है कि इस एकीकरण से वार्षिक परिचालन लागत में 12% की कमी आएगी, जिससे संसाधनों का बेहतर उपयोग हो सकेगा।

निश्चित रूप से, इस बदलाव का आर्थिक असर आम आदमी पर पड़ना अवश्यंभावी है। रजिस्टर्ड पोस्ट, अपनी किफायती दरों के लिए लोकप्रिय, अब चुनौती बन सकती है। इसकी शुरुआती फीस 25.96 रुपये है, जिसमें प्रति 20 ग्राम या उसके हिस्से पर 5 रुपये अतिरिक्त लगते हैं। दूसरी ओर, स्पीड पोस्ट की शुरुआत 50 ग्राम तक के लिए 41 रुपये से होती है, जो दूरी और वजन के साथ बढ़ती जाती है—यह रजिस्टर्ड पोस्ट से 20-25% महंगी है। ग्रामीण भारत, जहां 1.56 लाख डाकघरों में से 89% (भारतीय डाक विभाग, 2025 वार्षिक रिपोर्ट) संचार का प्रमुख साधन हैं, वहां यह बदलाव छोटे व्यापारियों, किसानों और आम नागरिकों के लिए भारी पड़ सकता है। रजिस्टर्ड पोस्ट की सस्ती दरें लाखों लोगों के लिए वरदान थीं, लेकिन अब स्पीड पोस्ट की बढ़ी लागत ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर नया बोझ डाल सकती है।

इस निर्णय का भावनात्मक पहलू भी गहरा है। आज की पीढ़ी, जो ऐप-आधारित कूरियर सेवाओं और डिजिटल संचार की आदी है, शायद इस बदलाव को सामान्य माने। लेकिन पुरानी पीढ़ी के लिए रजिस्टर्ड पोस्ट केवल एक सेवा नहीं थी, बल्कि उनके जीवन की कहानियों का हिस्सा थी। डाकिए की वह साइकिल, जिसकी घंटी सुनकर बच्चे और बड़े उत्साह से दरवाजे की ओर दौड़ते थे, वह लाल डाक पेटी, जो प्रेम पत्रों से लेकर सरकारी सूचनाओं तक का गवाह थी, और वह पावती, जो विश्वास की मुहर थी—ये सभी अब केवल स्मृतियों में रह जाएंगे। रजिस्टर्ड पोस्ट ने न केवल दस्तावेज पहुंचाए, बल्कि यह उन पलों को भी जीवंत किया, जब लोग अपने प्रियजनों के पत्रों का इंतजार करते थे। यह सेवा उस समय की याद दिलाती है, जब संचार का मतलब केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि भावनाओं का एक सेतु था।

यह बदलाव भारतीय डाक विभाग की आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है, लेकिन यह एक ऐसी विरासत का अंत भी है, जो ब्रिटिश काल से लेकर स्वतंत्र भारत तक लोगों के जीवन का हिस्सा रही। रजिस्टर्ड पोस्ट का नाम अब डाक विभाग के रिकॉर्ड और लोगों की स्मृतियों में ही बचेगा। इस बदलाव के दीर्घकालिक प्रभाव अभी देखने बाकी हैं। क्या स्पीड पोस्ट रजिस्टर्ड पोस्ट की विश्वसनीयता और किफायती दरों को पूरी तरह प्रतिस्थापित कर पाएगी? क्या ग्रामीण भारत, जहां डिजिटल पहुंच अभी भी सीमित है, इस बदलाव को सहजता से स्वीकार कर पाएगा? ये सवाल समय के साथ जवाब पाएंगे। लेकिन एक बात निश्चित है—रजिस्टर्ड पोस्ट का अंत केवल एक डाक सेवा का बंद होना नहीं है, बल्कि यह उस विश्वास, उन यादों, और उस युग का समापन है, जो भारतीय डाक विभाग की आत्मा में बसा था। यह बदलाव हमें यह भी सिखाता है कि प्रगति की राह में हमें अपनी कीमती परंपराओं को अलविदा कहना पड़ता है, भले ही वह कितना ही कष्टकारी क्यों न हो।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

समृद्धि की चिड़िया या शक्ति का शेर: देश की दिशा कौन तय करेगा?

अमरपाल सिंह वर्मा

क्या भारत को फिर से 'सोने की चिडिया' बनाने की बात अब अप्रासंगिक हो गई है? आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कोच्चि में आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में अपने भाषण में स्पष्ट रूप से जो कुछ कहा है, उसी से यह प्रश्न उठा है। उन्होंने कहा है कि भारत को अब अतीत की 'सोने की चिडिया' नहीं बल्कि 'शेर' बनना चाहिए क्योंकि दुनिया आदर्शों का नहीं, ताकत का सम्मान करती है।

संघ प्रमुख का यह वक्तव्य केवल संघ के कार्यकर्ताओं के लिए ही नहीं है बल्कि नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों और आम नागरिकों तक पहुंचाया गया एक वैचारिक सन्देश है। भागवत के बयान से कई प्रश्न उठते हैं। क्या अब देश को फिर से सोने की चिडिया बनने की सोच अपर्याप्त हो गई है? और यदि भारत को 'शेर' बनना है तो इसके मायने क्या हैं? देश की दिशा किससे तय होगी- समृद्धि की चिडिया से या शक्ति के शेर से?

भारत को सोने की चिडिया कहा जाना उसके ऐतिहासिक आर्थिक और सांस्कृतिक वैभव का प्रतीक है। उस काल में हमारा देश व्यापार, शिल्प, शिक्षा और दर्शन में अग्रणी था लेकिन भारत का यह वैभव सामरिक दृष्टि से असुरक्षित था जिसका परिणाम अनेक विदेशी आक्रमणों और अंग्रेजों की गुलामी के रूप में निकला। ऐसे में मौजूदा दौर में भागवत देश को सिर्फ 'सोने की चिडिया' बनाने के पक्ष में नजर नहीं आते हैं। हमारे लिए 'सोने की चिडिया' गौरवशाली अतीत की स्मृति तो हो सकती है पर यह अपने आप में पूर्ण भविष्य की दिशा नहीं हो सकती।

भागवत के इस कथन में केवल एक प्रतीकात्मक बदलाव की वकालत नहीं है बल्कि भारत की सामूहिक चेतना को नए युग के लिए तैयार करने का संदेश है। यह वक्तव्य प्रतीकात्मक भाषा में एक गहन वैचारिक परिवर्तन का आह्वान करता प्रतीत हो रहा है।

भागवत का यह कहना कि भारत अब शेर बने, न कि चिडिया, इसमें एक शक्तिशाली राष्ट्र की परिकल्पना है। यहां 'शेर' से अभिप्राय सिर्फ एक वन्य जीव से नहीं है बल्कि यह एक ऐसी राष्ट्रीय मानसिकता का प्रतीक है जो शक्तिशाली हो, आत्मनिर्भर हो, निर्णायक हो और अपने क्षेत्र की रक्षा कर सकने में सक्षम हो। इस संदेश से साफ है कि संघ ऐसा देश चाहता है जो हर चुनौती का सामना करने को सदैव तैयार हो। यकीनन, यह महत्वाकांक्षा ऑपरेशन सिंदूर की सफलता से पैदा हुई है, यानी जो देश में जो हौसला ऑपरेशन सिंदूर से उपजा है, वह निरंतर बढना चाहिए।

tभागवत ने इंडिया बनाम भारत की भी बात की है। उनका कहना है कि जब तक हम अपने नाम, भाषा और विचारों में आत्मगौरव नहीं लाएंगे, तब तक दुनिया से सम्मान पाने की उम्मीद अधूरी रहेगी।

संघ प्रमुख ने जो कुछ कहा है, उसमें अप्रत्यक्ष रूप से सरकार के लिए भी एक सन्देश है। हाल के सालों में भारत ने डिजिटल क्रांति, अंतरिक्ष विज्ञान, वैश्विक मंचों पर भागीदारी और रक्षा क्षेत्र में आत्म निर्भरता जैसे विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किए हैं परंतु भागवत चाहते हैं कि भारत को और अधिक निर्णायक, स्पष्ट और तेज गति से आगे बढना चाहिए। भारत को केवल 'विकासशील' नहीं बल्कि 'दिशा देने वाला' देश बनना है।

शेर बनने का अर्थ केवल सैन्य शक्ति बढ़ाने तक सीमित नहीं है। यह एक समग्र दृष्टिकोण है जिसमें शिक्षा, प्रौद्योगिकी, सांस्कृतिक आत्म विश्वास और वैश्विक रणनीति सब कुछ शामिल हैं। भागवत ने यह बातें शिक्षाविदों के सम्मेलन में कहीं हैं, इसलिए यह संदेश केवल सरकार या संघ कार्यकर्ताओं तक सीमित नहीं है। यह संदेश देश के हर नागरिक के लिए है और उनसे देश को सामर्थ्यवान बनाने में योगदान का आह्वान है।

देश का पुराना आर्थिक वैभव लौटे, संघ के लिए यह आज भी महत्वपूर्ण है लेकिन अब वह इतने मात्र से संतुष्ट नहीं है। वह इसमें 'शेर' जैसी शक्ति, साहस और रणनीति का समावेश करना चाहता है।

भागवत का यह बयान न केवल महत्वपूर्ण है बल्कि संघ आगामी लक्ष्यों की ओर भी इशारा करता है। भागवत का बयान संघ के लिहाज से भारत की भावी यात्रा की दिशा तय करने वाला है जो न केवल समृद्ध हो बल्कि ताकतवर, निर्णायक और आत्म विश्वास से लबरेज भी हो। संदेश साफ है कि सोने की चिडिया बनकर हम आकर्षक भले लगें लेकिन 'शेर' बनकर ही हम सुरक्षित और सम्मानित रह सकते हैं।

भागवत का यह बयान दरअसल भारत की नई आकांक्षा का प्रतीक है। यह उस मानसिकता से बाहर आने की घोषणा है जो भारत को केवल वैभवशाली अतीत के रूप में देखती है। यह सही भी है। अब हमें अतीत को छोड़ भविष्य में जीने की तैयारी करनी ही चाहिए। यदि भारत एक शक्तिशाली, विवेकशील और आत्म निर्भर 'शेर' के रूप में खड़ा होगा तो सिर्फ उसकी समृद्धि और बढ़ेगी बल्कि उसके वैश्विक सम्मान और प्रभाव में भी उत्तरोत्तर बढ़ोतरी होगी। सिर्फ देश की समृद्धि ही नहीं, सुरक्षा भी जरूरी है। हम अतीत के स्वर्ण युग की छाया में वर्तमान की चुनौतियों को अनदेखा नहीं कर सकते।

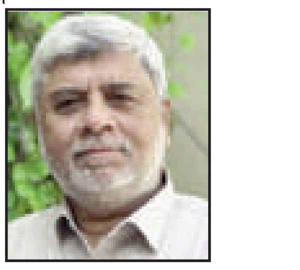

GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
TRANSPORT DEPARTMENT: ADMINISTRATION BRANCH
5/9 UNDER HILL ROAD, DELHI-110054

F. No. F8(13)/95/Admn./TPT/Pt.File/Vol.II/ 1068 Dated : 01 .08.2025

OFFICE ORDER

In supersession to all the previous orders the Competent Authority is pleased to order following work/assignment of branches in respect of Section officers/PCOs/Statistical Officers/DTOs/EOs & subordinate staff with immediate effect:

Sl. No.	Name & Designation	Present posting	Posted as
1.	Sh. Sampath Naik, DTO	DTO (ARU) And T.O.(Transport) additional charge	DTO scrapping & T.O.(Transport)- additional charge
2.	Sh. Rakesh Kumar, DTO(Ad-hoc)	DTO (Mall Road)	DTO (ARU)
3.	Sh. Mukesh Budhirnja, DTO (Ad-hoc)	SO(Operation)/ DTO(HQ)	DTO HQ
5.	Sh. Rakesh Kumar, Section Officer	DTO(South Zone) & SO Road Safety (Additional charge)	SO (Operations)/SO (Policy)
6.	Sh. Prince Garg PCO	PCO (HQ)	PCO HQ/caretaking
7.	Sh. Rakesh Vaid PCO	DTO Jhuljhuli	DTO (Burari)
8.	Sh.Sunil Chauhan PCO	DTO Burari	DTO (Jhuljhuli)
7.	Sh. Ranjan Kumar Section Officer	DTO, Burari	DTO (South zone)
8.	Smt. Jaswinder Kaur Section Officer	SO Admn.	SO RTI
9.	Sh. Ashok Kumar Section Officer	Scraping Cell	Assistant Secretary STA
10.	Sh. Pradeep Kumar Section Officer	MRTS/RRTS	SO (Estate)
11.	Sh. Randheer Kumar Bhaskar, Section Officer	Caretaking	SO (PCD)
12.	Sh. Manoj Shivrain Section Officer	SO, Vig AS STA (Additional charge)	SO (Vigilance)
13.	Sh. Bhupinder Singh Section Officer	DTC, Bus Operation & BT Infrastructure & IGL, matter	DTO (Mall Road)
14.	Ms. Kumari Anupama Section Officer	SO, ADO	SO(BT)-I
15.	Sh. Pushpraj Statistical Officer	Statistical Officer	SO(BT)-II
16.	Sh. Sumeet Kumar, Statistical Officer	Statistical Officer	SO(Planning Branch)

Continued....
Page 1 of 2

Scanned with OKEN Scanner

Sl. No.	Name & Designation	Present posting	Proposed Posting
17.	Sh. Navneet Sangal, Section Officer	As ASO posted in Admin Branch since 20.09.2024 & Addl. Charge of STA 25.04.2025	SO(BT)-III
18.	Ms. Shivani Ghakar, Section Officer	As ASO posted in MRTS/RRTS since 01.09.2022	MRTS/RRTS/ EV Cell
19.	Sh. Arun Satija, Section Officer	As ASO posted in Admin since 16.07.2024	SO Coordination
20.	Sh. Vinay Kumar Sharma, Section Officer	As ASO posted in DTO Mayur Vihar since 18.02.2025	SO (Admin) II
21.	Sh. Suraj Section Officer	As ASO posted in DTO South Zone since 01.09.2022	SO (Admin)-I
22.	Sh. Vikram MVI	Under Posting	MVI , DL Suspension
23.	Sh. Dinesh Kumar, DTO (Adhoc)	Under posting	DTO Road Safety
24.	Sh. P.S. Verma, Sr. Assistant	Under Posting	R&I branch

This issues with prior approval of Secretary-cum-Commissioner (Transport).

डॉ. आशुतोष कुमार श्रीवास्तव
DR ASHUTOSH KUMAR SRIVASTAVA
Dr. Ashutosh Kumar Srivastava
उप-निदेशक (प्रशासन) / कार्यालय-प्रमुख
Dy. Director (Admn)/HOO
Dy. Director (Admin)/Head of the Office

F. No. F8(13)/95/Admn./TPT/Pt.File/Vol.II/ 1068 Dated : 01 .08.2025

Copy to:

1. PA to Secreatry-cum-Commissioner, Transport Department, GNCTD.
2. PS to Special Commissioner - I, Transport Department, GNCTD.
3. PS to Special Commissioner - II, Transport Department, GNCTD.
4. PA to Joint Commissioner (MRTS/RRTS/EV), Transport Department, GNCTD.
5. PA to Joint Commissioner (BT), Transport Department, GNCTD.
6. All Deputy Commissioners, Transport Department, GNCTD.
7. All AD (Plg.)/DTOs/PCOs/SOs, Transport Department, GNCTD.
8. Officer/Official Concerned.
9. Guard File.

Dr. Ashutosh Kumar Srivastava
Dy. Director (Admn)/HOO
डॉ. आशुतोष कुमार श्रीवास्तव
DR ASHUTOSH KUMAR SRIVASTAVA
उप-निदेशक (प्रशासन) / कार्यालय-प्रमुख
Dy. Director (Admin)/Head of the Office

2

Page 2 of 2

झारखंड के सरायकेला जिले में पुनः ऐमोनियम नाईट्रेट, पेट्रोलियम जैली बरामद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, आज सरायकेला खरसावां जिले के कुचाई एवं सिंहभूम जेलें के सीमावर्ती जंगली इलाके से पुनः विस्फोटक सामग्री एमनियम नाईट्रेट की चालिस पैकेट जप्त की गयी है।

पुलिस के अनुसार एस पी सरायकेला-खरसावॉ मुकेश लुनायत को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि प्रतिबंधित भा0क0पा0 (माओ0) नक्सली संगठन के उग्रवादियों द्वारा कुचाई थाना के दलभंगा ओ0पी0 अन्तर्गत ग्राम-मासीबेरा हिल एरिया के समीप पहाड़ी क्षेत्र में गोला-बारूद छिपाकर सुरक्षा बलों के विरूद्ध उनका अभियान रोकने तथा लक्षित कर क्षति पहूँचाने के उद्देश्य से कुछ वर्ष पूर्व छिपाकर रखा गया है। जिसके आलोक में सरायकेला-खरसावॉ पुलिस के साथ चाईबासा पुलिस, झारखण्ड जगुआर, सी0आर0पी0एफ0 एवं एस0एस0बी0 का एक संयुक्त अभियान का गठन करते हुए वृहस्पतिवार को कुचाई थाना के दलभंगा ओ0पी0 अन्तर्गत ग्राम-मासीबेरा हिल एरिया के आस-पास जंगली/पहाड़ी क्षेत्रों में सर्च अभियान चलाया गया।

संयुक्त अभियान दल द्वारा अग्रतर सर्च अभियान के दौरान वृहस्पतिवार को कुचाई थाना के दलभंगा ओ0पी0 अन्तर्गत ग्राम-मासीबेरा हिल एरिया के समीप पहाड़ी क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा पूर्व में छिपाकर रखे गये 1. एक ब्लू कलर का प्लास्टिक कन्टेनर में अमोनिया नाईट्रेट पाउडर-20 पैकेट (प्रत्येक 01 कि0ग्रा0) 2. बड़ा स्टील कन्टेनर में अमोनिया नाईट्रेट पाउडर-40 पैकेट (प्रत्येक 01 कि0ग्रा0) कुल 60 कि0ग्रा0 अमोनिया नाइट्रेट्स का पाउडर के साथ वैसिलीन पेट्रोलियम जैली-10 पैकेट (प्रत्येक 42 ग्रा0) बरामद कर सुरक्षा के दृष्टिकोण से उसी स्थान पर बम निरोधक दस्ता के सहायता से विनिष्ट किया गया है। इस संदर्भ में विधि-सम्मत अग्रतर कार्रवाई की जा रही है। इस अभियान दल मेंसरायकेला-खरसावॉ पुलिस, चाईबासा पुलिझारखण्ड जगुआर, सी0आर0पी0एफ0, एस0एस0बी0।

"एक बार विधायक, उम्रभर ऐश!"

'5 साल की कुर्सी बनाम 60 साल की नौकरी: पेंशन का पक्षपात'

एक कर्मचारी 60 साल काम करने के बाद भी पेंशन के लिए तरसता है, जबकि एक नेता 5 साल सत्ता में रहकर जीवनभर पेंशन पाता है। यह लोकतांत्रिक समानता के मूल्यों का मज़ाक है। सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका में इस अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाई गई है। अब वक्त है कि आम नागरिक, कर्मचारी और युवा इस मांग को साझा करें – या तो सभी को बराबरी से पेंशन मिले, या नेताओं की यह सुविधा खत्म हो।
– डॉ सत्यवान सौरभ

₹एक आदमी 60 साल काम करके भी पेंशन के लिए भटकता है, और एक नेता 5 साल की कुर्सी पकड़कर उम्रभर ऐश करता है!₹ क्या यह वही लोकतंत्र है, जिसे हमने 'जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा' माना था? क्या संविधान ने यही समानता का वादा किया था?

सरदार सिंह जोहल जैसे नागरिकों की याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट तक इसलिए पहुंचती हैं क्योंकि अब सब्र की हदें पार हो चुकी हैं। जो कर्मचारी ताउम्र फाइलें उठाता रहा, खेत में पसीना बहाता रहा, स्कूल में बच्चों को गढ़ता रहा, अस्पताल में जिंदगी बचाता रहा — उसके लिए पेंशन आज भी एक सुविधा नहीं, संग्राम है। वहीं एक जनप्रतिनिधि, जिसे जनता ने 5 साल के लिए चुनकर भेजा, भले ही वो एक दिन भी सदन में न गया हो, उसे आजीवन पेंशन मिलती है — और सिर्फ एक बार विधायक या सांसद बनने के आधार पर!

काम नहीं, कुर्सी ही काफी है!

भारत में कई राजनेता ऐसे हैं जो एक बार विधायक या सांसद बने, और फिर कोई चुनाव नहीं लड़ा। लेकिन उनकी जेब में अब जीवन भर के लिए सरकारी खजाने से पैसा जाता रहेगा — क्योंकि 'वो कभी विधायक थे'! सोचिए, अगर किसी क्लर्क को सिर्फ एक साल नौकरी करके पेंशन मिलने लगे तो वित्त मंत्रालय थर-थर कांप उठेगा! लेकिन जब बात नेताओं की हो, तो तर्क, नैतिकता और समानता सब किनारे हो जाते हैं।

2018 सुधार अधिनियम का खोखलापन

2018 में एक सुधार अधिनियम लाया गया था, जिसमें कोशिश की गई कि जनप्रतिनिधियों की पेंशन व्यवस्था को तर्कसंगत बनाया जाए। लेकिन ज़मीनी स्तर पर न तो इसके नियम लागू हुए, न ही नेताओं की कोई जवाबदेही तय हुई। नेताओं की पेंशन न नौकरी पर आधारित है, न योगदान पर। कोई रिव्यू नहीं, कोई मूल्यांकन नहीं। बस एक बार शपथ ले लो, उम्र भर सुख।

सवाल यह नहीं कि उन्हें क्यों मिलती है, सवाल यह है कि हमें क्यों नहीं?

सवाल यह नहीं कि नेताओं को पेंशन क्यों मिलती है। सवाल यह है कि आम नागरिक जो जीवन भर सेवा करता है, उसे यह क्यों नहीं मिलती? हजारों संविदा कर्मचारी, गेस्ट टीचर, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, अनुबंध पर काम करने वाले डॉक्टर-नर्स, सफाईकर्मी — क्या इनकी मेहनत नेता से कम है?

आज भी लाखों सरकारी कर्मचारी रिटायर होने के बाद NPS (New Pension Scheme) के तहत अपने ही पैसों की EMI काटकर पेंशन पाने की आस लगाए बैठे हैं। और उधर नेताजी, जिनके पास पहले से ही तमाम भत्ते, गाड़ियाँ, बंगले और सुरक्षा है, वो पेंशन का लड्डू भी चबा रहे हैं।

लोकतंत्र की मखौल उड़ाती पेंशन व्यवस्था

इस देश में अगर कोई प्रणाली सबसे ज्यादा असमान और तानाशाही के पास है, तो वो नेताओं की पेंशन है। खुद को जनसेवक कहने वाले ये लोग, सेवा कम और सत्ता ज्यादा भोगते हैं। और जब सेवा खत्म होती है, तब भी सत्ता की सुविधाएं जारी रहती हैं — पेंशन के रूप में।

जनता से जुड़े मुद्दों पर चुप रहने वाले कई नेता सिर्फ इस पेंशन के भरोसे राजनीति में बने रहते हैं। विचारधारा कोई भी हो — पेंशन सबकी एक जैसी चलती है। यहाँ कोई आरक्षण नहीं, कोई कटौती नहीं, कोई ग्रेड पे नहीं। सब एक समान — क्योंकि वो नेता हैं! क्या यही समानता का राज है?

नेताओं की पेंशन समाप्त करो — नहीं तो कर्मचारियों को भी बराबरी दो!

अगर एक नेता 5 साल की सेवा के बाद पेंशन का अधिकारी हो सकता है, तो क्यों न एक अध्यापक को भी 5 साल की सेवा पर वही सुविधा दी जाए? क्यों नहीं एक किसान को, जिसने हर साल अन्न उगाया, उम्र भर के लिए न्यूनतम पेंशन मिले?

या फिर एक सख्त और निष्पक्ष निर्णय लिया जाए — कि जब तक आम कर्मचारी को स्थायी नौकरी और पेंशन की गारंटी नहीं दी जाती, तब तक किसी नेता को भी यह सुविधा नहीं मिलेगी।

सुप्रीम कोर्ट का हस्तक्षेपः उम्मीद की किरण

सरदार सिंह जोहल की याचिका में यह मांग की गई है कि नेताओं की पेंशन को समाप्त किया जाए या कम से कम उसमें भी कर्मचारी की तरह ही नियम लागू किए जाएं। सुप्रीम कोर्ट को इस पर त्वरित और ऐतिहासिक फैसला देना चाहिए।

यह कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं है, यह सामाजिक न्याय का सवाल है। यह भारत के संविधान में लिखी गई समानता की भावना का अपमान है कि एक वर्ग विशेष को सिर्फ पद के नाम पर लाभ दिया जाए, और बाकी लोगों को जीवन भर संघर्ष करना पड़े।

जनता की भूमिकाः अब चुप मत रहो

यदि हम चुप रहेंगे तो ये असमानता कभी नहीं खत्म होगी। इस संदेश को, इस भावना को और इस आवाज़ को हमें हर गली, मोहल्ले, पंचायत, और विश्वविद्यालय तक पहुँचाना होगा। आज जो कर्मचारी है, कल वो ही मतदाता है — और जब तक वोट की ताक़त से बदलाव नहीं होगा, तब तक पेंशन जैसी सुविधा सिर्फ नेता की जेब में ही रहेगी।

हर कर्मचारी संगठन, हर युवा मंच, हर शिक्षक संघ, हर डॉक्टर संगठन को यह मांग अब ज़ोर से उठानी चाहिए — 'या तो सबको पेंशन, या किसी को नहीं!'

मेडचल एल्मपेट स्थित श्री दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर मेडचल, हैदराबाद से जुड़कर फाउंडर सदस्य बने गुरु मां स्नेहलता राय बंसल परिवार, योगेश कांत राय बंसल, श्रीमती गीतिका मुदाली (बंसल) प्रतीक मुदाली, नेहा मुदाली, मयूरा जायसवाल आदि

राखी का धागा

राखी का ये बंधन प्यारा,
सावन सा भीगा-सारा।
तेरी कलाई पे जो लिपटा है,
वो मेरा सारा सहारा।

न कोई माँगा धन-संपत्ति,
न माँगा कोई ताज-मुकुट।
बस माँगी एक छोटी सी वादा,
'संग रहूं मैं हर संकट-संग जुट।'

रक्षा का अर्थ तलवार नहीं,
ना ही कोई रण का मैदान।
बहन के आँसू पोंछ सके,
वही है सच्चा महान इंसान।

आज भी वो बचपन का आँगन,
जहाँ तू मुझे चिढ़ाया करता।
कभी मेरी चोटी खींच के,
फिर खुद ही चुपचाप मनाता रहता।

अब जब तू दूर बहुत है,
शहरों की भागदौड़ में खोया।
फिर भी राखी जब भी आई,
तेरी यादों ने हर कोना भिगोया।
डाक से भेजूं, या व्हाट्सऐप पे,
राखी की तस्वीर सजा दूं?
पर जो एहसास धागे में है,
क्या वो मोबाइल में लिपटा दूं?

माना अब तू मुझसे बड़ा है,
और जिम्मेदारियाँ हैं भारी।
पर एक बहन की कोमल आस,
अब भी तुझसे वही प्यारी।

तो आज इस रक्षा बंधन पर,
ना सिर्फ रक्षा का वचन देना।
बल्कि बहनों के सपनों को,
पंखों सी ऊँचाई भी देना।

-प्रियंका सौरभ

डॉक्टर बनना बड़ी बात पर उससे भी बड़ी बात एक अच्छा इंसान बनना : राष्ट्रपति

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची , महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू देवघर एम्स के दीक्षांत समारोह पर काफी मार्मिक भाषण दिया है । उन्होंने डॉक्टरी पढ़ाई पुरी कर सेवा देने जा रहे चिकित्सकों से कहा कि ₹डायग्नोसिस और सर्जरी में आप पूरी तरह से क्लिनिकल बनिये, लेकिन व्यवहार में क्लिनिकल मत बनिये₹. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान देवघर के प्रथम दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए डॉक्टरों को भगवान आ दुनिया रूप कहा. उन्होंने कहा कि अच्छा डॉक्टर बनना बड़ी बात है, लेकिन अच्छा इंसान बनना, उससे भी बड़ी बात है.

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि एम्स देवघर के विकास से उनकी विशेष स्मृतियां जुड़ी हैं. वर्ष 2018 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ओडिशा से इस संस्थान का ऑनलाइन उद्घाटन किया था. उस समय वह (द्रौपदी मुर्मू) झारखंड की राज्यपाल की हैसियत से यहां मौजूद थीं. आज जब प्रथम दीक्षांत समारोह हो रहा है, तो भी वह यहां मौजूद हैं

ने कहा कि आशा करती हूं कि आज के दीक्षांत समारोह के साथ कल्चर और एक्सलेंस का शुभारंभ हो रहा है. उन्होंने दीक्षांत समारोह में उपाधि पाने वाले विद्यार्थियों और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को बधाई दी. साथ ही उनके परिजनों, एम्स देवघर के प्राध्यापकों की भी सराहना की

राष्ट्रपति ने इस बात पर प्रसन्नता जतायी कि दीक्षांत समारोह में पदक पाने वाले स्टूडेंट्स में बेटियां अधिक हैं. उन्होंने कहा कि एम्स देवघर में छात्र-छात्राओं की संख्या लगभग समान हो गयी है

राष्ट्रपति ने विद्यार्थियों से कहा कि एम्स में प्रवेश पाना और शिक्षा हासिल करना इस बात की गारंटी मानी जाती है कि आप एक कुशल डॉक्टर बनें. आपको अच्छा डॉक्टर बनना है. अच्छे डॉक्टर में सेंसिटिव कम्युनिकेशन की क्षमता भी होनी चाहिए. उन्होंने कहा, 'हमने ऐसे डॉक्टर भी देखे हैं, जिनसे मिलने के बाद मरीज और उनके परिजन बेहतर महसूस करने लगते हैं.

उन्होंने कहा कि डायग्नोसिस और सर्जरी में आप पूरी तरह क्लिनिकल रहिये, लेकिन व्यवहार में क्लिनिकल मत रहिये. सौहार्द के साथ सलाह दीजिए. राष्ट्रपति ने कहा कि हम भगवान को मानते हैं. बाबा बैद्यनाथ को मानते हैं, लेकिन उनके हाथ-पैर नहीं हैं. आप भगवान के प्रतिनिधि हैं. इसलिए आप जीवित भगवान हैं.

उन्होंने कहा कि एक अच्छा डॉक्टर बनना बड़ी बात है. एक अच्छा इंसान बनना और भी बड़ी बात है. आप अनगिनत लोगों के जीवन में उजाला कर सकते हैं. प्रकृति और परिस्थितियों और आपकी कुशलता और परिश्रम ने आपको समाज में जो स्थान दिया है, उसका सदुपयोग करके आप समाज निर्माण में भी भूमिका निभा सकते हैं. उन्होंने कहा, 'मैं चाहूंगी कि आप प्राथमिक चिकित्सा में भी अपना योगदान

जनजातीय कार्य मंत्रालय की प्रतिनिधि सुचिस्मिता पहुंची माओवाद ग्रसित सिंह भूम जिला

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

चाईबासा , वृहस्पतिवार को पश्चिमी माओवादी ग्रसित जिला पश्चिम सिंहभूम चाईबासा के परिसदन सभागार में आदि कर्मयोगी अभियान से संबंधित बैठक, सुश्री सुचिस्मिता सेनगुप्ता, प्रतिनिधि, जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा की गई।

बैठक में बताया गया कि आदि कर्मयोगी अभियान का उद्देश्य प्रशिक्षित अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्त्ताओं और सर्मथको के माध्यम जनजातीय क्षेत्रों में अंतिम बिंदु तक शासन और समावेशी सेवा वितरण को सृदृढ़ बनाना है। इस मिशन के अन्तर्गत जिले में कुल-18 प्रखण्डों के आदिवासी बहुल ग्रामों में अभिसरण के माध्यम से महत्वपूर्ण सेवाओं यथा-आवास, सड़क, पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अजीविका की संतृप्ति किया जाना है। इसके क्रियान्वयन के लिए विभिन्न स्तर पर समितियों का गठन किया जाना है, जिससे जनजातीय विकास प्राथमिकताओं के अनुरूप वास्तविक समय में निगरानी, शिकायत समाधान, अभिसरण, योजना और डेटा-आधारित निणय लेने में सहायता प्राप्त होगी।

आज की बैठक में प्रतिनिधियों के साथ-साथ, वन प्रमण्डल पदाधिकारी, सारण्डा / चाईबासा / कोल्हान, परियोजना निदेशक-आईटीडीए, जिला कल्याण पदाधिकारी, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी और विभिन्न विभाग के पदाधिकारी सम्मिलित हुए

मंत्री कृष्ण पात्रा विवादों में: क्या होगी कार्रवाई?

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : ढेंकनाल पुलिस ने मंत्री का आरोपों के आधार पर बंसिंग गाँव के निरंजन शतपथी को गिरफ्तार किया है। उन्हें कल अदालत में पेश किया गया। 2021 में, कृष्ण पात्रा ने निरंजन को ढेंकनाल जिले के चौलिया खमार में 82 एकड़ ज़मीन खरीदने के लिए 2.5 लाख रुपये दिए थे।आपूर्ति मंत्री कृष्ण चंद्र पात्रा मोहन के लिए सिरदर्द बन गए हैं। कहा जा रहा है कि वे राज्य सरकार का घाटा बढ़ा रहे हैं। धान बिक्री और आलू आयात विवाद के बाद कृष्ण फिर मुश्किल में पड़ गए हैं। ज़मीन ख़रीद में धोखाधड़ी के आरोपों के बाद कृष्ण मुश्किल में हैं। मंत्री ने ज़मीन में धोखाधड़ी का शिकार होने की शिकायत दर्ज कराई थी। मंत्री के आरोपों पर एक व्यक्ति को गिरफ़्तार भी किया गया है।

लेकिन ज़मीन खरीदने के लिए मंत्री द्वारा दी गई अग्रिम राशि ने उनकी परेशानी बढ़ा दी है। विधानसभा चुनाव के दौरान सत्यपथ में उन पर झूठी गवाही देने का आरोप लगा है। मंत्री ने आरोप लगाया था कि वह 2021 में ज़मीन खरीदना चाहते थे। उन्होंने निरंजन नाम के एक व्यक्ति को अग्रिम राशि के तौर पर 25 लाख रुपये दिए, लेकिन ज़मीन अवैध होने के कारण रजिस्ट्री नहीं हो सकी। इस बीच, निरंजन ने भी पैसे नहीं लौटाए। इसलिए मंत्री की शिकायत के बाद निरंजन को गिरफ तार कर लिया गया है। अब इस मामले ने मंत्री की परेशानी बढ़ा दी है। 2024 के चुनाव के दौरान मंत्री ने सत्यपथ में कुछ और कहा था, लेकिन अब आपूर्ति मंत्री कुछ और ही कह रहे हैं।

जानिए, मंत्री कृष्ण पात्रा क्यों विवादों में हैं?

2019-21 में मंत्री के पास 7,35,890 रुपये थे।

फिर उन्होंने एफआईआर दर्ज कराई और 2021 में ज़मीन की खरीद के लिए 25 लाख रुपये का भुगतान किया।

सवाल उठता है कि कृष्ण पात्रा के पास ये 25 लाख रुपये कहाँ से आए?

क्या कृष्ण पात्रा ने चुनाव अधिकारी से झूठ बोला?

अगर यह सच है, तो मंत्री पर जानलेवा झूठ बोलने के लिए कार्रवाई हो सकती है।

धान खरीद में मानहानि

सरकार ने 800 रुपये प्रति क्विंटल धान देने की घोषणा की

प्रशंसा पाने के बजाय, बदनामी की।

किसानों को ज़्यादा पैसे मिले और उन्होंने इसके लिए सरकार को ज़िम्मेदार ठहराया।

फसल की छंटनी के मुद्दे पर किसानों ने कड़ा असंतोष जताया।

टोकन को लेकर भी सरकार पर हमला बोला।

आपूर्ति मंत्री ने सरकार को दलदल में घसीटा।

विपक्ष को आलोचना का मौका दिया।

आलू के मामले में भी बड़ी चूक।

मंत्री कृष्ण चंद्रा ने आलू को लेकर सरकार को मुश्किल में डाल दिया था।

पहले उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल से आलू नहीं आएगा।

उन्होंने कहा कि धोखे में आकर पश्चिम बंगाल से आलू आयात किया जाएगा।

मंत्री ने कहा कि अगर दीदी से आलू आएगा तो राज्य की ज़रूरतें पूरी हो जाएँगी।

क्या कोई कार्रवाई होगी?

मंत्री का बयान सही है या गलत?

क्या मंत्री ने बयान में कोई जानकारी छिपाई?

क्या उन्होंने बयान में कोई गलत जानकारी दी?

क्या झूठे बयान की जाँच होगी?

अगर आरोप सही निकले तो क्या होगा?

क्या कृष्ण चंद्र पात्रा के खिलाफ कार्रवाई होगी?

क्या चुनाव आयोग सख्त होगा?

क्या सरकार कार्रवाई करेगी?

क्या मंत्री की जाँच होगी?

कृष्ण पात्रा ज़मीन घोटाले में शामिल

कृष्ण पात्रा राज्य सरकार के खाद्य आपूर्ति मंत्री हैं

ज़मीन खरीद को लेकर मंत्री पर गंभीर आरोप

जतन नगर में ज़मीन खरीद को लेकर मंत्री मुश्किल में

राज्य सरकार ने अभी तक जाँच के आदेश नहीं दिए हैं

बयान के बारे में झूठी जानकारी लेकर एक और उपद्रवी सामने आया

मंत्री के पास इतने पैसे कहाँ से आए?

क्या सरकार जाँच करेगी?

उन्होंने बयान में 7 लाख 35 हज़ार 890 रुपये दिखाए

उनके पास 25 लाख रुपये कहाँ से आए?

क्या राजस्व विभाग अपनी जाँच करेगा?

क्या मंत्री की ग़लतियाँ मंत्री की ग़लतियों को और बढ़ा देंगी?

क्या सरकार की विजिलेंस या क्राइम ब्रांच मंत्री पर शिकंजा कसेगी?

क्या आपूर्ति मंत्री के कारण नई सरकार की छवि धूमिल होगी?

मोट पर मंत्री कृष्णपात्रा की ग़लतियाँ बढ़ती जा रही हैं। एक के बाद एक विवादों में घिरने के साथ ही, आगामी मंत्रिमंडल विस्तार में उनके भविष्य को लेकर चर्चाएँ शुरू हो गई हैं।

महानदी जल विवाद सुलझाएं, नहीं तो कांग्रेस करेगी विरोध प्रदर्शन: पीसीसी अध्यक्ष भक्त दास

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : महानदी जल विवाद का समाधान करें। अगर सरकार महानदी जल विवाद को सुलझाने के लिए कोई कदम नहीं उठाती है, तो आंदोलन तेज़ होगा। कांग्रेस ओडिशा की जनता के हितों और सुरक्षा के लिए अपना संघर्ष जारी रखेगी, ऐसा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भक्तचरण दास ने कहा ।पीसीसी अध्यक्ष भक्त ने शुक्रवार को बुद्ध मंदिर में महानदी नदी बचाओ आंदोलन की ओर से एक चर्चा बैठक में भाग लेते हुए कहा कि महानदी जल विवाद के कारण ओडिशा वर्षों से पीड़ित है ।पिछली सरकार के दौरान इस विवाद को सुलझाने के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया और वर्तमान ट्रिपल इंजन सरकार में भी इस विवाद को सुलझाने के लिए कोई कदम नहीं उठाया जा रहा है। भक्त ने कहा कि कांग्रेस ओडिशा और ओडिशा के लोगों के हितों की रक्षा के लिए हमेशा प्रतिबद्ध है। इस चर्चा बैठक में पूर्व पीसीसी अध्यक्ष प्रसाद हरिचंदन, सुदर्शन दास आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023